

१ नवीसरुल ॥ गिरु नि शुप लादृष्टः यापम निवामैकति । यत्र यो यमना गक आवस्य यथमौ गक ॥ १ ॥ उत्पन्न  
 विरुडाकाकं संयु द्विविगतसुत ॥ गं धर्वयमादृष्टः यायक द्वितीयो स क ॥ २ ॥ ५ मिष्टसत्यवादिन, नृदृष्टि  
 चवदृष्टः । विनाय पूरुवकं य, यायक द्वितीयो गक ॥ ३ ॥ चतुर्थे गिक जागस्य गुरुणा विद्वीत्यव । सच्चैरुसंग  
 हकस्य यायक विमू धाकले ॥ ४ ॥ सर्वलक्षणसंयुक्तं यायक विद्वीत्यव । दीर्घाय पूरुवकं य, यायक पञ्चम  
 गक ॥ ५ ॥ मुनिर्दिता सत्यवादिन, वरु मायान परं सव । मूर्धेल द्वयमादिन जायक वषट्मांश  
 क ॥ ६ ॥ विवाका मतिवात्मन संयु मय्य पवाजिन । इष्टव नाम हात्मादि, यायक सप्तमां  
 स क ॥ ७ ॥ दृगध्यामत्सवित्री कृ ४ कुसला गा व पूल कास । पवित्रा गी दावि इ वाष्टमांश गक ॥ ८ ॥ मवकु  
 कुसलादृष्टः यमोपि व डितदीय । ह्यानामूलवथानिर्ण जायक नवमांश गक ॥ ९ ॥ नवी सरुल समाक ॥































तपलममनय ॥ यज्ञा नो ज्ञायक इति युक्ते सितस्य वीर्य ॥ २ ॥ निष्पत्तिः सर्वसस्या नो शास्त्रिणी हि दुःखा  
 यमान ॥ ३ ॥ वृषसमुज्ज्वल ॥ आता ज्ञायवली रुचक ॥ १० ॥ सुकिं क्रीममाया ॥ कोयास ॥ महाद्योता ॥  
 दा लवर्णमद्य ॥ महायासो ॥ श्रवायीय ॥ ११ ॥ सुकिं क्रीममाया ॥ यस्तत्ता प्रीतिवायीय ॥ तस्मात्तायदवले  
 य ॥ ववहृषा नवना नन ॥ १२ ॥ तापुसं गीवद ॥ शिरो लस्कन ययिठयक ॥ विग्रहं वयुदो मादं वयुमादिस  
 १४ नसूदनी ॥ १३ ॥ ज्ञायक सर्वसस्या निम ॥ दिनिनी वयदवा ॥ लवर्णमवधुर्नवेव माद्यं विक्थि  
 यीय ॥ १४ ॥ काठवा सातिमदो ज्ञायक ॥ शुमासत ॥ येववैस ॥ महाद्यज्ञायक सुवृष्टयसू सूनस  
 दनी ॥ १५ ॥ नवकामूमासा ॥ अंनववदिनीयीय ॥ महाद्यज्ञायक सर्वविक्रका नो विनिद ॥ १६ ॥  
 १७ ॥ सुकिं क्रीमसमा कि ल्बुल्लं वनिनयदवं ॥ वावहर्न नष्टवताडु ॥ सृष्टा भावववानन ॥ १८ ॥  
 अतिवृष्टि ॥ श्रवाणा ॥ विविधयिठिता ॥ ससौरुवति समा ॥ नातावन सूनसूदनी ॥ १९ ॥ वहू सस्यानिः  
 ज्ञायक सर्वद ॥ सा लावन ॥ सा वापुला ॥ द ॥ वा ॥ पा ॥ विना ॥ र्सं सय ॥ २० ॥ इति ध्या ज्ञायक ध्यानं

अं सानाम विद्याडू ॥ सभल ॥ विद्ययाय ॥ लघाद्यनरुवद ॥ स्वामि विक्रम ॥ इदया सुलभस्या  
 त ॥ अं सावि से वि लाकि ॥ विलग्नमसना ॥ येन ॥ ज वृषसू काले वनादिक ॥ लघु विज्ञा ॥ विमाने हि  
 मादिवृष्टा ॥ सुसाधु ॥ लघा नो सुसाव ॥ ० ॥ भव ल ॥ दयज्ञा ॥ श्रवामानि सुधा धनि का विस्व  
 क्रनदं ताव ॥ विक्रमायन वकुल ॥ वृषल ॥ दयज्ञा ॥ सुनरुक्रिये वद ॥ सुनिष्ठा ॥ धनिल वृ स  
 वसवृजनयीय ॥ मिथुनल ॥ दयज्ञा ॥ न ॥ निस्वजन वल ॥ ल ॥ गयी ॥ धनि कामि ॥ अहि  
 शुक्रमीवा ॥ मीसु वि सुखि ॥ लघा ॥ द ॥ क्रयिक ॥ लो ॥ अश्वि ॥ ता ॥ दिन ॥ व ॥ कुमा ॥ ॥ क ॥ क ॥ द ॥ ल ॥  
 दय ॥ ता ॥ धर्मि ॥ य ॥ व ॥ ल ॥ मि ॥ न ॥ रा ॥ गा ॥ से ॥ रा ॥ गा ॥ सुन ॥ ल ॥ यी ॥ य ॥ मि ॥ द ॥ ल ॥ द ॥ य ॥ ता ॥ रा ॥ मी  
 १५ ॥ निमदं क ॥ स ॥ ल ॥ द ॥ य ॥ ता ॥ प ॥ र ॥ सा ॥ सो ॥ रा ॥ हि ॥ व ॥ वि ॥ क ॥ मी ॥ ॥ के ॥ न ॥ ल ॥ द ॥ य ॥ ता ॥ न ॥ ना ॥ सा ॥ सु ॥ वि ॥ सा ॥ व  
 द ॥ सा ॥ रा ॥ सु ॥ ॥ म ॥ र ॥ क ॥ ॥ त ॥ ति ॥ यी ॥ या ॥ ति ॥ स ॥ द ॥ व ॥ ॥ तु ॥ ल ॥ ल ॥ द ॥ य ॥ ता ॥ स ॥ वि ॥ स्व ॥ क ॥ मी ॥ दि ॥ व ॥ क ॥ वि ॥ ज्ञा ॥ न  
 सर्वकला ॥ रि ॥ द ॥ य ॥ मी ॥ जन ॥ व ॥ कि ॥ ॥ अ ॥ लि ॥ ल ॥ द ॥ य ॥ ता ॥ म ॥ न ॥ मा ॥ न ॥ म ॥ न ॥ स ॥ वि ॥ ज्ञा ॥ न ॥ न ॥ न ॥







कृष्णामर्त्य ॥ यत्ना ल कृत्सांशुव नवमायकटि कृष्ण ॥ आधा शुद्धं गगानं सुतिका याधु राधु रं ॥ १८  
नृकायवकं हं सर्वज्ञातकं रुलं ॥ कृष्णात्मा सलज्जानं आगानं चिदसुखाया ॥ कदादि कृदनादिना  
रुलं वक्रा सवयत ॥ उवा निवास मथास्तु वक्रातिवाय मथास्तु स्वकर्मा शानीना सिद्ध अहा ऊया ऊया  
हि मिता मसानिवक्रा मुवत नाहा कमा मुमुयवत ॥ नाह कं तु शुद्धा र्वातो जवादिनी विनाधिनी ॥  
१९ यद्गुः वसवाधिना शागी कृद्वेव लीधना उचिरुका सुदिकोना विद्वानका तुकवा  
नक्षति ॥ माना शाभिष्यवर्न सूचक मीस्ति नावशा कर्कषा वृष्टिका दय ॥ वस्तु नयोपि  
कोडाह सर्वशुद्धा नाठियनी शुद्धा ॥ वक्रा वावय ऊया रुल वनस्तु वया दय ॥ द्विस्वराव दय लभ  
कर्कषा सर्वदा वृद्धा ॥ वनलश्रुदय नष्ट इलं रुना गीभा मति ॥ ज्ञातस्या यित रुव अल्लो माय विनि  
दिष्टात ॥ यिवल ल्मा दयानष्ट विनं काल नल लयत ऊरु शागी विनाहृषा दिद्याय कृदना वान ॥  
नष्ट स्यात् सीधुलारु स्यात् शागी सिधुन सारुन ॥ मथायुलं धरुमानि द्विस्वरा वा दय कृद्वेव

सर्वेषु काय कृत्नयायसु विक्रमिष्टि काहृवा ॥ स्वलदगा धनशीव ऊर्जाग कमविम्वि काय  
कर्कषन जात युगुला धार्मिक सुविना विस्तिष्टि कटि क्राम सिता लु शुद्धा लस ॥ दृष्टि स  
वाधिका मिना निरुदा वनमा मुग्धा ॥ दिद्युशीव सिलावस्तु दिद्याना मसंशुत यव दान नयायि वि  
द्विष्टुहृयता घट ॥ शुंगना सावृद्विष्टु वावृष्टि मुष्टिया कित ॥ यधुता धनरा गिस्था क कलाश्रयव  
ताकीषि ॥ नासिरुल ॥ ०॥ इष्ट  
ना शागी नवांशु कर्मनव ॥ नवांशु  
कं दृष्टवगद्विष्टि सुसं काम ऊमारुव ॥ १॥ धनी वाग्मी सुसिरुस्तु कामिरा सुविम्वि ॥ रवा  
तासना दित सुता ऊत सुते वायु स्थित ॥ आमाहृश्ववह विवा द्यो धार्मिक सामयानग ॥ सुनकिव  
मिष्टवर्तु मष्टि सनायति नृय ॥ विवयी कि विष्टु हि र्वाता दाता ऊदवयावक ॥ उद्वेवा स्वस्थित वष्टु



लक्ष्मीकान्तिनविन॥ गृहकातापुत्रादिना दवीडाडपुनिसमाधरवाइरवानिनाथाजी ऊरुकागुहम  
१० शिस॥ वरुडागवपुयय॥ ० ॥ सुखिनीगीधनिनीना रुवममठलाधिव॥ नृयकिश्वकवनिस्वयकाद्या  
द्वकेशदे॥ डवरुल॥ ० ॥ निमृनिवमठलोप विप्रतीवभवदिह॥ सकयिदिताथगी एकाद्यानिवकेय  
१० हे॥ निवरुल॥ ० ॥ स्वनासिमिहनाल्ल स्वकवृजनवांसगा उदितासीवगावेडा अदाऊननिशा रुना॥ सक  
इकाननास्यसिस्व नलितास्वनिवम॥ अरुंतातातिवावस्वा अदातातसादूयदा॥ शुसाशुरुय  
हा॥ ० ॥ नासादिप्रवनासर्वकर्तवाक्रम कालिका॥ कलाकेवाखास्विनी रुकवर्षकेसिखित  
स्वस्वसंखादनीरुके लार्षधार्षयनयन॥ मासहनादिखोताय लक्ष्म्योर्वस्वरागरु॥ रुकनासिहानिन्वा  
मि, किवरुवाकिमभालभसर्वकलाकृता स्वमृकृतायसंहर्ता वल्लभससगृहस स्वइकाननवांसके  
दिधुवकीवलादिधु, दिधुहिनादिता वीसंददगना॥ यथूलोफर्वकाथच रास्वभावसिद्धा गला॥ स  
मींगसमदृष्टिमु सखाद्यस्तिनसाहस॥ सुशा रुयवनीता अलारि सिंदर्भवर॥ सुयडागवृत्तय॥ ०

नवससुसनीनसा धनसा धनगीशहा॥ सहजोशिलदाऊया तंभस्मावनधरावदा॥ सुतशुरुल्लेवा  
यं सकृच्छननीरावडा कलास्स रुलेयुक्र निवनमठलसीरुव॥ धर्माधर्मरुलेयीसा कर्माणि कर्मसिंख  
लारुलातागमीराग्य वायवायसा निधुर्म॥ नविमुठससिसोवीखा ऊरुशोवी वल्लाद्वयं॥ जङ्गीना  
शुनतादान शुकोशार्गशानिकीय॥ स्वयानुवकजराव केडमुकडजंथा॥ गृहनासिसमाडा रुलेत  
लादितावत॥ गृहसनागृहजं रुले नयगृहसक॥ सुगृहाद्योगदानवि यदियवत्यलीम  
त॥ गदादिस्वरावशुभा॥ ० ॥ अष्टाष्ट मगतवन्धु सधामृक गृहकिता कूनसामादना  
वृमिभुवर्षवपुयय॥ ससिवकवरासोमा रुना कालेवपुष्टा मायनमृहदाया कायायइरवायवि  
क्रिता॥ नपूडाग॥ ० ॥ कवुयिकानविदसा रुलेमर्तसर्वशार्गधनीमिर्ग दानायवपुययदी यदयायिन्  
कारावदभवपुदसारुले॥ यथाविदिसरुहत्यायि नृयलारुगयागता॥ तडावृद्धिसावृद्धि रुदसाया  
रुलेविशु॥ सवितादिषमडायि मवालाशमदासर्व॥ नीदिहृदियुदायसा किवदसावधसुता॥ शार्गना



चलाग्र्यं ज्ञानमिदं शिवं धृतासुखं ॥ धनधान्यमृतसाहि सनुनासं किं वासित ॥ कष्टं कुरु सचदा नीडं रुयं  
 रंगं वसनुतं कुरियत विनासं वदसु ॥ धोनीदसारु लीं घाटवै ॥ विद्वानि कष्टं वागं धनं कुर्यं गृहं  
 गरीयं ज्ञानं दनं वाह दशा निव ॥ वातगुलानि सायनं लतागुहं विदनी ॥ डयद्यातव मृत्युं दनं कुरु दशा  
 मैत्रेणना ॥ मूलदसानं सायनं मृतं अनुदशा ॥ धूलं ॥ यनं कुर्यादिसा वनं वगुहं कुरु वाव मित्रं ॥ स्वगृहं दिव  
 यं कुरु दशा ॥ अनुदशा आरुति ॥ दूषा यिसा ॥ रुनीं या कुरु सायि इव सा सत ॥ अनुदशा ॥ ० ॥  
 गुरुवशां विमुक्ता कुरुनीं ॥ कुरुनीं वक्रा मः ॥ ले ॥ यथा विदु विराजान वक्रा दंतं कुरु सा सुरुनीं ॥ कुरुनीं  
 शाखे वना ॥ विरुख निवास मने साई ॥ विरुगीं सनु कुरु ॥ रुनीं किं कुरुना जाय ॥ शनिशुका ॥ रुनीं स्वलोसा  
 वीं विरुखी सैर्यं वषट्ठं निराय ॥ हिनीं याये कुरु दश ॥ सोम्यां थाया दिय नाय ॥ वक्रा सा सितारवा दशा दया  
 कुरुनीं मित्रं ॥ कुरु विरुवला ॥ का ॥ रुनीं नाहिना विरुनीं ॥ कुरु कुरु जाय निधीय ॥ ० ॥ लता दित्य सधा कानी  
 वाला दिक दशा दिनीं ॥ कुरु यन रुनाया किं सगतानी वला सखा ॥ रुना काल वला सोम्या ॥ रुना वषट्ठं मुदसा

[illegible]



यात्रीवृक्षारु॥ शानिजसुवर्ग॥ ०॥ वसवदाशुदावदा नन्द्यिवदयवक नसव्या सुन्द्याग्नि नयाला  
 रुद्रनाजीलि॥ तर्गवृक्षवृक्षधुका सुयाशर्म सुवतथा॥ नतककमनसं विद्या नयाविन्द गतरुल्लं ॥ १॥ ॥ ॥  
 लयुरुद्ररु नया कस्मि शुरु सवत॥ विद्वस्त न रुल्लं इष्ट साम विन्द कलविना॥ विन्दमथा कलासां धा कः  
 लामथा दिदवा॥ तर्कषठा रुल्लं निया प्रयत्न ॥ नयादिसय फषठा ॥ मककसाय विन्दु ॥ कमादधुकाव  
 ॥ ॥ ॥ सोकप्रमानत रुसकं रु विना यवलोष्ठ स्ववर्ग कामुसारुन॥ सेना नवायित रुद्र  
 यधुकात सयत्या सनुष॥ आशोठिका नवधूर्य नयादयवय धुर्त॥ लग्नामसित्य सयकु  
 ठिकाठाल्ययुगवृक्षारु॥ सयासुवर्ग॥ ०॥ लग्नादयवय रुवा सन्यास फसं रुत ॥ सठिकान यन सामत  
 सयासुका रुतव धुकादा कासुषठरुल्लं सेना आयवदिदीर्य॥ आशोठिकाय विद्वस्त रुद्रक रुद्राष्टुठि  
 रुद्रवि॥ वन्यासुवर्ग॥ ०॥ कडायासु धनरु मा रु वृक्षारु वायवदिधु॥ गुना वजाय कमात्य सुयादय  
 वयववस॥ लग्नाडयवयस क जसुयायानीय सितात॥ ययायामिन्द्रासो ना रु रु सजासु क॥ सामा

[illegible]



























य  
रु  
२८

| युवराज | उरुहोण | हस्त    | विश    | स्वाति | विशाख  | अनूनाथ | श्रव   | मूल    | पूर्वाषाढ |
|--------|--------|---------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|-----------|
| जिलासन | जिलासन | हस्तिसन | मयनाम  | दालासन | अशासन  | हंसासन | ऊनशाम  | मूलासन | उलासन     |
| मूससह  | मूससह  | महिसह   | बाधसह  | महिसह  | बाधसह  | महिसह  | महिसह  | महिसह  | महिसह     |
| आभय    | आभय    | वायवाम  | वायवाम | वायवाम | आभय    | माहम   | माहम   | वायवाम | वायवाम    |
| मणुल   | मणुल   | मणुल    | मणुल   | मणुल   | मणुल   | मणुल   | मणुल   | मणुल   | मणुल      |
| उईमूष  | उईमूष  | उईमूष   | उईमूष  | उईमूष  | उईमूष  | उईमूष  | उईमूष  | उईमूष  | उईमूष     |
| मानवग  | मानवग  | मानवग   | मानवग  | मानवग  | मानवग  | मानवग  | मानवग  | मानवग  | मानवग     |
| हिनवग  | हिनवग  | हिनवग   | हिनवग  | हिनवग  | हिनवग  | हिनवग  | हिनवग  | हिनवग  | हिनवग     |
| उग्रवग | उग्रवग | उग्रवग  | उग्रवग | उग्रवग | उग्रवग | उग्रवग | उग्रवग | उग्रवग | उग्रवग    |
| दितावग | दितावग | दितावग  | दितावग | दितावग | दितावग | दितावग | दितावग | दितावग | दितावग    |
| वक्रवग | वक्रवग | वक्रवग  | वक्रवग | वक्रवग | वक्रवग | वक्रवग | वक्रवग | वक्रवग | वक्रवग    |
| माहदिह | माहदिह | माहदिह  | माहदिह | माहदिह | माहदिह | माहदिह | माहदिह | माहदिह | माहदिह    |
| दक्षिण | दक्षिण | दक्षिण  | दक्षिण | दक्षिण | दक्षिण | दक्षिण | दक्षिण | दक्षिण | दक्षिण    |
| विह    | विह    | विह     | विह    | विह    | विह    | विह    | विह    | विह    | विह       |

| उरुषाढ   | श्रवण    | धनव      | मकरिष    | पूर्वफाड | उग्रमरु  | यवति     | शक्तिधिवान |
|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|------------|
| उलासन    | ननासन    | आनासन    | दयासन    | रुद्रासन | रुद्रासन | रुद्रासन | रुद्रासन   |
| मूससह    | मूससह    | मूससह    | मूससह    | मूससह    | मूससह    | मूससह    | मूससह      |
| माहम     | माहम     | माहम     | माहम     | माहम     | माहम     | माहम     | माहम       |
| उईमूष    | उईमूष    | उईमूष    | उईमूष    | उईमूष    | उईमूष    | उईमूष    | उईमूष      |
| विश्वदवग | विश्वदवग | विश्वदवग | विश्वदवग | विश्वदवग | विश्वदवग | विश्वदवग | विश्वदवग   |
| मानवग    | मानवग    | मानवग    | मानवग    | मानवग    | मानवग    | मानवग    | मानवग      |
| ककनाक    | ककनाक    | ककनाक    | ककनाक    | ककनाक    | ककनाक    | ककनाक    | ककनाक      |
| उग्रवग   | उग्रवग   | उग्रवग   | उग्रवग   | उग्रवग   | उग्रवग   | उग्रवग   | उग्रवग     |
| दितावग   | दितावग   | दितावग   | दितावग   | दितावग   | दितावग   | दितावग   | दितावग     |
| वक्रवग   | वक्रवग   | वक्रवग   | वक्रवग   | वक्रवग   | वक्रवग   | वक्रवग   | वक्रवग     |
| माहदिह   | माहदिह   | माहदिह   | माहदिह   | माहदिह   | माहदिह   | माहदिह   | माहदिह     |
| दक्षिण   | दक्षिण   | दक्षिण   | दक्षिण   | दक्षिण   | दक्षिण   | दक्षिण   | दक्षिण     |
| विह      | विह      | विह      | विह      | विह      | विह      | विह      | विह        |

शक्तिधिवानरुद्रासनक्रया  
प्रकिरुताठधामतम  
निनीहवगकागीरुद्र  
इशुकाशुर्गप्रकिर  
नायितालक्रिदितियइ  
वरागीनीरुद्रियवाक  
ममानैवठथीयवाका  
नैयैवमवाहिमानैव  
वहकामदिहसकर्मस  
नकायावतनकाशरुता  
रुर्गप्रशुवाववादिता  
दिनाडयपाहूआदिनतिथि



४  
३३  
२०

१३ नमः सर्वज्ञाय ॥ अथ यव कामि शहाना कल कर्न ॥ विकी कृत शहाना स्यात्तवाम भुवद्व  
युक्तयत् ॥ माशी नदा यदुया द्वाय ॥ ० ॥ कुरु लक्ष्मि दं क्रिया न कस का नायू कुरु कदय याठ  
महि निव याठ कल ल नव ३३ ३४ थयायूता विय विधि रव यिठा णि नाया वा का सी हया व आः  
मज्जु स रु दय क नायू काय उ न रुय क रुा क कुरु रु क्ति न जा थू या व र्वा ल न भया  
ठ दय क य ठा य नायू रु र्वा ल न याठ स स्थाय य ठा स न रुय विरु क्षि धन रुा रु  
मका स्नान सकल र्म नायू न रुय म्वा ठ मा श रुं रु क्ति क ला डा इ इ धन सा र व न स सा मूठ  
घां रु डा रुं ० ० निव घन वाल क स ल रु थ का य ल का शा गी या स व व क्रि स यू ता वि रु यू ता  
न व न था य द स वि व न यि रु लि क न स यि व ली का ली स न व न थ दू लि व शा गी भा ठ यि  
य का व रुा क रु रु रु क्ति वा क न र्मा विय ४ थ न न सा नि रु व र व ॥ १ ॥ न दू न ला न दं या स न द्या

शहन जा निव धन जा डा या शा ग या ठ क ल ल न व रुं रु का नायू स ल र व म रु य इ इ म ना न व रुं  
स्या क था ल रुं थ शहन जा डा या सा नि य थो यू ता वि दि य व क यू रु क्ति स रु ल ठि रु डा व आ म ज्जु स  
रु दय क थ थो काय उ न रुय क रुा क कुरु रु क्ति न रुवा ल न या ठ स रुा थ न रु या भा ठ स रुवा ल रु वाः  
ठ ली का स रु या ठ न रुा व स न रुय धि धन स्नान रुा रु म का य ना य न या ठ रुवा ल सी रु थ थो यू का  
य ठा स क ल रुं रु य म्वा ठ मा स रुं रु क्ति रु ला डा धनी रुं थ न वा स न ली रुा रु ला सा रुं  
वि रु लि थ न न थू य न थ यू ता वि रु व क्रि लि रुा न रुा न व न वी वि नै वा रु यि व ली का  
ला सी रु व रु ली र व व लि रु या रु न लि व लि व यि रुा ल थ न न सा नि रु व र व ॥ २ ॥ रु दू रु ला रु दं या  
यू ता रुा शहन जा न यि व धन जा डा या नायू ड द व रुा रु य व रुं रु व क यि व रुा य थ यि व स ल र व म  
नायू का नायू ला रुा रु रु ठि रु य थ यू ल रु व रु थ स रुा य रु व ॥ थ शहन जा डा या यू ता वि थ वि दि



४  
३  
२

स्वयिदाधिदाया वा का सी हयाव आमज्जसुदयक झाइयकाननसकलर् झाइकायउनराय  
क काक कउरु छिन का थूयाव न याठवाल सर्थ डाव ल का सकुवाठ भाउ सकुवाठ वालन झाइ  
यगाय यठवास वठ शिधन आरुमका खान झाइयवानन ला डा माठ मास ऊँरु छिर्क थ दि ऊँ  
थं नयावासन एका पुका साई विरवलि वरुनी खान पूजायिभवन वद्वि लिहायस थनयाउनसा  
निशवरव ॥ ३ ॥ यद्रु यिला यिदया मरुवमठिकाग्रह ऊँगी खाल मनरवनयनका  
यू थग्रहनका डाय सविठस वि उनथड का नाय यीठयाययू ला हाथ द्रु थि द्रु थि  
छिथथय डागाठका डिड मिहासका डिड स्वा नडा सी मिखासाय थग्रहनयडाया पूजायाय विदि  
स्वयिदाधिदाया वा का सी हयाव आमज्जसुदयक झाइकायउनरायक कउरु छिन्नाकन  
का थय न याठवाल सी थं न झाइयठयि साय खाल ल का सकुवाठ भाउ सकुवाठन यठवास वठ

शिधन आरुमका खान सकलर् झाइयवाननकाय स्वाठ मास ऊँरु छिर्क ला डा दि थ कं गि सिंवा  
हासल मधि या छि आ धनी एका नागीया सी थयनयवासन निमलखान विरवलि पूजायिभवन  
क्रियुस पूजाकनवन वा हा सी लख सी भव यिवलं काला सी भव लखवलिकुवाठन लिवलिवहा  
लक थहनसा निशवरव ॥ ४ ॥ डंरु डाला डादया विद्राडु ग्रह रुठि खाल मनसुनयनकाय थ  
ग्रहनका डाय सवीठस विदनथड सलखमवाय कंउय नमयय का नाय खदाक  
थंगवा का सी हयाव आमज्जसुदयक दयक यश्वनड कायउनरायक क कउरु छिन्नाका  
थयाव खाल न याठस थं डाव यश्वनड यगाय नासाय खालस यगवास थग शिधन आरुमकाय  
थनडखान ला डा दि थ स्वाठ मास ऊँरु छिर्क मं थ कं थयनयवासन भासखाया साई विरवलि  
पूजायिभवन वद्वि लीहानडाव नवन न थाय वंहा सी लख सी भव यिवलं काला सी भव थहनय







ल  
३०

माय कायदनरुयक मायस्वान् जाक ऊरुशुद्धि न जाथयाव न याठवाल सथं डाव मायय कायसा  
डाव माठ सक्क याठ लकासक्क याठ न् चाय ला डा हि धं माठ मास र्जु डि क मा धि धन साखन  
कसि इइ अ धनी यायन मरु धयन यवासन कसल हा वाल मिदलास धन कसि वाल स अशु  
नी यकायि न धन वक्रियन स वंहा सा विवर्ल कालास न वन लखव लि लिव लि व  
हाल धन न सा निशवरव ॥ ८५ ॥ शुद्ध  
नक्राय धुशुह नयिउ नयिउ लन रुगा का न निव स्वायथय कान माठ साय ४ धुशुह यकाया  
यविदि यवा कयल रुद्धि न याठ रुयाव रुल ठिक्क डाव धुयाठ न आम अठ सन दयक ६० य  
रुगा न वठ स्वान् जाक मका णि धन सकल न यियु यवान् ऊरु शुद्धि जाक न जाथयाव स्वाल न  
याठ सथं डाव लकासक्क याठ माठ सक्क याठ न यनाय यियक र्वा ल ससाय क्क य धन धनी इइ

हामल युनिमर र्जु डि क अ माठ मास लामन धयन यवासन धन वलु वाल मिदलास यकायि न  
वन निनिव रुन स यकाय न वन थाय वं धठ विवर्ल कालास धन न शुद्ध दवतासा निशवरव ॥ ८६ ॥ डि क डि  
ला डि दया शव निशुह न जा अया यिउ नयिउ र्वका ताड लारु चाय नाना थाय दूना रुल रुय र्वकि र्वकि  
नक्कि निव र्वकि न मक्कि निव र्वकि निन साय ययु क्रं दा का ड साय सिल रव म यि न मरु कामाठ  
न वयि गन साय र्वकि न रुल य र्वडा र्वडा रु न थय यावाल वनि द्वा डिउ अदाय मां का  
दयु चका मु लिउ थ थं ठ निव मि स्वाथान की मरु धुशुह न धन यिउ नयिउ यकायि  
यविदि र्वयि ठा यि ठा या वाहया वनाय क्क याय आम अठ स धन न दयक र्ववाः  
यहान यकायाय वाल नि याठ दयक माठ सक्क याठ लकासक्क याठ न् डाड क यनाय साय  
क्का रु स्वान् वठ णि धन जाक मका सकल न द्वा ड क्क य क्क य ला डा धनी माठ र्जु डि क



ल  
२  
३

सर्वनिष्ठता लवमं ४ थु सिद्धे लो या अ का लात मास काम लमं ४ अं या ल वि चल सया हि यठ वास  
वलिसवलिसुकाय धूयनयवासन धूयवास यकातनव न थाय सममानसं कव रव यास सं ४ न  
वरव यिव लं कालासं कव थु न न ग्रह द व कि सा निरु वरव ॥ ॥ किम न दू किम न लो किम न दया  
सक ७ ग्रह न यिउ न यिउ भाउताय रव डा रव डा रू डा न थ य त लीकास द लावान डा यूरु नी र्व  
द्विरव द्विन नाय द्वा लिव र्व द्विन म द्वि सौ सनिड कात व यिग न द य हिरव ड यठ या यइ  
यू ईरु यय भा क थो ड निड मिवा मथानिड लं रव द न डा सौ रवाल द्वा डिड थ भ नाय  
न यिउ न यिउ र्व वा ठी य मा द व द्वि वा ध वा प्र मा उ अ ध वा लु वा य मा द र्व वा या दू न लिय द  
विय मा ल र्व यि ठा थि ठा या वा का सौ ह या व आ म अ ठ स न द य ध र्व व र्व डा काय उ न रू या क  
स्वान मा ल या ड दू य हा क कू उ रु द्विन डा थ या व रवाल न या ठ स थं डा व भाउ स क या ठ लं

कासक पाठन य हा य र्व द्वा ड क रवाल स स्वाय यठ वास द्वा ड क दू य किम न ता स्वान किम  
ता सा सा किम न ता म ४ अ सा र व न ध न शिद लास द्वा ठ न मूर व द य के व लिस क द्वा ठ न व लिस  
द य के द्वा ठ न मं ४ रु य के दू य म तिल म निव रु नी धान मन सिल व ठ र्व नि या भा स र्वा या क  
स ल डा थु न धूय न थ दू का यि न व न वा वाम ड व ल दू का त न व न र्व दा ड लं काला स  
दू का वि सौ या दू लिव व न दू नि ठा कू उ रु द्वि का के विया व अ सि द्वा द काय स्वान  
भाउ स क थु न न था ग द शा म द्वि नि था ग रु य व ॥ २ ॥ य का या य म ल ॥ डी न र व न र व म हा रु  
न व निल यी व रु य व ग्र ह दिस दित लाल मूर म ४ कु मा न क स्वा हा ॥ ०० कि द्वा द स र्व व सा  
कु मा न य रु वि दिस मा क ॥ १ ॥ ०० न म ४ रू या य ग मा हा न कान म य ॥ ०० रु ना नां कान स न ४  
म सि न क म ४ ध र्व रु न रु ना मि सि व रु स्वन ॥ ०० य सा र्व द सा ॥ ०० य ना रु रु ला ४ लारु यि







ल  
लि  
३३

हृतायार्थे वासने । कामस्यानुगतात्तु रुद्रात्ममह इय ॥ अष्ट ॥ यत्प्रातिथीरिगमनं दववाद्र  
नयक्रितं । कामं क्रिवा कनायाया नृपाकिं शिद्रयं रुवत्ता ॥ अष्ट ॥ उयनयनि येन नृन नृक ॥ वासायि  
गहशकः । कनकय कनसायि । कुरुसायि तर्गता शनि ॥ अष्ट ॥ नियशाननृपाकिं शिद्रयं विनासायि  
यात्कृतं । मदाकन रुद्रायाया । कुरुसायि तर्गता शनि ॥ अष्ट ॥ मद्यासनि रुयं धारं सञ्जु शिद्रयं  
सुधा । शीवीनयिजादानियं कर्ता नत । तर्गता कुरु ॥ अष्ट ॥ नानावितसुषसा रवीरुयं रु  
वति सारुन । सर्वकाङ्क्षि लरुतं काम । सान्कर्गता शिद्रयं ॥ अष्ट ॥ यवतु साहसनिनतु  
यावृत्ताष्ट ॥ यज्ञार्थे यज्ञीरु नतं कामस्यानुगतात्तु रुद्रात्ममह इय ॥ अष्ट ॥ नानावितसुषसा रवीरुयं रु  
मनिषुतु । कुरुसायि तर्गता शनि ॥ अष्ट ॥ उसादसासमाक ॥ ३ ॥ तमसास्वदसामाह  
स्वसायायामनर्ग । विशुद्र कलहं रुवत्ता ॥ अष्ट ॥ नानावितसुषसा रवीरुयं रु  
याधिकययनीत्यष्ट दववाक्रितं नयक्रितं ॥ रुवक्रिताने सङ्कर्गं नादावतं यज्ञुन ॥ अष्ट ॥ वातयि

तर्गतायिजा कलहास्व रुनसह ॥ दसकृष्टं रुयं यिजा नादावतं तर्गता शनि ॥ अष्ट ॥ सुद्रुव  
धनाशार्गवृद्धिवाया धनागमनं रुक्मी शिद्रयं समायाति नादावतं तर्गता शनि ॥ अष्ट ॥ सुद्रुव  
यसञ्जुर्ग । मद्यासनि रुयं धारं सञ्जु शिद्रयं विनासायि  
द्रिद्रुसं माक । सुत्तारुं वितसं वय । कलवाः वा । धवसाद नादावतं तर्गता शनि ॥ अष्ट ॥ नीयथागा  
रुयं धारं अर्थनास नृय रुय । अग्नि । धारं रुयं धारं धेनास्थानं तर्गता शनि ॥ अष्ट ॥ सुत्तारु  
रुं कलहं रुया । धननासनिवृत्त ॥ ३ ॥ वाधवसहसथाग नादावतं तर्गता शनि ॥ अष्ट ॥ नि  
सञ्जु शिद्रयं धारं रुयमायाति शान्तं ॥ स्वसानस्यातर्गता शनि ॥ अष्ट ॥ सुद्रुव  
सादसासमाक ॥ ३ ॥ रुवसास्वदसामाह ॥ रुवाधनसुतावृद्धि यवधमार्थे लोचनं ॥ रुमा  
म्वनलायाय सा लकागहसं रुव ॥ अष्ट ॥ वेसा शिद्रयं मद्यासनि रुयं धारं सञ्जु शिद्रयं विनासायि



[illegible]

पुद्गलान् शोकं कृत्वा न के गताः शानि ॥ १ ॥ शुभं ॥ सुदृष्टं चैव सा वाचं ॥ सा वाचं विदुषा नवीन ॥ सुवसासा  
 कुरुनश्च ॥ मिता श्रुतं क्रासनि ॥ २ ॥ सु ॥ यदुदाना धननास ॥ कथा निश्चम हारुय ॥ ३ ॥ वसा नर्ग  
 तारान् ॥ जिवत सानसं सय ॥ ४ ॥ व ॥ सु ॥ धनर्गः मनर्गं वा व ॥ ५ ॥ गः कनसुथा ॥ कदुमा कदुनश  
 गः ॥ ६ ॥ वसा नर्गताससि ॥ ७ ॥ ॥ दसरुं गरुथा वाधि ॥ नान् इरवानि वर्तन ॥ ८ ॥ जलुईसा मा ॥ जीव  
 सा ॥ कुरुयायामरुहय ॥ ९ ॥ ॥ ॥ स्वय  
 ननास ॥ १० ॥ वसा नर्गतासम ॥ ११ ॥ ॥  
 नयायि ॥ शुक्रवायि ॥ १२ ॥ वसा नर्ग  
 दसामाह ॥ १३ ॥ वा ॥ धर्मा समाशी ॥ मि ॥ व ॥ सु ॥ मा ॥ गम ॥ १४ ॥ ॥ या ॥ या ॥ ति ॥ वि ॥ य ॥ ली ॥ द ॥ ह ॥ ॥ य ॥ पि ॥ ति ॥ न ॥ य ॥ का  
 र्वा ॥ १५ ॥ व ॥ के ॥ ॥ इ ॥ र ॥ वा ॥ ॥ ॥ का ॥ क ॥ ता ॥ ना ॥ र्थ ॥ ॥ स ॥ नी ॥ नः ॥ ॥ क ॥ स ॥ सी ॥ य ॥ क ॥ ॥ ॥ रु ॥ व ॥ र्थ ॥ न ॥ द ॥ सा ॥ या ॥ हि ॥ ॥ क ॥ ता ॥ न ॥ क ॥ ग ॥ ता ॥ व  
 ध ॥ ॥ व ॥ ॥ ॥ शु ॥ ॥ ॥ शु ॥ क ॥ द ॥ वा ॥ र्च ॥ न ॥ न ॥ ता ॥ द ॥ न ॥ ध ॥ र्मा ॥ न ॥ क ॥ र्थ ॥ ॥ ॥ व ॥ सु ॥ ली ॥ का ॥ न ॥ न ॥ रु ॥ क ॥ ॥ ॥ क ॥ या ॥ ॥ शु ॥ के ॥ ग ॥ ता ॥ व ॥ ध ॥



可  
信  
32

[illegible][illegible]











|          |            |
|----------|------------|
| मकलजा    | ऊनल्लुयि   |
| यिवल     | बल         |
| मज्जिनि  | मगजिन      |
| रुनणि    | यस्य       |
| शादिणी   | मघ         |
| पुनर्वस  | यु३        |
| मधुष     | विज        |
| उग्र३    | विसाष      |
| हल्ल     | ऊष         |
| खाकि     | शुवण       |
| मन, पनसु | कलिक       |
| निधिप्रह | मिथि, च    |
| यसन्तप्र | च, ल, हा   |
| द्वानल   | वान, मा, त |
| जायीकय   | शुश        |
|          | थायिकय     |

|                 |                |                 |
|-----------------|----------------|-----------------|
| मंगल<br>७       | शुक्र<br>१०    | बुध<br>७        |
| शुक्र<br>३      | ०              | शनि<br>१        |
| बुध<br>८        | शुक्र<br>८     | शनि<br>२        |
|                 | ८<br>मेघादि    |                 |
| ७८<br>१२ के काप | बुध<br>७८      | २८<br>१० मकरा   |
|                 | १३<br>११<br>७८ | नवाशुक्र<br>यसय |

२३ वी म न्द हृदय कि रा ह क वि वि कि सा म स ॥ क स  
॥ च रि क नु वि रु व क न र थ प्लु हि श म वि श प डु र्व ग ग कि  
काल उ द य शाय वा न च र्व न वा य यि पि स ७ य वि या कि न  
वा य ॥ काल उ द य म्ना दि न स क ल ग ह स य ॥ द ७ ग ५ ज्ञे य  
य म म ल ष षि ष ड व ग ॥ स्वा मि ना मि न रा या व ल मि म ल वि न स्य कि ॥

वे मे ला प्र वा रु  
॥॥॥॥ नमः ॥ वि ॥ न ॥ शु ॥ म ॥  
समे उ सर्वे उ मू  
रस्य शला मादिन करु न वा य ॥

२ सूत्रं विकृतिपिण्डं जसन्निभमिन्नरुतैव त्रयं । तस्मात्तु यश्चमक  
लान् चतुर्थं चरुं कुर्यात् । षष्ठं वाद्याह उच्यते । रिषा रिषपूनष । षष्ठं  
दुग्धमवैक्ष्णीरुव १० ॥ वाद्याह लाघाटिकावदुर्थं रिषापि गल्लं मरु  
कं भाक । सद्यो वनिष्टं चरुं वैक्ष्णीरुव । त्वीस्यापानं उविर्विहानियात् ॥ सू  
त्रं लागादिने क्रुवाय नृश्विना । दिदिय दिवसुन क्रुवाय वैक्ष्णीरुव । चरुं  
व वाद्याह लाघाटिकावदुर्थं रिषापि गल्लं मरुके । क्रुनन उच्यते ॥



मि २ शिन ल्हा न य कि रु नि व क्रु स्तु था पि ता ह क र ल न स्तु  
न स र्ग ह ना रु ड य ष ध न ना स या ॥ या द स्तु क ल ह नि  
र्य रु नि मू क प्रे कि रि ता ॥ ॥ थं शु भा ग्व उ स पु न ष या कि मि  
या न क्रु ज वृ लि ला क सा यू रु ष नि मा यि ॥ वं कु स ला क सा  
उ ज जि नि मा यि ॥ क न स ला क सा का य मा यि ॥ उ न स ला क सा  
थ पा ध न ना श ॥ या द स ला क सा क ल ह ॥ म ला व र्क उ क व ॥

२ नाजिरुद ॥

१३३३ नाडियति मधुनाडिथाषिनाहक ॥ अ० ५५ ना  
डिषुजाहकिनाडि ॥ अ० ५६ बडुलकणी ॥ ३३३३ नाडिसं  
लिलाकस, यूयै रुषनि इवभाय ॥ मधुनाडिसलाक  
सा, जिनि इवभायि ॥ अ० ५७ नाडिसरुदलाकस धन  
कय ॥ मलावकी उरुव ॥ अ० ५८ नाडिवाय ॥ नाडि  
रुदकाय ॥ अ० ५९ नाडिपुनसयालिध्वनक ॥ अ० ६०  
संयथा ॥ अ० ६१ नाडिसद्व ॥

|         |         |         |         |
|---------|---------|---------|---------|
| मकर १०  | सिंघ २  | वृष २   | उल १    |
| मष १    | कन्या ८ | कन्या ८ | अरु ११  |
| उल १    | मीन १२  | मकर १०  | मिथुन ३ |
| कृक ८   | अरु ११  | सिंघ २  | मीन १२  |
| धनू २   | वृष २   | कृक ८   | धनू २   |
| विह्व ६ | मिथुन ३ | विह्व ६ | मष १    |
| शक्र ५  | काष्ठक  | मिथुन ३ | काष्ठक  |
| सिंघ २  | कन्या ८ | धनू २   | विह्व ६ |
| मकर १०  | धनू २   | अरु ११  | मकर १०  |
| अरु ११  | मीन १२  | मष १    | मीन १२  |
| वृष २   | मष १    | सिंघ २  | कृक ८   |
| विह्व ६ | उल १    | उल १    | कन्या ८ |
| मिथुन ३ | कृक ८   | वृष २   | मिथुन ३ |
| मकर १०  | सिंघ २  | मकर १०  | सिंघ २  |

२मकानसर्वसनिभययुद्धा। तुलसहमीनकुलीलघटश्च। धनूद  
वृष्टिकमनाधराशा। सगधननासकनिषठक॥ गकुवकावृकमन  
व॥ ॥ इषतुलयासुरुकन्यधनवृष्टगमिधूर्नरुननारुकांरुन  
काकाहधनूषाहृष्टिकमवासागधनयीकिसदृष्टिवठक॥ मिश्रव  
कावृकनव॥

२सिंध चकना मकनचवापघठवमी नष्टवरुचमधः ॥  
 ओउलायां मिथूनवक्रकीकै विवाहमृत्तमूनथावदनि ॥ गक्र  
 द्विद्वादशमकव ॥ वापरुनिन्दघठरुमृत्तमूनथावदनि ॥ गक्र  
 लिपुत्तरुव उलावलायां वृषमन्मथव द्विद्वादशवाफिमपनि  
 वृद्धि ॥ मिथु द्विद्वादश ॥ पूषयायासिउ जियानासिउसाय ॥







[illegible]

निगदसूचानासनिशेठयेव। शोषीवकुनिनासाधनमथविदुःस्थानसालाकुरसंपद॥ ३०॥ स्वजीवहृदि रुव  
 कियनिरुवागमदायवशुक्र। कोजदिवाकैकेनारि निहितवियूसदालिलयास्त्रयपूरु॥ ३१॥ शोषीवकु  
 गदसूदिनकृत्तहिमगोमानविनानसया। उक्तिक्षीरकलाशाकलहमवनिक्षकलिकानक्षत्राणि॥ जीवरुड  
 नसशावसनधनवतीस्त्रियदःस्वशुक्र। ह्नाध्वानंययातिस्वजनविनहितैस्त्रयउदिनधया॥ ३२॥ कृकशा  
 सादःस्वमृत्कंदिकृत्तनिधनभयकृदिशशाक। मृत्कलाभार्थनाशावनमूयउमिउयुशार्थशोषी॥ जीवरु  
 नार्थनाशासनधनमूयउमानलक्ष्मीच  
 कयु॥ ३३॥ कृकलाकाइश्वाइनदिनकृ  
 मथवनिधविद्विधाभावध्वच। जीवमानार्थसिद्धिषुषमशुवशुभाधर्ममानार्थलारुनष्टदशाध्वकयुयि  
 वतीधनसूकृत्तयीजीतायापशील॥ ३४॥ कशसिद्धिययसुबुधीमतिहिमगोकर्मागकर्मासिद्धि। शोषी  
 मार्थलाशाधनयिवतीसूषाचल्यवेरीनार्थ॥ कल्यस्तनार्थदातासुवशुक्रनशिर्वलाग्रेववितनार्थ। न  
 भाषाधकृकहंरुवतिवतीसूतकीलिविशार्थनार्थ॥ ३५॥ नारायणैमाननिशारुवमूयतामिउयार्गम



[illegible][illegible]







पथापय-सुखसिद्धासुखवर्गतायादिक्रमथाविधी ॥ ११ ॥ शुभशुषुविहिनैमकनहिनकन  
 वसुनहिकान-सुखसाभकननविहनयकनातिदुखसदादिन ॥ १२ ॥ वदुर्थहन्नकमाका  
 दशमश्रयिगलथा-सफुमवजुकाकुशाहमागापुसुवदनन ॥ १३ ॥ शुभशुषुविहिनैक  
 कानकासुतदाश-गगानमागगाईचपलयाधियासि विनहिननसफुमरुवगसिक्तसाजां ॥  
 १४ ॥ दिनिमिनिमहिदृष्टिदाद ॥ १५ ॥ निमिन्दु-दशमनदीननथगककयभा  
 मूयताक्रम ॥ १६ ॥ मशुरुषरु ॥ १७ ॥ यककजासुशुनयमय-सुखनकिलमवा  
 पृदादशसुविअया ॥ १८ ॥ दशमदृतीया नवयवमवा वदुर्थमकादशयनातिष  
 मरुसोपकुअराहयप्रेमरुकाउगारुवगगात्मश्रयिगताशगा मासुनश्रनजीवति  
 १९ ॥ रामसोवीसुजनासुविशुसुश्रुताष्टम-द्वादशसुवनक-श्रव-दिद्यायैजायक  
 नन ॥ २० ॥ लससफुमकाजीववधकर्मगायिता-गीतवधनसंस्तुया-कदानाकविनि

दिष्टा ॥ २१ ॥ द्वादशसुयदाशुसुसासफुमगगवध-चलवकादससुनदिघायजायकनन ॥  
 २० ॥ सोपविल-मकपयविलिक्त-कुल्लि-गकाकिटकनिशाकप-दिवाकपयुगगगजिनाष्ट  
 मरुवकनन-दावणसुदया ॥ २१ ॥ चकउङ्गरुवगगागि-नृपउङ्गदिगीयक-सुखउङ्गवरु  
 वरुनाजो-उङ्गहीनाउनिर्दनी ॥ २२ ॥ हरिश्चगृहमेखिलि-हरिकुर्वेननाधिष-हरिनिवरुव  
 कदास-हरिमरुवरुस ॥ २३ ॥ लससुनजयसोवी-रियसुन-श्रवदमा-कुज  
 चवाष्टमसुन-नृपनाजायक-कर्व ॥ २४ ॥ शुषसीराक्षधनानगा-रुव-विनकमज  
 ला-दिलिचयतिचकावकि-यावानाडशकाशहा ॥ २५ ॥ दशमगगादिवानार्थ-ल-गुगुना  
 रासुव-वधवदियामिश्रावधगजिनारुव-यगयकिनार्थ ॥ २६ ॥ कर्मकर्मशुभवनूज  
 नरुदवसुशासु-समुधलकाषमापिजाकि-निश्रयाभधकाभामपिरासुनायध ॥ २७ ॥  
 पादकदष्टिदसमदृष्टि-दियादिष्टि-चउसाष्टमय-दयाददष्टिनवय-भम-सिद्ध



वि. समसककवू ॥ २० ॥ ल. शेषककमच ॥ स. दामन ॥ य. वै. मा. प. स. द. वि. ॥ म. द. वि. शुरु. द.  
 वि. वर्ष. मा. स. क. ध. न. ॥ २१ ॥ क. रु. य. ल. ल. म. म. न. द. ग. म. म. प. प. म. म. य. श. रु. च. न. ॥ क. वि. व. क. श.  
 ल. म. म. द. स. म. स. ह. य. न. स. क. म. ॥ जी. व. स. क. म. न. व. द्वि. प. श. म. ग. म. य. ग. म. म. प. स. म. न. म. श. ॥ २२ ॥ शुरु. क.  
 द. श. म. स. र्व. न. म. स. न. हि. न. स. र्व. पि. डा. य. न. शुरु. ॥ ॥ स. म. का. य. म. स. रु. ल. ॥ ल. म. श. र्व. द. डा. ल. म. स. द. का.  
 ग. रु. जा. य. न. य. ल. ल. हि. क. द. यि. स. य. ॥ ॥ म. दि. न. क. म. क. क. र्क. य. क. म. स. र्व. म. य. ग. रु. नि. व. श. का.  
 ल्या. र. व. क. म. म. व. ॥ व. न. स. क. म. न. थ. ॥ ॥ वी. का. व. ल. ना. व. ॥ ॥ ग. न. न. ई. वा. का. ॥ ग. म. ल. क. ॥ य. रु. द. वा. ग.  
 डा. ल. क. ल. हि. क. स. य. ॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥  
 द. द. द. द. द. व. स. य. ॥ म. दि. न. क. म. क. र्क. य. क. म. स. र्व. म. य. ग. रु. नि. व. श. का.  
 जा. य. न. य. न. सा. व. व. थ. व. र्क. म. म. द. स. य. ॥ ॥ व. न. ल. म. ॥ इ. स. र. वा. व. ल. म. स.  
 व. म. सि. ध. व. न. न. वा. म. व. र्क. स. म. यि. व. ॥ ॥ म. म. ॥ क. क. र्क. ॥ रु. ल. ॥ वि. क. ॥ रु. म. ॥ व. र्क. स. म. यि. व. ॥ ॥ म.  
 व. म. सि. ध. व. न. न. वा. म. व. र्क. स. म. यि. व. ॥ ॥ सि. ध. ॥ म. क. न. ल. म. ॥ यि. र्क. स. म. यि. व. ॥ रु. य. ॥ क. न. ॥ म. क. न. वा.

स ॥ इति नमिषु यिव ॥ ॥ वृषल गुरु सग यिव ॥ तुल ॥ मिथुन ॥ कुम्भ नवांश ॥ यरु सग यिव ॥ ॥ धन  
मीन ॥ मिथुन ॥ कन्या लग्न यरु सग यिव ॥ कर्कट ॥ विष्णु ॥ मीन नवांश यरु सग यिव ॥ ॥ मय ॥ वृष ॥ मि  
थ ॥ धन ॥ लग्न ॥ शाल नर्ध सा र्थ जायनययि ॥ मिथुन ॥ कन्या ॥ मकर ॥ तुल ॥ लग्न ॥ हि ॥ उ ॥ इ ॥ जायनय  
यि ॥ कर्कट ॥ विष्णु ॥ कुम्भ लग्न ॥ मूला मुखन जायनययि ॥ ॥ १ ॥ ९ ॥ १० ॥ धन नवल लग्न धाय ॥ २ ॥ ११  
॥ १२ ॥ धन शिव लग्न धाय ॥ ३ ॥ १३ ॥ १४ ॥ धन इ स्वरावल लग्न धाय ॥ १५ ॥ १६ ॥ धन लग्न स ॥  
मूला ॥ गनि शुभ धिव नार्धवाल नौ इरुय गुरु न र्वदसन यनर्ध निव ॥ ॥ पायग  
रु लग्न सर्व काल नवम युक्मः सर्व काल धिव वलुया कन नवम पश्चिम स पा  
यगुर्व काल पायगुरु डा र्वडानार्ध धिव धर्मा लाली माम मूला मिमा गिन शुनिव धाय ॥ ॥  
लग्न स र्वदन र्व काल आदि क सफ स ड काल वव ध्वं स मड धाय ॥ ॥ आदि क वलु लग्न स र्वी का  
ल वव पनद सर्व ग धाय ॥ ॥ लग्न स आदि क र्वदसा याल ग्वाल निभाव विभाव वाक लाडा



[illegible]

ग्रहपाय ॥ ॥ लग्नस वृषार्धकाल विविग्रहपाय ॥ ॥ लग्नस वृहस्पतिर्धार्धकाल मनानथग्रहपा  
 य ॥ ॥ लग्नस शुक्रार्धकाल नक्षत्रग्रहपाय ॥ ॥ लग्नस शनिर्धार्धकाल मलिनग्रहपाय ॥ ॥ राहिस  
 रकाल छटिमहाकाल याज्ञिकलीलावर्क यिनाउडिलाव विक्रयलक्षिकपाउनकैडाव वाचास  
 यिनाउवायवनिव धुनयात्वात्मान छटित्वापिष्टाय ॥ वक्रस्विनरुसा लक्ष्मिनपाय ॥ विक्रपू  
 रसा वंदवलवर्नपाय ॥ ॥ धनुमी  
 पाय ॥ ॥ इमो लुनवीनागसा रुयह  
 हर्षात्मा जयकर्य ॥ जीव यापि धनक्रेयाथवियुलं स्त्रया नक्षत्रधरा ॥ शुक्राङ्गमनिवसुर्मन  
 सयर्न, श्रुता गङ्गा नाना ॥ ॥ रानरुवणी सामविग्रह पूर्वसु लुनि ऊरु ॥ शवर्न नक्षत्रियवह  
 स्वातिवृहस्पति शुक्रगनरुष शनिवर्क ॥ वृषर्धिसुनिकवना नडी वयी ॥ धनरुजलाल्प  
 काभासामन्त्रा नपाय ॥ ॥ दिनसवलवर्नग्रह ॥ जा ॥ वृ ॥ शु ॥ वृ ॥ राहिसवलि ग्रह ॥ नौ ॥ ग ॥ व ॥ वै ॥  
 धवलसवलवर्नग्रह ॥ वृ ॥ वृ ॥ शु ॥ वै ॥ धनसमयग्रह गोकलामवलि ॥ ॥ भवनासि नौ गाय



६  
५  
२५

कुरु वेष्टाशक्ति नकुवर्ण लघुकलाय कनूमति ॥ ॥ दधनामि शुक्रकुरु सुदशानि सतवर्ण द्वितीय  
हृष धनस्य ॥ ॥ मिथुननामि वधकुरु वेष्टाशक्ति निलवर्ण सहरुद्रशिव द्वितीयसह ॥ ॥ कर्कशनामि व  
नकुवर्ण वक्रशक्ति ग्यामवर्ण सहरुद्रवधुर्थदिवक यातलशुक्र वेष्टाचतुर्थ ॥ ॥ सिंहनामि ग्यादिनकु  
कुरुशक्ति मधुशक्तिवर्ण शुक्रयश्मयमि राशुलाधि ॥ ॥ कन्यानामि वधकुरु सुदशानि ग्यामवर्ण नि  
यवसुमकुरु ॥ ॥ उलनामि शुक्रकुरु कुरुशक्ति सतवर्ण सहरुद्रवधुर्थ यातलशामि ॥ ॥ विह्व  
सि लीगानकुरु वक्रशक्ति नालव  
हृषाति कुरु कुरुशक्ति पीतवर्ण  
कुरु सुदशानि नकुवर्ण कर्माग्यामयदसमयवध ॥ ॥ ऊरुनामि शनिधनकुरु वेष्टाशक्ति नाल  
वर्ण ग्यायशकादशरुवा ॥ ॥ मीननामि हृषाति कुरु वक्रशक्ति स्वकवर्ण ग्यायदशविश्वक ॥ ॥ शुक  
दादशनामि विधी ॥ ॥ दिनयामनसवल्लिशह आदिन ॥ नादिसवल्लिशह रैड ॥ यराकसवल्लिश  
ह गानिधन ॥ यराकसवल्लिशह शुक्र ॥ नादिसवल्लिशह वध ॥ मथानसवल्लिशह हृषाति ॥

नकुसवल्लिशह अगान ॥ मथानसवल्लिशह शरु ॥ ॥ आदिन गुरु रंगल वीड उल्हा ॥ शनिधन  
मयन ॥ शुक्र शानस ॥ वध धिगल ॥ हृषाति काशिक ॥ अगान स्वन ॥ शरु लावतु ॥ ॥ ग्यायशकादि  
न विलासनवाय ॥ ॥ वध ग्यायशकादि ॥ ॥ गुरु कुरु वक्रशक्ति ॥ रुद्रि मधुशक्ति ॥ सिंहनामशक्ति ॥  
स्वान लीईवेष्टाति ॥ नागमनवक्रशक्ति ॥ कुरु शक्रसक्राति ॥ रुद्रि मधुशक्ति ॥ वध ग्यायशकादि ॥ ग्यादिन  
विलासनवाय पनियातिन ॥ वध ग्यायशकादि ॥ ॥ ॥ विस्मक ॥ यशकवक्र सतवर्ण वक्रुद्रक ग्यायवाहणा न  
कय ॥ ॥ पी ॥ एकवक्र दिशुन पीतव  
क ग्यामवर्ण वायनासा ॥ ॥ मथरुद्र  
नकुवक्र गुरुकुरु नकुवर्ण अगानसना ॥ ॥ ॥ एकवक्र दिशुन नकुवर्ण स्वाननासना ॥ ॥ गुरुय  
यवक्र वक्रुद्र नीलवर्ण यशसना वक्रहस ॥ ॥ ॥ ॥ एकवक्र वक्रुद्र नीलवर्ण अगानसना  
यासहस ॥ ॥ ॥ ॥ एकवक्र दिशुन नीलवर्ण ग्यायवाहणा याविश्वकयासहस ॥ ॥ ॥ ॥ एकवक्र  
दिशुन सतवर्ण महिषासना नीलायनयसहस ॥ ॥ ॥ ॥ वक्रुद्र वक्रुद्र नीलवर्ण ग्यायसना



कल्याणपास्य हस्त ॥ ॥ ५॥ एकवक्त्र द्विचक्र मृदुपात ममवर्ण युरुकीकल वृषासना ॥ ॥ या ॥ ५  
 कवक्त्र द्विचक्र नक्रवर्ण रुद्रिवाहना वरुहसंधर ॥ ॥ ६॥ वरुवक्त्र सहस्रचक्र सप्तवर्ण मयनासना य  
 श्रधमहस्त ॥ ॥ ७॥ एकवक्त्र द्विचक्र नक्रवर्ण श्याद्युगमासना स्रष्टाधारहस्त ॥ ॥ ८॥ एकवक्त्र द्विचक्र  
 पीतवर्ण जम्बूकासना ॥ ॥ ९॥ एकवक्त्र चतुर्भुज नक्रवर्ण मृगासना हस्तचक्र धारहस्त ॥ ॥ १०॥ एक  
 वक्त्र द्विचक्र सप्तवर्ण जम्बूकासना ॥ ॥ ११॥ पञ्चवक्त्र सहस्रचक्र मृदुपात ममवर्ण मर्कटा  
 सना धनशतक्र धरणी ॥ ॥ १२॥ वरुव  
 उधर ॥ ॥ १३॥ एकवक्त्र द्विचक्र सप्त  
 वक्त्र द्विचक्र सप्तवर्ण मनुष्यासना पाशवृषधर ॥ ॥ १४॥ एकवक्त्र चतुर्भुज नक्रवर्ण हंशासना वरु  
 यरुधर ॥ ॥ १५॥ एकवक्त्र द्विचक्र सप्तवर्ण कुक्कुटमासना मालपास्यधर ॥ ॥ १६॥ एकवक्त्र द्विचक्र  
 ममवर्ण यमासना वरुपास्यधर ॥ ॥ १७॥ एकवक्त्र चतुर्भुज पीतवर्ण मधुपमासना वरुहसंधर ॥

॥ १८॥ एकवक्त्र चतुर्भुज सप्तवर्ण मन्वशासना यकिनीलात्यल धर ॥ ॥ १९॥ किसकाविसनियाग वरुणा  
 सन हस्त धर विधि ॥ ॥ २०॥ मृदुपात ककुभषा दिनासि लक्ष्मिधर धानिव ॥ ॥ २१॥ नन्दु नन्दु धानिव ॥ ॥ २२॥  
 न लयाधानिव ॥ ॥ २३॥ सयद्र धानिव ॥ ॥ २४॥ हस्तधरि दंष्ट्रि डालकिड धानिव ॥ ॥ २५॥ शनिधर नन्दु  
 धानिव ॥ ॥ २६॥ मशाला धानिव ॥ ॥ २७॥ धर्मसमृद्धि धानिव नक्रधर नन्दु धानिव मृगा  
 नन्दु धानिव ॥ ॥ २८॥ मधुपमा  
 लन कन्य हस्त धर उल विद्रु यय  
 जगलन मीन समुद्रधर ॥ ॥ २९॥ धरधर  
 काठि २० सामसावह ॥ ॥ ३०॥ वरुधर ॥ ॥ ३१॥ हस्तधरि वड डह ॥ ॥ ३२॥ वरुधर ॥ ॥ ३३॥ शनिधर वानह ॥ ॥ ३४॥ ममवान  
 ह ॥ ॥ ३५॥ शनिधर ॥ ॥ ३६॥ ममवान ॥ ॥ ३७॥ गुली कठि डालव किपाससाय धूम धानिव कालास्य हस्त काठन  
 धर ॥ ॥ ३८॥ यवान धर ॥ ॥ ३९॥ शनिधर ॥ ॥ ४०॥ शनिधर ॥ ॥ ४१॥ शनिधर ॥ ॥ ४२॥ शनिधर ॥ ॥ ४३॥ शनिधर ॥ ॥ ४४॥ शनिधर ॥ ॥ ४५॥ शनिधर ॥ ॥ ४६॥ शनिधर ॥ ॥ ४७॥ शनिधर ॥ ॥ ४८॥ शनिधर ॥ ॥ ४९॥ शनिधर ॥ ॥ ५०॥ शनिधर ॥ ॥ ५१॥ शनिधर ॥ ॥ ५२॥ शनिधर ॥ ॥ ५३॥ शनिधर ॥ ॥ ५४॥ शनिधर ॥ ॥ ५५॥ शनिधर ॥ ॥ ५६॥ शनिधर ॥ ॥ ५७॥ शनिधर ॥ ॥ ५८॥ शनिधर ॥ ॥ ५९॥ शनिधर ॥ ॥ ६०॥ शनिधर ॥ ॥ ६१॥ शनिधर ॥ ॥ ६२॥ शनिधर ॥ ॥ ६३॥ शनिधर ॥ ॥ ६४॥ शनिधर ॥ ॥ ६५॥ शनिधर ॥ ॥ ६६॥ शनिधर ॥ ॥ ६७॥ शनिधर ॥ ॥ ६८॥ शनिधर ॥ ॥ ६९॥ शनिधर ॥ ॥ ७०॥ शनिधर ॥ ॥ ७१॥ शनिधर ॥ ॥ ७२॥ शनिधर ॥ ॥ ७३॥ शनिधर ॥ ॥ ७४॥ शनिधर ॥ ॥ ७५॥ शनिधर ॥ ॥ ७६॥ शनिधर ॥ ॥ ७७॥ शनिधर ॥ ॥ ७८॥ शनिधर ॥ ॥ ७९॥ शनिधर ॥ ॥ ८०॥ शनिधर ॥ ॥ ८१॥ शनिधर ॥ ॥ ८२॥ शनिधर ॥ ॥ ८३॥ शनिधर ॥ ॥ ८४॥ शनिधर ॥ ॥ ८५॥ शनिधर ॥ ॥ ८६॥ शनिधर ॥ ॥ ८७॥ शनिधर ॥ ॥ ८८॥ शनिधर ॥ ॥ ८९॥ शनिधर ॥ ॥ ९०॥ शनिधर ॥ ॥ ९१॥ शनिधर ॥ ॥ ९२॥ शनिधर ॥ ॥ ९३॥ शनिधर ॥ ॥ ९४॥ शनिधर ॥ ॥ ९५॥ शनिधर ॥ ॥ ९६॥ शनिधर ॥ ॥ ९७॥ शनिधर ॥ ॥ ९८॥ शनिधर ॥ ॥ ९९॥ शनिधर ॥ ॥ १००॥ शनिधर ॥















[illegible][illegible]











[illegible][illegible]







४  
५  
६

लवद्विधा नाउभवक ॥ वानिधुवर्मा ॥ धर्मिष्ठ ॥ सा सुकु ॥ वडुरुया ॥ वरुयु ॥ वात्रविन ॥  
यसनि ॥ वात्रिपाय ॥ कापस्य राव ॥ दीद्योगि ॥ स्व ॥ द्युगमि ॥ मायावृद्धि ॥ अलाशी ॥ निवद्विध ॥  
जागमा ननउद्वृद्धि ॥ गतिवाद्यपीय ॥ कारुण मांस ॥ अतिसान ॥ कामलपाय ॥ ३३ ॥  
रुनपीनक ॥ अनिश्रव वास ॥ लक ॥ वर्ष ॥ ३३ ॥ वरुयु ॥ पनमायु वर्ष ॥ ६१ ॥  
॥ वरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ धर्मिष्ठ ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥  
वि ॥ सा सुकु ॥ विदस सुपी ॥ वालक ॥ वरुयु ॥ पश्चात्सुपी ॥ किंविदु ॥ रुयक ॥  
मूकनपीय ॥ विशावन ॥ शिल्प ॥ मूकन ॥ कलिपीय ॥ निपन ॥ दान ॥ ३३ ॥  
धर्मिष्ठ ॥ सत्यवादि ॥ अतिजन ॥ गुन ॥ ननक ॥ जागमा ननउद्वृद्धि ॥ शीवन ॥ गीतवाद्यपीय ॥  
॥ गन्धमालापीय ॥ ॥ अतिसान ॥ अति ॥ ३३ ॥ मरुत ॥ मरुत ॥ मरुत ॥ मरुत ॥ मरुत ॥  
मास ॥ वरुयु ॥ अनिश्रव वास ॥ लक ॥ वर्ष ॥ ३३ ॥ मरुत ॥ मरुत ॥ मरुत ॥ मरुत ॥ मरुत ॥

॥ ३३ ॥ ॥ उरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ कर्मशील ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥  
जागमा ननउद्वृद्धि ॥ दानसु ॥ मूकन ॥ मधवि ॥ मधवि ॥ मधवि ॥ मधवि ॥ मधवि ॥ मधवि ॥  
॥ वरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ कर्मशील ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥  
॥ उरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ कर्मशील ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥  
॥ वरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ कर्मशील ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥  
॥ उरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ कर्मशील ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥  
॥ वरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ कर्मशील ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥  
॥ उरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ कर्मशील ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥  
॥ वरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ कर्मशील ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥  
॥ उरुयु ॥ ननक ॥ मधवि ॥ कर्मशील ॥ गंलीवनयन ॥ सर्वरु ॥ गीयय ॥ वरुप ॥ ३३ ॥















[illegible]

कयुक्ताङ्गुलान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं कथां ज्ञादकथं पश्यन्ति निमित्तं गच्छन्ति ॥ मिथुनां भक्त्यैकादशेषु न  
षष्टिभ्यः भवत्याह ॥ मिथुनपनूतं ज्ञातुं नृसूक्तं यथापि नृसूक्तं ॥ मिथुनाङ्गुलान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥ मिथुनाङ्गुलान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥  
यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥  
दागच्छ ॥ दिवसमात्राणि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥  
पवनं शालग्रामविषमर्कं गता नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥  
ह ॥ यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥  
स्वास्त्यं ॥ यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥  
लनिन्यतं नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥  
स्य गुरु गुरुं विद्य ॥ उत्पन्नं नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥ यन्मदागच्छ ॥ कन्यामिनां शङ्खान्विलग्नं यथापि नृसूक्तं ॥







[illegible][illegible]







[illegible][illegible]











वृ  
७५

भातिकष्टः शशिनिसमसुयहादृष्टः ॥ सनरुनरुसुकरपासिसथागामिं शीगुणाः षष्ठिः संख्यादीनय  
 नाभीयसुपविष्टसनाख्यानाः ॥ शीमानुववाहविक्रवा बहुधमोशिलसाश्चथविच्यधधगाखगुणाकिनाम  
 ॥ कानः सखीक्रितियाः सखिवाधवास्यासुगः प्रमानिपलपीः सनरुकिधनः ॥ वाभीयउधेनपकिनि  
 कुरुसुशीला लोकांनधान असुमाधनका मिनीनी ॥ रवाकिः समादिगगुलेसमरु विभाथागनिशाकनरु  
 कनरुसवेग ॥ वाग्बुद्धिविकामगु  
 दाताकुमुदहनथाखणलद्वरवदः  
 समूहद्विदीना दानिदः खगदः  
 कमरुमरुवतिपाधिववैशयपि ॥ कन्यादिहयहयागाः कोलिनाथनदाइय ॥ कपधनसमादृष्टाशुचकपादि  
 विरुयगु ॥ लोमादिनामल नग ॥ अलमृधः विज्ञायवदसम्यक्नरुदिहर्गुली ॥ विकामविउ  
 धाथानिधुनवचनथमूपकिशु ॥ हिशो लिम्विनापिसूनरुयालोमयागेन ॥ धर्मिशाशुगधकशलीधर्म

नतः काथद्वानुस्त्रीकुरुषी सर्वलिनाकविचनः सामथरुवति ॥ नानाविद्याख्यातनु पशीयकमपि ॥ स  
 अरुमधनसमृद्धसनरुयासुवगुरुकुरु ॥ श्रीकुरुविउगुरुशुशुदाइयः सविकमोरुवति ॥ नृपसद्वतः  
 वसादकः गुवनसनरुया ॥ निपुनमकिशामपुनित्यसंप्रकिनाधनसमृद्ध ॥ सनरुयाविपथकीयासगु  
 रुवमलिन ॥ साभावल्यासुकायकन ॥ ५० ॥ वीवत्यामीष्टः खवसामानीव ॥ अरुधयकाधीना  
 धाः सरुनः अरुनरुयापगलुश्र ॥ गत्रवोलेखापदः कविः पडका नृपाफसरुणिन ॥ कवि  
 नगुरुमानयवाससिद्धकमामृधन  
 ॥ अनरुयादिदशगुनी सल्लाकः  
 पतिकान्ठकनकसुद्वैश्रयमानरुयाला अरुवति ॥ विरुिर्गुरुसुवसायुहिनवाद्यशुशुदसमृ  
 दुः ॥ इद्वेनितागलरुनीगुणसहितः ॥ पुनवानविकन ॥ अनरुयाकन ॥ ५० ॥ आरुतकावहविलोनि  
 यनेणाकिप ॥ अगुणा किधिकसुर्थ ॥ दृष्टोसतिपसकः ॥ अलायणी शशिनिलोमवधमथ ॥ आख्यातः कमी

वृ  
७५



[illegible][illegible]



वचनननुर्वसोसोमो द्वाधनयनाः कुरुतं ॥ सङ्गामविस्था नरुमिसुगनायवाहृष्ट ॥ वनिक्तुलखरावश्या  
 लुपदवापद्वनक ॥ सुकद्वधीसूनिर्मिः ॥ गतवसोधानि ॥ सुनिविक्तुवववाश्याहृष्ट ॥ पिमलवग ॥  
 नाशोऽङ्गसङ्गनांवरुलक्यादिवरुण ॥ सर्वगदः ॥ समसुद्वः ॥ समकायः ॥ सुस्मिता विपूल ॥ नात्यर्चः  
 वनीयुष्मोविश्यायकोरुवदूरुयवश्या ॥ सरुग्मावरुलुयङ्गना वधनामाश्यानृपदिगुली ॥ नित्यासाहि  
 हृष्टाकुकाशगीनरुयवश्याभासाना  
 वाशेद्वेद्विगदुयाः ॥ येषयत्तुर्लया  
 गीनाम्वसगः ॥ स्यादवनीगः ॥ कुरुन्यूल  
 नियन ॥ गयस्त्रिसारुसिका मय्यावलसद्वसंपूना धनवान् ॥ पापमतिवर्धनिक्षरविक्तुगयाः ॥ स्यात्यव  
 पुष्ट ॥ सवाकुरुद्विधवधनारविक्तुयाः ॥ पियववापसावीस्याहृष्ट ॥ श्यायः ॥ किमिपदिदपिकः ॥ सगाधवलक  
 यविद्यावान् ॥ वरुधमो नृपसविवः ॥ समृद्धिगामि रसंगयाकथे ॥ स्त्र्याहृष्टत्यनियुक्तारुवद्वपाश्या

यसंज्ञाश्च ॥ गायपुरुषविश्यागक्रियुतानगद्वेल ॥ शमानरुक्तावविमिगयाः ॥ सुसङ्गलद्ववधुन ॥  
 धादुक्ताधमोमयः ॥ स्वकमोनिनरुः ॥ पणष्टसुतदान ॥ निरुवंगगुलीः ॥ सुद्वः ॥ गानिअनधमील ॥ सु ॥  
 शानजयगापीमल्लासुखदनाउद्वश्च ॥ मवर्मभाउगिल्लीकुरुक्ल ॥ सुद्वः ॥ उरुयागे ॥ काश्रकधाष्टुनिपू  
 नः ॥ सुधन ॥ सुसमतः ॥ सुकपश्च ॥ स्मिगवदनः ॥ गगिवध्या ॥ धमोकरुस्त्र्याद्विगिष्टगुण ॥ दृष्टसाहदा  
 विनिगः ॥ स्ववन्दुसमानरुद्वनगश्या  
 मृषाम्वगशुः ॥ कीयाविषिक्तुः ॥ कलि  
 समयागे ॥ जीर्णवधुनरमव्या  
 यनात्मकः ॥ स्या ॥ गगनिथा ॥ ग ॥ अहृष्ट ॥ गत्यविद्वः ॥ सुवर्णलोहयकानविद्वसति ॥ इष्टुम्बिधवाना  
 कुरुयागे ॥ गोषधकीयानिपूना ॥ गित्यगुकिगाम ॥ मधविवाधिसानशमतिमान ॥ सुसुपिययधन  
 ॥ सवगुक्तुगयासुमार्गगया ॥ पूजगणपधनागनिकक्तुः ॥ पनयवति ॥ ग ॥ फल ॥ ॥ गगद्वगश्याश्च



















॥ ५ ॥

वधेन लम्भी नरुवनीदसर्वे सख्येन ॥ विकला सतमिदुः श्याकृनिस्तथा वृद्ध इह मासुते ॥ ज्ञातृम्रावहृदः वि  
 माता पितृत्यां सदेव संसृज ॥ रुवकिनया रूपकविः कृजन्तुगुल्लो गवाकं थ ॥ पृद्ध अगलाः समर्थे पत्रविदुह न  
 पत्रायता धीन भयिगुणः स्वलथ प्रकृषः शनिगणि कृज जीवदिव ॥ ॥ मानार्थे विरुवहीना मलिना वानः प  
 राज नास्ति न ॥ पथ लिपकः ॥ स्यादिन गणिगुल्लो गनिरोमे ॥ यत्कृत्वा वद्विरुवानुपसविदा ॥ पुनायको य  
 स्यात् ॥ रश्मिगुरुकीलियुता वृद्ध नृपविज्ञा  
 उग्रः पत्राणो जीव वृद्ध नृगुल्लो गनिरोमे ॥ यत्कृत्वा वद्विरुवानुपसविदा ॥ पुनायको य  
 स्यात् ॥ रश्मिगुरुकीलियुता वृद्ध नृपविज्ञा  
 उग्रः पत्राणो जीव वृद्ध नृगुल्लो गनिरोमे ॥ यत्कृत्वा वद्विरुवानुपसविदा ॥ पुनायको य  
 स्यात् ॥ रश्मिगुरुकीलियुता वृद्ध नृपविज्ञा

नवीं शुक्रगणितनये ॥ विलयन्तु पाठपातन सायनपदः पूमा रुवति ॥ परिः पसिद्धकर्मा क्रिमिसुगनविज्ञीव  
 सितसोय ॥ बहूसासु ज्ञानपदमिहहिः समीता गुह्योय ॥ धर्मोपनः काकनिकः स्यासितं शुक्रवृधजीव ॥  
 साधुकलमपदीनाविश्याधनसहसोश्चसम्यन्न ॥ वधेहिमा बहूमिशव ॥ इदं कुरुजीवरुगुपूज ॥ तिमिरामपि  
 दमिदः पना नमरिपावतसदाहीन ॥ मलिनपतिवधूवर्गं ऊरुकिरुगुजीवहिमकोनली ॥ बहूशकृमि  
 पदः पनार्थहितकुरुवद्विगतगील ॥ एकस्मिन्लिमानिवूधेयुऊरुगुक्रशुक्रनविपूज ॥ यश्चोम  
 र्वेः क्रीदामलिनावाशानिदुरुग्याविक  
 नृपातेमन्त्रिपतिसमागणनाथः सर्व  
 ॥ गतमस्कः साभ्राह्मनाज्ञामगिवल्ललाविगत ॥ क ॥ निडाउयादमिदः ऊरुवृधगुक्रशुक्रनविपूज ॥ सागाव  
 ल्यापयग्रहयागा ॥ य ॥ ॐ ॥ विशाधनधर्मोपन कामावहगवहूराषकाविहृषमनि ॥ एकरुवनायापलि  
 वृधपुनयागगुरुगुक्र ॥ दागावपनकर्मोपन शलस्वरावेविशुद्धसथधनमगविरुनाक्षसो ॥ गनविदुवृधगुक्र  
 पूर्वमादुगुक्र







५  
८४

क्रिदिता कर्तृपूजा वृद्धमायुः सशरीरी ॥ एकवर्गाय स्यात्सती कुर्वन्निगमय समवसानं ॥ रुवन्निगमनथाह  
रुवता न विन्दुशाम नृशरी वरा गेव ॥ गंगा कला मा रोगा क्रिद ॥ ५५ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
रुवदमीरिः सहितनवावति सिग नृशरी वा क्रिद ॥ ५६ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
इपूरा सिग राखन नन्दन शुभम ॥ ५७ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
ऊरुगशि शुके शुभ शीम ऊरु शुभ ॥ ५८ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
नकर्तृपेतिर्दधति गीवि वली कस्तूरपास ॥ ५९ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
वसुक्रम ॥ ६० ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
पूजः गंगा कला मा लज्जवन्तु रोग ॥ ६१ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
नृशरी वरा गेव ॥ ६२ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
गेव गेव नवा सिग राखन ॥ ६३ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥

हृयेह ॥ ६४ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ६५ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ६६ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ६७ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ६८ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ६९ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७० ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७१ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७२ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७३ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७४ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७५ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७६ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७७ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७८ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ७९ ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥  
॥ ८० ॥ राखने कुञ्जस्य शक्ति सिद्धसमुद ॥



५  
६  
६७

सुःपश्च निवृत्तशुद्धासु ध्येवार्थः ॥ उक्ताः शेषा यदुक्तं पतिदीक्षा विपक्षः ॥ ५॥ चक्रं गते सवेदनाधिपतिनिवि  
क्रियायस्य भिन्नं गते सुधेवार्थः ॥ दीक्षा कस्यावस्यं रुवतिदय नानेः काधिर ॥ अग्नीनाम्य विवाह का गिविनदि  
निवागमतायसम्यग्ना नानवत्यनागप पतं रुका उमाया श्याभा गायतिरुयनीवन निपमिमांश ज्ञातिथि कथेना  
कोमात्रवद विनामा धियातिरु साधये राक्षसः ॥ ६॥ द्वावकार स्म धूलि धवलाः सधव न पस्मिणी वाहाः पापु दन्त  
वमनियमिनी रुका शनिमज्जिनः ॥ सिद्धा कश्चल सामना निनिमताः कापालिका नां वनाः ॥ कृष्ण नाय  
क गजकः ॥ ७॥ धनः संख्या म्थानि फति ॥ उपासका पृष्ठ समाधुयज्ञाः ॥ गिरवा म्थिनाया धुन रिकवथ  
थ ॥ सधो ससाव रुपा धि न लिथ्याः पुरुः सदिर्षा किं किं ॥ पकी लिङ्गः ॥ आशी विनी कुरु कि मां समथा धि  
काथ थदि किं सुन रुगः ॥ स्वलू गा रु अथ ॥ कश्मपून विमिनासन था थयू का रुषां गभा कृतन था धि पति नियुक्त ॥ ८॥  
५॥ कलि मधे वाय रु निमन था ॥ ९॥ ८॥ कारवा या म्थवा वा न पुरु म्थो गताः ॥ रुलेय था लिङ्ग थ सुमि रुव ॥ गारु रुका  
उदि किना नियमिनः ॥ सधु क्क वथ ज्ञा रुषा दणु यतिः ॥ सधु स विवलि थेष था म्थान गौ का ॥ आसा पण यज्ञ दीक्षा

पथनियमवसंयुक्तः ॥ वेङ्क ववन कानामपि नर्षा नताय कि लिङ्गः ॥ शुक्र ॥ पा पणु वन निवता दि गखना ॥ स्वत रि  
रुवाथ व ॥ नर्षा मपिय निर कि शाव कनाल धिन थ इरु पस ॥ १॥ पका धिरु म्थिया ग्ना ना रुथा ग्ना या दि स्या द शुल  
रुल विपक्षी सर्व सुदुल्य प थान ॥ रुन पति धृ थि दृ शी दी कि र सा फ गी लं यण नठ पणि थारि थो थ पादा रुयू म्थ ॥  
साना वलां यव यव थ थाय ॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥  
लिना रुषां दार्णिं थ दि रुव वळ ॥ नौ कु ठक्क रु काम क थृ क्क रु क व रुदा मनि पा म्थ ॥ १॥ वीना सभा रु  
मूषना वा पिरुल सन सम उव कानि ॥ मा ला स पा दि नु क दा व गदा विरु द्ध था पा थ ॥ २॥ यग ग क ठ थ  
लप रु ग क्रिय वान थ म्थाल ॥ सवना वन थ रुग ना था जे व नोः ॥ पकी लिङ्ग थु ग व ॥ ३॥ आस य रु ना त्या रु  
मलि न्क मूष लरु क्क नव था गान ॥ ४॥ गलयू ग थूल क दा ना र्था ॥ पा ग थु दा मनि वि ॥ ५॥ सधे र्ग संख्या र्था ॥ ६॥ द्वा व थो  
॥ सम दृष्टा ॥ ७॥ द्वा व दल था ग स रु रु रु क्क माल पु ना थ व णा क्क ॥ ८॥ आरु मि रुा कि वि स निर पथेः ॥ का धि ना थ सा वि ॥ ९॥  
आश य था गे रुा गारु मि पतिः ॥ सी र्वा ला रु गु ण य रु ॥ १०॥ म्थान मि थि ना रु वि रु ला ॥ ११॥ रु स रु था ॥ १२॥ न रु थि से























निरुध्वं ३४॥ सखि नमो विदुः ललितां सुरगोपराधिकां वदुः ॥ वापसुमि रुरां रुरां वदुः कथां निरुध्वं ॥  
 ७॥ प्रियवादिने सुवादि वदुः सखि वादिने सोम्यं ॥ मरुति नमो नृपपूरुषं नयति सोम्यं किं ॥ गगि धनवी ॥ ४॥  
 नृदृष्टि ॥ ५॥ ६॥ ७॥ नीमिः ॥ गीतलीकः ॥ पृथलनलशिवाः सर्वे धर्माय संवदी सखाता ल्या वा धामदन  
 ८॥ रुययगानि पृथुपात्मा कुलकुं ॥ वावे ॥ कामद ॥ गुरुयवतिनः ॥ सखि ॥ ३४॥ मन्थात्मा ॥ ३४॥  
 वे ॥ गगिनिमकन गदिध्वं ॥ ३४॥ निवर्ध  
 मकथ कुविगिवाथे ॥ ३४॥ ल्यामनिनिनी  
 नमः ॥ गपूरुषं ॥ वाहनयुक्तयवर्धका  
 लमृ ॥ गति ॥ ३४॥ रुनतिवृ ॥ धनदृष्टः ॥ सखि ॥ ३४॥ नि धनं पूरुषं ॥ ३४॥ रुपनिमनषमवीयं नृपतिगुणसमधि  
 मृ ॥ गपूरुषं ॥ वाहनयुक्तयवर्धका  
 नमः ॥ गति ॥ ३४॥ रुनतिवृ ॥ धनदृष्टः ॥ सखि ॥ ३४॥ नि धनं पूरुषं ॥ ३४॥ रुपनिमनषमवीयं नृपतिगुणसमधि

३४॥ प्रियवादिने सुवादि वदुः सखि वादिने सोम्यं ॥ मरुति नमो नृपपूरुषं नयति सोम्यं किं ॥ गगि धनवी ॥ ४॥  
 नृदृष्टि ॥ ५॥ ६॥ ७॥ नीमिः ॥ गीतलीकः ॥ पृथलनलशिवाः सर्वे धर्माय संवदी सखाता ल्या वा धामदन  
 ८॥ रुययगानि पृथुपात्मा कुलकुं ॥ वावे ॥ कामद ॥ गुरुयवतिनः ॥ सखि ॥ ३४॥ मन्थात्मा ॥ ३४॥  
 वे ॥ गगिनिमकन गदिध्वं ॥ ३४॥ निवर्ध  
 मकथ कुविगिवाथे ॥ ३४॥ ल्यामनिनिनी  
 नमः ॥ गपूरुषं ॥ वाहनयुक्तयवर्धका  
 लमृ ॥ गति ॥ ३४॥ रुनतिवृ ॥ धनदृष्टः ॥ सखि ॥ ३४॥ नि धनं पूरुषं ॥ ३४॥ रुपनिमनषमवीयं नृपतिगुणसमधि  
 मृ ॥ गपूरुषं ॥ वाहनयुक्तयवर्धका  
 नमः ॥ गति ॥ ३४॥ रुनतिवृ ॥ धनदृष्टः ॥ सखि ॥ ३४॥ नि धनं पूरुषं ॥ ३४॥ रुपनिमनषमवीयं नृपतिगुणसमधि







[illegible]

श्रीमतेः स्वर्गनेत्रसंयुतशृणु ॥ आकलवनादिवाविमिंरुक्रमतनपिदृष्टं ॥ मातुर्नशुक्रामतिमात्कपि  
 नशानिचक्रथावियलकीर्तिः ॥ कशानिरुवनंरामशशिनादृष्टंनार्थं ॥ वंशील्यल्लालदृष्टकायकला  
 लम्यादीविषमशील ॥ पश्चमरुवनंरामवृषनष्टतिनियनशृ ॥ रुपनिसमिपचक्रविद्यावाशिविवद्वव  
 द्विशृ ॥ लवनिसममिंरुक्रमगुरुणादृष्टवमनार्थं ॥ विविपम्यशंगयनशृगुरुगमनिष्यथोवमाहृष्टं  
 लयगृहचक्रसिगनदृष्टरुधक्काग ॥ दृष्टकाशानिःस्वःयववशृक्रमणशीलवान्मुखी ॥ दि  
 नकनवाशोकधीनदिनकनतनयनस  
 विवनदृष्टीवलवृष्टुवार्सं ॥ सनगुरुवनःरामःकनातिनविवीक्षितःकन ॥ विकर्तकलकयाय  
 पार्श्वकधिरःकनातिशशिदृष्ट ॥ विद्वान्शृगुरुवननृपतिविकर्तसदापकर्षं ॥ मधाविनैरनियुक्तं  
 शील्योवाशान्वृषनसदृष्ट ॥ गुरुवननक्रिकितनयःकनातिविद्वान्ममत्यन ॥ सकलनसधनहिन



[illegible]

॥ श्रीगुरुद्विष्टः वधवान् ॥ ॐ ॥ वादिगुणैः सम्यग्नेयं नवकारुण्यं संज्ञं ॥ सत्त्वामर्षभयर्कः ॥ यग  
 कविश्चातकमाचि ॥ गुरुस्त्री बहूशक बहूपाथैः क्रोधादिनशानि ॥ चण्डागणनाथकीयाणजीवेत्यरुपः  
 ॥ यानविशालगंभीरः सनदितावाच्यरुकिमानकान् ॥ सरुगः स्वयननियतः सधशरुषी ॥ धनाद्य  
 थ ॥ सद्वसुधपयगाविषिष्टवाञ्छतिगुणानयत्न ॥ वृषरुस्त्रिधाविनातोषत्यद्या ॥ मसुकोशल  
 क ॥ आदिनधनः समधविज्ञानवि ॥ गदैरुदः सूनय ॥ वाग्मीशकिष्ठा निपुणः सईम  
 शालश्च ॥ माग्गुकवृत्तनामधु ॥ नमाङ्गल्यलक्षेयसद ॥ मिथूनस्त्रुदवगुणीक्रिया  
 रतः सत्कविश्चैव ॥ विद्वान्सरुपदरुः प्राङ्ग ॥ प्रियधर्मासत्सरावश्च ॥ समददलोपसस्त्रिपुल  
 नध्याकानवर्ग ॥ सत्यसमाधिरुपयुक्तः स्त्रिवास्थदालाकसत्कृतः ॥ रद्यात ॥ नृपतिः शीवः शशि  
 रुविशिष्टकर्मासुहृत् ॥ नानवत ॥ स्त्रिवदेरसावधीनः स्ववहर्मेहः ॥ सुहृत् ॥ नाविद्वान् ॥ आनः







अ  
उ  
६८

नैलविक्रमाहसिदीमकेगुनेवसिद्धेव॥ अथमिहापयलिदशगुरुः सोनसंदृष्टवेषां लामगुहृद्वि  
॥६८॥ ॥ द्विपदवकुधदरुमिधेठानमृत्वा द्यम्यायताजमिहपुर्कष ॥ पाऊनरनुसविर्वकनातिरुशक्ति  
भाजीव ॥ अतिधनमतिचमधुनननिदयितेपियप्रयवतिना ॥ अत्ययकामेगंअकृद्विदशगुवीकि  
रःशशिनी ॥ दयितेवाललिनीपाऊनसुधधनसमृद्धे ॥ अथ ॥ विननरनुपुर्कषेकथयतिकपियाऊस  
दृष्ट ॥ पाऊवकुधगुरुगंविहवाविह  
दिदधविक्रिताजीव ॥ अतिललिन  
नवसवप्रथगुरुगुवीकिभाजीव ॥ पाऊवहधनधर्ममहदुर्गामनगरयूरुपाणी ॥ मलिनमकृप  
मरायकुरुगसोपाकिभाजीव ॥ मिहृद्विष्ट ॥ ६८॥ ॥ आर्ययामयष्टेकृद्विचिनयानपुणधनयूरु  
॥ कीशकनदृष्टमृतिमिहृद्विष्टगुरुमानवैअकुरु ॥ वद्विष्टकुरुकुरुवसमन्दमाहवहमलधन्य ॥ सूरव  
यवतिप्रययैवर्कसुनयतिगुरुनूपमवधरु ॥ समनमकलवविष्टयविकुरुगापहमाविष्टकुरु

॥ धनपिसुतकिरुद्विष्टगुरुःसमार्कलाक ॥ अकुरुशानिषकृपलेवहसकदानः ॥ विद्वद्वनथ ॥ अति  
सुयविकुरुवायैवधरुसोम्याकिनामार्थ ॥ दवपासादानां दय्याष्टेवदानाकुरुवद्विष्टयपुर्ननाविणीकुरु  
नेगुरुकिनाजीव ॥ शिपीपुनराष्टाणीपुनरागमयपुनानाथ ॥ अनयतिगनिनादृष्टःसवसुआवीनव  
वधरु ॥ वधरुवणदृष्ट ॥ ६८॥ ॥ नविदृष्टःशगिरुवणविश्यागमथाशगंसमरुनो ॥ सूरवधनदान  
विहनेपववाडागुशंकुरु ॥ अत्यक  
पुण्डनयतिशगिरुगुरुहिमगुहृष्ट  
सुवणगार्कुरुगजनिविष्टिःअकुरु  
पं ॥ अनयतिवधनदृष्टःपुल्यविकमानिनीव ॥ बहुदाम्बहृमिहविहवनानीलकातरुगिनेसुपिर्गि  
हृगुनयमृतिदृष्टिमृति ॥ गुरुगंयूरुगुरुकुरु ॥ वध ॥ सोवणदृष्टिमृतिमदकुरुगामसंनयनगवण ॥  
वावाटलवहविहववांकेलागशनयन ॥ कुरुदृष्ट ॥ ६८॥ ॥ लोकदयितेव्यानेसगाथनपकि











[illegible]

लंकुपकयं ॥ पतिः मदनमधनं श्रीं मित्रिदग्वासिनं कुडं ॥ राधापुत्रविहिनं जनयति कृष्णं  
 सत्वष्ट ॥ नक्षत्रिकामलसमधनं श्रीकर्मकान्मलीमसर्दानं ॥ जनयति कृष्णं नक्षत्रादिनकान्मलीम  
 सिकः सोन ॥ यामपुनश्चिणीनाम्ननागमाद्यष्टपुत्रवत् ॥ १५ ॥ गुरुदृष्टः पत्युपित ॥ नयति सोन  
 : सशील ॥ यवकिद्वयमकान्मधनं सवरागिनवनसमृद्ध ॥ शुक्रिद्विद्वज्जुक्तकान्मलीमशुद्धनविस  
 कः स्वक ॥ नविष्टुद्विष्ट ॥ १६ ॥  
 पश्यलरुगनामृत्थारिष्टपूजा  
 जनयति शशिना दृष्ट ॥ राधास  
 नक्षत्र ॥ कुडं निद्रिगशीली ॥ जनयति लोभक्रि ॥ सोन ॥ जनयति मुकुरुवणल्लानुपकिनृपसम्भक्त  
 वारं ॥ मान्यद्वनिनसोम्यं सुरुगं सोम्यक्रि ॥ सोन ॥ नृपकिनृपदुल्यम्भामनि ॥ मथनायवष्ट  
 सनाया ॥ जनयति गुरुणा दृष्ट ॥ सुधापद्विद्वि सोन ॥ ऊकुरुद्विमाह पिहकं विपत्याष्टनन



न  
दि  
१०२

नविविषशीलः। ननयहिसितनदृष्टानविकनयः कर्मसंपन्नः॥ जीवगृहदृष्टिः॥ ६३ ॥ शशिधम  
 कृपलायम्यनान्नरागीमतिवदः स्वमहः॥ अष्टवेनवर्तमानसदं ननयहिसि शक्तिः स्वगृहः॥ वप  
 लसमृत्पापनाशुवानष्टयौयान्तरार्धः॥ उत्पन्नमदः स्वदः शक्तिवर्तुक्तिः शीतः॥ अलीश्वरं  
 विकानं विकानं गुणमाहात्म्यं यत्नं॥ शक्तिमाहसनियतं पुनर्विकक्तिः शीतः॥ रागवदोत्तमसि  
 कीसारुवनवित्तमल्लविद्याथः॥ विविधं शुद्धमनिनगाथनयति वृद्धविकक्तिः शीतः॥  
 समुत्तिगुणं नृपयवंगक  
 शीतस्वगृहः॥ विधनं पददानवर्गं सरुर्गं सवित्तं विकृवन्तः॥ उत्पन्नपानरुर्गं ननयहिसि शु  
 कक्तिः शीतः॥ स्वगृहदृष्टिः शनं श्वयवानः॥ सायावर्त्तौ वासिस्वरावविन्तः॥ ६४ ॥ मृथादे  
 यपदाथो नयनसर्वजकुनी॥ कर्मदमधुनी यत्नः सवाधाय विविधं नः॥ लक्ष्म्यं कविकिपास  
 नमः॥ काटिपुत्रं ननगाभी निलावनकर्तुं॥ कर्कटसकनः॥ सवाधमीनिद्युर्गं॥ श्वापकः॥ शशिः॥

रुक्मिथसकिमिनः सिंह निशादः यमाद्याविशः॥ पदगाविष्टनयनाजगत्सु लायीकृवन्तः॥ द्विपदचतुष्टय  
 दूराभिविनष्टविकृवादिमोक्षः॥ नृपवीरसपिणसायः कृष्टव्यं व्यादवोपकर्षः॥ विकाभावलसूक्त  
 विषनष्टमहजगत्कियं गच्छतः॥ पितृगृहं धननासकपारुवतिनवजगत्पसविचः॥ सुखसूक्तविलवि  
 हिनः॥ काननानेविडगं सवकं श्वपलः॥ मध्याविधनवदिकस्वत्यायपधूमस्वः॥ युववमनादमा  
 शिर्वेलवापष्टसमाधिभरानी॥ श्रामान्विद्यातगुणी नृपकिवादपुनगावा॥ निशीक  
 ः पतिरुक्तसविभाधाधितः पूः  
 श्रीः॥ विकलनयनः॥ कुवन्तः  
 पस्वकिगकनविनरुसकृष्टः॥ धनयुक्तमिजरागीदिकृदवकाष्टमकिरुक्तः॥ पितृयापि  
 नवमं कषयेनसहस्रः॥ श्वापः॥ अकिरकिमतिविकृववला धनवाहनयुक्तवान् सः॥ सिद्धांतं  
 नः॥ कुर्वीदगमः॥ यसस्यः॥ शश्वयनिनगावलवान् द्वयः॥ यथाविष्येयस्यः॥ यका







निधयः पञ्चासी स्वाविपलरागी ॥ १ ॥ पञ्चादश गोव ॥ २ ॥ पञ्चादश काया जायक पञ्च ॥ ३ ॥ स गृहीत  
 वाद्यमूलसम्य विरुक्वादिन ॥ ४ ॥ अथ यगः कर्माणि सीमाः यकषदिने नृगं ग ॥ ५ ॥ वपराव ॥ ६ ॥ ॥  
 ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥  
 ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥  
 ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ ॥

लो गवान जीव ॥ १॥ इव पिठ काय रगा विद्वान्मखरा युवति नानवम ॥ १॥ नृपमलि भगवा जीव रश्मि  
 ॥ २॥ यधान य ॥ सिद्धा ॥ ३॥ गोत्र सत्य प्रः सकल गल समृद्धि ॥ ४॥ दगमरु जित गुणोत्तम धन वा  
 रुन गुणय सा रान ॥ ५॥ अथ मिताय द्वा वा वरुवा रुन रुत्ये सु पूरः सा ॥ ६॥ अकादश गज जीवन वा नि  
 विज्ञान वा तिसर ॥ ७॥ अल सा ला क इ ध्या ह ध ग न पाये करुण य का वा ॥ ८॥ पतिरुः भवानि र गा द्वा द  
 ग संरु गुणोत्तम ॥ ९॥ गुण राव ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥ ॥ १०१॥ ॥ १०२॥ ॥ १०३॥ ॥ १०४॥ ॥ १०५॥ ॥ १०६॥ ॥ १०७॥ ॥ १०८॥ ॥ १०९॥ ॥ ११०॥ ॥ १११॥ ॥ ११२॥ ॥ ११३॥ ॥ ११४॥ ॥ ११५॥ ॥ ११६॥ ॥ ११७॥ ॥ ११८॥ ॥ ११९॥ ॥ १२०॥ ॥ १२१॥ ॥ १२२॥ ॥ १२३॥ ॥ १२४॥ ॥ १२५॥ ॥ १२६॥ ॥ १२७॥ ॥ १२८॥ ॥ १२९॥ ॥ १३०॥ ॥ १३१॥ ॥ १३२॥ ॥ १३३॥ ॥ १३४॥ ॥ १३५॥ ॥ १३६॥ ॥ १३७॥ ॥ १३८॥ ॥ १३९॥ ॥ १४०॥ ॥ १४१॥ ॥ १४२॥ ॥ १४३॥ ॥ १४४॥ ॥ १४५॥ ॥ १४६॥ ॥ १४७॥ ॥ १४८॥ ॥ १४९॥ ॥ १५०॥ ॥ १५१॥ ॥ १५२॥ ॥ १५३॥ ॥ १५४॥ ॥ १५५॥ ॥ १५६॥ ॥ १५७॥ ॥ १५८॥ ॥ १५९॥ ॥ १६०॥ ॥ १६१॥ ॥ १६२॥ ॥ १६३॥ ॥ १६४॥ ॥ १६५॥ ॥ १६६॥ ॥ १६७॥ ॥ १६८॥ ॥ १६९॥ ॥ १७०॥ ॥ १७१॥ ॥ १७२॥ ॥ १७३॥ ॥ १७४॥ ॥ १७५॥ ॥ १७६॥ ॥ १७७॥ ॥ १७८॥ ॥ १७९॥ ॥ १८०॥ ॥ १८१॥ ॥ १८२॥ ॥ १८३॥ ॥ १८४॥ ॥ १८५॥ ॥ १८६॥ ॥ १८७॥ ॥ १८८॥ ॥ १८९॥ ॥ १९०॥ ॥ १९१॥ ॥ १९२॥ ॥ १९३॥ ॥ १९४॥ ॥ १९५॥ ॥ १९६॥ ॥ १९७॥ ॥ १९८॥ ॥ १९९॥ ॥ २००॥ ॥ २०१॥ ॥ २०२॥ ॥ २०३॥ ॥ २०४॥ ॥ २०५॥ ॥ २०६॥ ॥ २०७॥ ॥ २०८॥ ॥ २०९॥ ॥ २१०॥ ॥ २११॥ ॥ २१२॥ ॥ २१३॥ ॥ २१४॥ ॥ २१५॥ ॥ २१६॥ ॥ २१७॥ ॥ २१८॥ ॥ २१९॥ ॥ २२०॥ ॥ २२१॥ ॥ २२२॥ ॥ २२३॥ ॥ २२४॥ ॥ २२५॥ ॥ २२६॥ ॥ २२७॥ ॥ २२८॥ ॥ २२९॥ ॥ २३०॥ ॥ २३१॥ ॥ २३२॥ ॥ २३३॥ ॥ २३४॥ ॥ २३५॥ ॥ २३६॥ ॥ २३७॥ ॥ २३८॥ ॥ २३९॥ ॥ २४०॥ ॥ २४१॥ ॥ २४२॥ ॥ २४३॥ ॥ २४४॥ ॥ २४५॥ ॥ २४६॥ ॥ २४७॥ ॥ २४८॥ ॥ २४९॥ ॥ २५०॥ ॥ २५१॥ ॥ २५२॥ ॥ २५३॥ ॥ २५४॥ ॥ २५५॥ ॥ २५६॥ ॥ २५७॥ ॥ २५८॥ ॥ २५९॥ ॥ २६०॥ ॥ २६१॥ ॥ २६२॥ ॥ २६३॥ ॥ २६४॥ ॥ २६५॥ ॥ २६६॥ ॥ २६७॥ ॥ २६८॥ ॥ २६९॥ ॥ २७०॥ ॥ २७१॥ ॥ २७२॥ ॥ २७३॥ ॥ २७४॥ ॥ २७५॥ ॥ २७६॥ ॥ २७७॥ ॥ २७८॥ ॥ २७९॥ ॥ २८०॥ ॥ २८१॥ ॥ २८२॥ ॥ २८३॥ ॥ २८४॥ ॥ २८५॥ ॥ २८६॥ ॥ २८७॥ ॥ २८८॥ ॥ २८९॥ ॥ २९०॥ ॥ २९१॥ ॥ २९२॥ ॥ २९३॥ ॥ २९४॥ ॥ २९५॥ ॥ २९६॥ ॥ २९७॥ ॥ २९८॥ ॥ २९९॥ ॥ ३००॥ ॥ ३०१॥ ॥ ३०२॥ ॥ ३०३॥ ॥ ३०४॥ ॥ ३०५॥ ॥ ३०६॥ ॥ ३०७॥ ॥ ३०८॥ ॥ ३०९॥ ॥ ३१०॥ ॥ ३११॥ ॥ ३१२॥ ॥ ३१३॥ ॥ ३१४॥ ॥ ३१५॥ ॥ ३१६॥ ॥ ३१७॥ ॥ ३१८॥ ॥ ३१९॥ ॥ ३२०॥ ॥ ३२१॥ ॥ ३२२॥ ॥ ३२३॥ ॥ ३२४॥ ॥ ३२५॥ ॥ ३२६॥ ॥ ३२७॥ ॥ ३२८॥ ॥ ३२९॥ ॥ ३३०॥ ॥ ३३१॥ ॥ ३३२॥ ॥ ३३३॥ ॥ ३३४॥ ॥ ३३५॥ ॥ ३३६॥ ॥ ३३७॥ ॥ ३३८॥ ॥ ३३९॥ ॥ ३४०॥ ॥ ३४१॥ ॥ ३४२







अ  
रु  
१०८

यथा ॥ वैकुण्ठसुखार्थं ॥ स्वययाडाउर्थं स्वपुविष्णुप्रशनी सगिनसकनमायादि धसिधस्वपुरु  
लपिमावका ग२२ लदिविकैलोघादि सषगुण७० गनराग२२ लदिविक लाशनी धनस्वपुसर्गेने इतसा  
षयनर्थगाव यंद धनश्रवसाकेन सपुश्रवसायायशनी ॥ रुकिश्री धवधवअनकमन स्वययादिके  
गीगनराग२२ लदिविकानयाय गेन स्वपुरुलसरागकायशनी ॥ धर्गेन स्वय रुकिसिद्धि ॥ वनरुकि  
शरुपुत्रु किनयायमालस्व गु णर्न रागनी आयनी गेननी स्वययाकर्माथी शनी ॥  
वनरुजसपुसराग२२ लदिनव रुकि सथाय गेन ॥ धर्गेन रुकि शसिद्धि ॥ धर्गेन  
रुद्व्यासिद्धि ॥ मिथि नरुग थाग शयायमाल मिथी शयाथी गेन गमाकाय लदिव्याय  
मालस्व ॥ धनराग सठिकर्मथर्थ ॥ स्वययादिनयरागकायड कारकालिक शपपनिधय  
शनी ॥ आदिगवानय सामवाकडा धथीरुद्वनसा आदिगवानया वावाहृद्वनसा आदिगवानका

श्रुया डयवलाश्रवस दिनमानडा राजिईडा नापैमूडाव ॐष्टघटिनगंडाव पनषष्टि७० गुणयंडाव  
पनषष्टगुण७० याडाव निश्रानयाडगेशनी धिसषगुण७० शयायशनी डायरुया रुकिनगुण धैथन  
धैथ काधनकाथगुण काथूसषयनर्थगाव राग२१०० लदिविकुकि सषगुण७० गनराग२१००  
लदिनिगेन रुसुथासन गतकालिकसिद्धि ॥ डयवलाश्रवस दिनमानस राजिईनगंडाव ॐष्टघटि  
नयायाव गुणनी रागनी रुथया र्थे लदिनरुसुथायावसिद्धि ॥ संश्रयवलाश  
वसा ॐष्टघटिन राजिईसथाया व थायमद्वाकाले कालायायाव सषस गुणनी रा  
गनी रुथया र्थे लदिविकान रुसुथायावसिद्धि ॥ डैयैगैवलोश्रवसे नोकिईसे ॐष्ट  
घैटिने रुद्वकाथथीपुडन सामवानसवलाश्रयशनी ॥ डययश्रवलाश्रवसा राजिईस ॐष्टघ  
टिनयायाव षष्टि७० गुण पनषष्टगुण ॥ धानिधानयाडगेशनी स्वनगरुयाश्रयशनी डायरु



म  
१०१

यादृक्किन गुणयायशर्मा निरुसडं काथुनं वृत्तन १००० र्थगाव धिसराग २१०० लद्विघटि सप्तगुण १०००  
नराग २१०० लद्विघटि साधुयन १००० र्थगाव रुसगंडाव गानकालिक सिद्धि १॥ उपवलाशरसा ०००  
अनार्षमडाव गुणर्मा रागर्मा रुथया ००० र्थगाव लदिनरुसगंडा सिद्धि ॥ ॥ संधायशरसा दिनमानडा  
रादिद्विअ नार्षमडाव धिस ००० रुनगंडाव गुणर्मा रागर्मा रुथया ००० र्थगाव लदिनरुसगंडा सिद्धि ॥  
सामवाययाथ ००० र्थगाव ॥ आदि गवाननरुसगंडा लोका सामवायनवदरुसगंडा लोका ०००  
पुष्पयनरुसगंडा ॥ ० ॥ रुथय  
यवलाशरसा दिनमानसरादिद्वेन गंडाव धिसरुनगंडाव निधानयाडगयाव धिसगुण १००० रुथयाशरसा  
गंडाशरयाडुकिन गुणयाय घटिनघटि विकलानदिकला विकला वृत्तन १००० र्थगाव राग १०० ल  
द्विघटि सप्तगुण १०० पुनराग १०० लद्विघटि विकला लद्विसडगसा वृत्तन १०० र्थगाव रुसगंडायाव सिद्धि ॥

उपवलाशरसा दिनमानसरादिद्वेन गंडाव ००० रुनथायाव रागर्मा गुणर्मा पूर्ववदुशर्मा लदिनरु  
सगंडायाव सिद्धि ॥ ॥ संधायशरसा रादिद्वेस ००० रुनथायाव रागर्मा गुणर्मा पूर्ववदु लदिनरुस  
थायाव सिद्धि ॥ ॥ सामवायया उपवलाशरसा रादिद्वेस ००० रुनथायाव रागर्मा गुणर्मा रुथया  
००० र्थगाव लदिनरुसगंडाव सिद्धि ॥ ॥ ३ उपवलाशरसा रादिद्वेस ००० रुनगंडाव गुणर्मा रागर्मा  
रुथया ००० र्थगाव लदिनरुसगंडाव सिद्धि ॥ ॥ संधायवलाशरसा दिनमानसरादिद्वे  
नगंडाव ००० रुनगंडाव रागर्मा गुणर्मा रुथया ००० र्थगाव लदिनरुसगंडाव सिद्धि ॥ गुरुस  
कलयाडं ००० र्थगाव गानकालिक रागयायशर्मा ॥ गुरुयाशका सडाका लोड विपनि ॥ वक पमरुसगंडाव  
रुथया रुनविपनिगीशर्मा ॥ निधिगक नरुसगंडा आगगक गमाकायशर्मा ॥ ॥ मथवाथथवगव  
रुथ ॥ गुरुगानकालिक रागयाय ॥ ००० रुनगंडाव रुनगंडाव रागयायशर्मा रुसगंडाव रुसगंडाव रुसगंडाव







यत्र रुडय लंकादय वाहिकन लिधूलंकादय नथाय दगाल पविपातिनयास्यं डरुमी आयमइलंका  
 दयनरागकाय थाया लंकादय मडाव लग्नया नागिगहूतसर्गेव ॥ थाया सषस किंगगुण ३० मरु !  
 क्रया कलाविक लार्सीगुण ३० मयनर्थगाव थाय मइलंकादयनराग लद्विर्मंगरुमी सषगुण ७० न  
 राग लद्विघटि रूमी सषगुण १० विकलाननं डरागडनं लद्वि विकलारुमी ॥ धर्मनकासन मंग  
 नलियासन सषन लग्नमईरंन मालख उंनिख डनईरंन रुमी ॥ ०००० घटिमइ  
 ख विकलागसन सषषट्ववृरु रूमी ०००० घटिगुण दगसा मरु कनथाय मडगसा  
 डय मरु लंकादयनराग लद्विदकाननै रुथरुटर्मनं डन लग्नसिद्धि ॥ ॥ घनदिनाईनामि  
 द्वे मरु रुथकर्मनादिनाई नादिई शपपनिथ ०००० ॥ नागकालिक रुथयपीगाव तिथ्याधिक षठसाध  
 षठाधिक षठमं डरु नवाधिक वकीसाध नागिद्विज्ञानसाख गुप्ति नखीज्ञानसा निखणु २ मून

स्वपुसंख्याधूत ॥ श्रीसर्धनममाल ॥ उंश्चस्वपुयाकाधूस्वपुनगुण, स्वर्गमर्ड ॥ धर्म १०० पुनर्धर्म १००  
 पुनर्धर्म ३० ध ॥ २० नर्धमाव, स्वर्गमर्कन, पुनर्धर्मसाधयनधर्म १०० वनदलसिद्धि ॥ सलनडानि ॥ धव  
 नर्धमाव ॥ कृतिर्न ॥ कृत्तियायशर्मा, धसामान्यपति ॥ ॥ विस्ववक्ष्यकालीनी, स्वर्गमर्गधर्मा  
 यनो ॥ १२ धर्मनर्गड, धाषशका धर्मेवर्गकर्मा, धर्मवर्गशर्मा, दिनेमानरादिमानश्रया, अनूष्वाष  
 पुन, अयनीसगुणार्थडकयास राग ३० लद्धिद्वगनयाय धर्माग्ननयाडकया  
 स, स्वयडदयस्वपुन, गुणयाय शर्मा, धिसराग १००० लद्धिउदयस्वपुवूलिन  
 न, पुनडलिवर्धवस्वपुड, स्वपुनगुण, राग १००० लद्धिगुणयाडवूलिसर्ग, गुणनी रागनीड  
 धर्म, मरुस्वपुयड, लद्धिधवधवस्वपुवा, ललिलावर्कधर्मा, समकदमानश्रयादिनमा  
 नयास्य, अयनीगनर्गडादिनमानडवर्गसा, ललनयागनरागकाया, लद्धिगकलडर्गडय



म  
३  
१४

[illegible]

वर्गकायधर्माश्च ॥ लग्नवाय ॥ नक्तकालयुद्ध लग्नरागिस द्विउपनवा यशस्य ॥ ॥ मित्रमित्रविधि ॥ मि  
लोक ॥ गुरुमण्डपिकास्मयगगिरु मित्रानिसवानवभदीप्रास हिमनस्मिजाव सूरिहस्तषासमाधिनज्ज  
जीवाद्भक्तकनअरुस्य स्वहिदी क्षारिणीगर्कीसमा वदिनकरदवावाधस्य स्वहिदा सगुनिसाकना सषास्माक्ष  
या ॥ साम्यगिनवनि रविसुतो मध्वपनत्वयथा ॥ वन्दनन्दुजसोनासाहिक्काअअवध सषासत्वव ॥ ॥ गिन  
यामिजवन्दजीवसमा सषासत्वव ॥ ॥ पुननाककालिकविधि ॥ अग्न्याग्न्याधनयायाय स  
हृदवापावर्धपूषिता ॥ नक्तकालसूरि  
माधियनियाकुरुश्वअनश्व ॥ गहसकलयी दमवर्गया गुरु मित्र उच्च नीच स्वक्षु ॥ मित्रन मित्र  
श्वसा, अधिमि ॥ गुरुनश्वक्ष्वसा, अधिमि ॥ मित्रवा समवाक्ष्वसा, समश्व ॥ समनस्य उदश्व ॥ गुरु  
असमवाक्ष्वसा, नक्तकालिकयमान ॥ मित्रवा, समश्वक्ष्वसा, नक्तकालिकयमान ॥ उच्चनउच्च ॥ निश्चननी







ॐ अथ कानि ॥ ध्वनाश्या ॥ १६ ॥ ध्वनाश्या ॥ १६ ॥

[illegible]

४१ मृगककोटमीनाथ वडुर्थे रुलवागन ॥ सकम वृथिकल्लक कोलाकासमदाहिता ॥  
 लाल्यलाल्यनक्रवायशुभा ॥ ॥ ऊर्मातिथिआदिन डाणाउपाय काहायकीवाय धंधूआदिन ॥ उडा  
 ने ॥ रुमनि ॥ रामनि ॥ सन्ध्या ॥ अमरु ॥ तिथिपत्रकभायथ ॥ ॥ गुरुआदिन दिगवल ॥ लग्नसंगु  
 वृषगुरु ॥ वडुर्थे गगिराजदेव ॥ सकम लानननय दगमन विडुमिरु ॥ लग्नस वृष वृहस्पति  
 वलवर्ग ॥ वडुर्थे स वडु शुक्र वलवर्ग ॥ सकमस गनिश्चर वलवर्ग ॥ दसमस आदिन मंग  
 रवलवर्ग ॥ कविमथ धूतथानस गुरुवर्गया विद्वाद्गसर्वर्ग्य वलदवधर्क ॥  
 लग्नयावलकायशुकाथधुशुभा ॥ कन्यामिथून ऊरुश्र उलग्नवववर्ग नि ॥ लग्नस  
 वलिनाळिया नराकापविकिरिता ॥ गुरुगवधनख्यामि सिहाद्गमसंस्तिता ॥ वडुस्थडाक  
 रागिनी दिगवर्ल समदाहिता ॥ लग्नस धूतवलवर्ग ॥ ॥ ३ ॥ ११ ॥ ११ ॥ धनूयुद्धादिशुभा ॥ व  
 डुर्थे स धूतवलवर्ग ॥ १२ ॥ ३ ॥ १० ॥ धूतकोश्रद्धे अवल उलवागीभाय ॥ सकमसवलवर्ग ॥ ६ का-







[illegible]

द्वादशविमिश्रनाकणिकप्रवर्धनात्स्वादयादिनवल्लारुवन्निशेषा ॥ धूमिलगुरुसराक्षिसवलदव  
 धाय ॥ ३ ॥ ३ ॥ १० ॥ १ ॥ २ ॥ २ ॥ ॥ धूमिलदिनसल्लगुरुसा वलदवधाय ॥ ६ ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥ १ ॥ १२ ॥ लग्न  
 आदिनकालवल्लरुर्ग ॥ ० ॥ लग्नआदिनगुरुसकलयावर्धनं वरुणं गवलसमाफ ॥ ० ॥ दशाक्षकर्म  
 नपति ॥ लग्नार्किर्ग ॥ रतनस्मिना आवतस्थवायग ॥ रतनकन्दुदिसंधिता ॥ रतनदशाशुविदशासु ॥ लग्न  
 स्थय ॥ रतन ॥ धूमिलसक्तिगवलवर्धनानर्थ ॥ रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥ धूमिलदिनदियर्ग ॥  
 कन्दुस ॥ आदित्यवलवर्धन ॥ रतनस ॥ आदि ॥ रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥  
 आदित्यवा ॥ रतनवा ॥ धूमिलवलवर्धन ॥ रतनवा ॥ आदित्यवा ॥ रतनवा ॥ आदित्यवा ॥ रतनवा ॥ आदित्यवा ॥ रतनवा ॥  
 लल्लरुसा ॥ आदित्यवा ॥ रतनवा ॥ धूमिलवलवर्धन ॥ रतनवा ॥ आदित्यवा ॥ रतनवा ॥ आदित्यवा ॥ रतनवा ॥  
 रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥ रतनवलवर्धन ॥



म  
श  
ली  
॥१॥

फसाय ॥ आदित्यवलवनकशरसा पिण्डायकयाव ॥ नव २ तिथि १२ विषया ६ धि २ कुत ६ रु ३ ॥ इय १० ॥ रु  
दगा सहि ॥ स्यादि नाय पिण्डय पिण्ड ॥ सकल वंदन नर्तन मालख ॥ आदिक आदि गुरु सकल वंदन गान  
कालिक गुरु स्थाय धव धव वंदन ॥ स्याद्वनया यशसां थायमद्वाकसा किमनिगिन नर्तन थायासंघ  
पूनकाशरसा वकससा ॥ यथ पूनर्थशरसा सवर्वशरां ॥ धव धव पिण्ड नगुणयाय गानि मंग द्यदि  
विद्यति स ॥ प्यन ३० थं ॥ पूनर्थ १० ॥ पूनर्थ ३० ॥ पूनर्थ १२ थं ननागि मंग द्यदि वि  
द्यति शरां ॥ सष गुरुया थवार्मा धां शरां ॥ धिसवक पुरुष ॥ सवे मद्दे पि वरुथ पुरुष पुरुष  
राम हियं थय रुवणादि ॥ थय आदि नख साय ॥ पापया गिलाक मरिपनायन धारसनां गानिस  
गुरुव मेष मरुपनायन सासन ॥ उगुरुया दगा सडं लागकाय ॥ लदिन आया दगा गवूं यासन पा  
पयाशरसा ॥ गुरु गुरु शय ॥ इमयं गव धनवादगा सर्वथा याव राग पर्व वरु शरां ॥ नापं थं गव

नसावलवननयानगा कय थास ममाल ॥ गुरु गुरु वंदन गुरु सा वं थया दगा सखेन राग ३ काया व  
लदिन वाया दगा ससायाव सष गुण ३० पूनराग ३० सष गुण ३० राग ३० सष गुण ३० पूनराग ३०  
मंग गानयाममाल ॥ यरु मरु रुवदकसनां नीच रुवदकसनां वाया दगा ग मरु मालख ॥ गनिथनवा  
शुकवा निर्म सममाल ॥ पिण्डाययानां निगमाययानां समरां गाययानां थगयं थप्यायममल  
॥ दिगुण रिगुण दका मंगाययान गाकय ॥ सष आययाममाल ॥ गिलाक ॥ नीच  
वर्द्धे शास निहिनवान् नर्थिन पातू ॥ हित्वावक रिपु गुरु गत हीयन स्वादि रागा ॥ स्या  
गकिर्न रुमिष वदल याय गुका क्रिये ॥ पिण्डाय ॥ ० ॥ मरुताल म पिण्डायकाय ॥ स्यादि गुरु  
यां डव रुव रुली पनम डव रुव रुसा आयवर्ष थग ॥ आदित्य यावर्ष १२ ॥ वंद २१ ॥ मंग १२ ॥ वष १२ ॥  
वुरुस्य नि १२ शुक २१ गनिथन २० ॥ थुनया मद्दे धाव नीवायुवर्ष सहन गुरु सकल याव ॥ धव धव



म  
श  
रु  
११४

पनमडुवपिंजय पनमनीवपीपु  
रुशादि ॥  
सु १२  
वृ २२  
म १२  
वृ १२  
रु १२  
गु २१  
गनि २०  
रु २ माग ८  
वृ १२ माग ८  
म १ माग ८  
वृ ८ माग ८  
रु १ माग ८  
गु १० माग ८  
ग १० माग ८

नीवायस वानरुगुण १२ मागनर्गन ॥ थुगुणकावशर्मा ॥ थवधवकाव  
कालिकरूपिनाव थवधवडुव शकनथायशर्मा ॥ थायमडावसा किम  
निवागिनर्गडाव थायशर्मा ॥ थायमडावसागिगुण ३० मीसनर्गन ॥  
पनगुण ८० द्यठिनर्गन ॥ थपिणुनी विकलनी नीववर्षवावरुगु  
ण १२२ मागनर्गडाव थनगुणयाय अपिणुनी विक  
लानी ॥ विकलाषयनथर्ग ८० ॥ थिसरागकाय थवधव  
नीववासिनगाकरव ॥ थनरुयन विंसगुण ३० रोगेनीवेसागिन ॥ पनगुण ८० रागनिवसागि  
न ॥ लदिस ० वृवावरुनदकसाथर्ग ॥ वर्ष मागशर्मा ॥ रागसषडिसगुण ३० विकलानर्गन रनराग  
लदिदिन ॥ सषगुण ८० रनराग लदिद्यठि ॥ सषगुण ८० रनराग लदिविकला ॥ थनयनयनय

हयानंशुषौयर्गडा डायरुयाडवायस रागिनलीकायासन थायासषसिदिवर्ष ८॥ माग दिन द्यठि नि  
द्यठिशर्मा ॥ उवुरुषुशर्मा थथर्गशर्मा ८॥ ० ॥ निवुरुषुशर्मा थथर्ग ॥ थवधवकूपिकाव थस थवध  
वनीवनयाय गुणनी रागना डुवयावाडथर्गख लदिन निवायवर्षसर्गडा कवनननीस ॥ थर्गडाव  
वर्ष माग दिन द्यठि विद्यठि थनसिदिरुर्मा ॥ उवुरुषुशर्मा ॥ डवायसथास्य ॥ नीवुरुषुशर्मा नी  
वायसथास्य वर्षसर्गडा ॥ ॥ पनमात्र शर्मा शयावडममाल थवधव उववर्षनथास्य  
नगाकरव ८॥ पनमनिवुरुशर्मा सप्या यममाल थवधवनीवैवर्षनगाकरव ॥ ॥ गुरु  
रुवयदकसा वृयादभासखन ३ राग सषगुण ३० राग ३ सषगुण ८० राग ३ सषगुण ८० राग  
३ थलदिन डायरुयादगापिकावा रागिद्यठि मंग द्यठि विद्यठि थनथासनशर्मा मीगाययाशक  
ममाल ॥ ॥ गुरुगुरुशवदकसा नीवुरुशवदकसा मईयायमात्र ॥ नीवुरुगुरुकाया मईयायमा



सनीं कृत्वा ननु क्व थ मायुष्यमात्रका ॥ इधुपि पुनरुयाश्च कामलख ॥ शुक्र शनिश्चर निरुसमाल  
 वक्रसनीं कृत्वा सनीं ॥ मन्त्रालपि पुनरुयाश्च कामल ॥ ० ॥ नीधमायुष्यमात्रका ॥ वन्दवलवक्ररुसनीं ॥  
 एक ॥ द्वा ॥ नव ॥ विंशति ॥ २० ॥ ४० ॥ ६० ॥ ८० ॥ १०० ॥ १२० ॥ १४० ॥ १६० ॥ १८० ॥ २०० ॥ २२० ॥ २४० ॥ २६० ॥ २८० ॥ ३०० ॥  
 कनया कर्मसावर्षायुष्यमात्रका ॥ निगमायुष्यमात्रका ॥ वन्दमादिनशरुसकलयाव मातकालि  
 कद्रुतिरुसनीं ॥ धिसुथवथकडवन यायाव यायमदाकसावकननैशव थाय ॥  
 यायाव सवनकाश्चरसा वक्रसथा य ॥ वनकोथैश्चरसा सगर्वरुसनीं ॥ डालिव थ  
 थवथपि पुनरुयाश्च कामल ॥ सागि मंग द्यति विद्यति धुपिर्दुगुणयाय ॥ पुनयाडाव थैर्न वयन  
 १०० पुनर्थैर्न १०० पुनर्थैर्न ३० पुनर्थैर्न १२ थननवर्ष माग दिन द्यतिरुसनीं ॥ मध्यनिवकापुनर ग  
 कुरुसर्वयदकसा विरुग ३ लद्विडयादधर्मा यासनरुसनीं ॥ विरुग ३ मंगमात्रकायाममा  
 र विवलावाय

लरुसनीं ॥ गुरुमरुशवदकसा डयावर्षस यायमाल ॥ नीधरुसनीं कर्दुयायमाल ॥ शुक्रशनिश्चरनिरुसमाल  
 सममाल ॥ पिपुयवर्ष निगमायुष्यमात्रका ॥ ० ॥ मंगमायुष्यमात्रका ॥ लगमादिनशरुसकल  
 याव थवथवताकालिकद्रुतिरुसनीं ॥ उवनथायमाल सागि विंशगुण ३० मंगननैर्न पुनषति  
 गुण १० द्यतिननैर्न ३० थिसरुग २०० लद्विसवावहयुणैरुनदकसा वाय सषमागिरुसनीं न  
 सनरुगकाया सषसगुण १२ विक लासर्वगुण वयनर्थैर्न १०० लद्विमाग  
 सषगुण ३० विकलासर्वगुण न रुग २०० लद्वि दिन सषगुण १०० विद्यति सर्व  
 गुण नैर्न वयनर्थैर्न १०० न स वयनर्थैर्न १०० ग २०० लद्वि द्यति ॥ सषगुण १०० विद्यति सर्व  
 ग नरुग २०० लद्वि विकलारुवति ॥ थननवर्ष माग दिन द्यति विद्यतिरुसनीं ॥ स्रुग ३  
 डकाण सवनवांग रुसनीं इधनयाय ॥ वक्र उवनरुसनीं विपुण ॥ सषमायुष्यमात्रका ॥ नैर्न







॥  
॥  
॥

धपिपुपिधानकयाव उच्चनथाया धवधवताकालिकरुटन अपिर्नसर्द वर्षेणवर्ष माभनमा  
 ॥ दिनन दिन घटिनघटि गुणयायशर्मा धर्त १०० पुनर्थे १०० पुनर्थे ३० पुनर्थे १२ धर्तर्थेकाव  
 वर्षेमाग दिन घटि विघटिर्शर्मा ॥ थाय र्नेन यरुन क्काय यरुववर्क कर्मा धर्तर्शर्मा ॥ समर्शर्मा  
 य ॥ पुनर्कगापरिर्नशायर्नवरव ॥ यनमायपिपु १२० स धपिपुसराग १ लदिनामि सषगुण १२  
 ननराग १ सषगुण १२० ननराग १ स  
 रुल १ - १ ननर्थे १२० ॥ पुन  
 थर्शर्मा ॥ थायमद्वाकसा जिमेनिनागिनर्नडाव थाय थायासष यरागिनकाश्वसा जिमेनिनामि  
 सलिथाय यरागिनर्थे १२० सषवर् ॥ धिस उच्चनगुण नागिननामि मंगन मंग घटिनघटि  
 विघटिनविघटि गुणयाय ॥ धिसर्थे १०० पुनर्थे १०० पुनर्थे ३० पुनर्थे १२ धर्तनवर्ष माग दिन

घटि विघटिर्शर्मा ॥ थाय र्नेन यरुन क्कायमालकायाय यरुववर्क ॥ समर्शर्मायसमाय ॥ ० ॥  
 लयसगसयमनन ॥ मंगगाय ययपरिथर्थे ॥ लग्नादिनगरुसकलयाव नासिवाडाव मी  
 नगुण १०० घटिनर्नडाव धिसराग २०० लदिदिबष सषगुण १२ ननराग २०० लदिमाग ॥ स  
 यगुण १३० ननराग २०० लदिदिन ॥ सषगुण १०० ननराग २०० लदिघटि ॥ सषगुण १०० ननरा  
 ग २०० लदि विघटि लाशर्मा ॥ थाय र्नेन द्विगुणरुगुण ३ यरुनक्काय यरुववर्क ॥ ॥ य  
 नन्यनमनन मंगगाय ययपरि थर्थे ॥ लग्नादिनगरुसकलयाव नासिनवर्ष  
 मंगगुण १०० घटिनर्नडाव घटि विगलामगुण १२ याडाव धर्त १०० पुनर्थे १०० पुनर्थे ३०  
 धर्तसराग ३० लदिमाग ॥ सषगुण १३० ननराग ३० लदिदिन ॥ सषगुण १०० ननराग ३० लदिवि  
 घटिर्शर्मा ॥ थाय र्नेन द्विगुणरुगुण ३ यरुन क्काय यरुववर्क ॥ ॥ पुनननमनन मंगगायया



ययविधेयं ॥ ललादिनं ग्रहसकलया ॥ सासिनवर्षे ॥ श्रीप्रसिद्धिगुण १०० घटिनर्गडाव यनवावहगु  
 ७१२ विकलासंगुण १२ विकलासंगुण नर्गडाव १०० ललदिन धंधसर्गडाव राग १०० ललदिमाग ॥  
 संघटिसंगुण ३० ननराग १०० ललदिन ॥ संघगुण १०० ननराग १०० ललदिघटि ॥ संघगुण १०० न  
 ननराग १०० ललदिघटि ॥ दिगुण २१ दिगुण ३३ थाय नन यलान द्वाय पूर्ववत्तुश्री ॥ श्रीगादाय  
 असाय ॥ ० ॥ नस्यवलनर्ग  
 ललायं डाव नारीमडाव नद्व  
 ॥ ० ॥ ललासया यमरुस कनयलानमाल्य ॥ कनयलान नक्षत्रययविधेयं ॥ ग्वनग्रहयापलश  
 मीननशयसा डायामायवर्षेपिगाव ॥ सासिसंगुण १२ श्रीसनर्गडाव गुण ३० घटिनर्गडाव गु  
 ७१२ विकलानर्गडाव पिण्डश्री ॥ धपिण्डसराग २१०० ललदिमासि ॥ धपिण्डगुण १२ ननरा

[illegible]



धृष्ट विनययाव ॥ पुनश्च सवन रागकाया सवन गुण रुध्राय कयाव धिगु ॥ वर्षसर्ग माससर्ग  
दिनसर्ग द्यप्तिर्ग विद्यार्त्सर्ग गुणयावर्थ १० पुनर्थ १० पुनर्थ ३० पुनर्थ १२ वानुहनर्थ मास  
राग २०० लद्धिवर्ष माससगुण १२ मासनर्गडाव ननराग २०० लद्धिमास ॥ सषगु ३० दिननर्गडाव ननरा  
ग २०० लद्धिदिन ॥ सषगु १०० द्यत्तिनर्गडाव ननराग २०० लद्धिद्यटि ॥ सषगु १०० विद्यत्तिनर्गडाव न  
नराग २०० लद्धिविद्यटि ॥ पुनश्च व  
नर्गडाव राग १०० लद्धिमास ॥ सष  
द्यत्तिनर्गडाव राग १०० लद्धिद्यटि ॥ सषगु १०० विद्यत्तिनर्गडाव राग १०० लद्धिविककैलाशर्ग ॥  
पुनश्च सवन रुध्राय सवन द्विवाचावान १०० रागकाया सद्यसर्गडाव थन गान  
याद्याय डाययाय सथायाव कनयहस पाय ॥ ० ॥ पुनसावावलिमन कनयहस थथथ  
वैशर्ग ॥ गानकालिकरुध्रसैपिकायाव नासिस गुण ३० नननर्गडाव पुनगुण १०० द्यत्तिनर्गडाव

न गुण १० विकलानर्कडाव थर्कयडाव थर्कयर्नडाव ॥ धिसर्गयनगुरुयाशाय डगुरुयाशायनगुण  
सर्गिनलिम अनकमन गुणयायडाव ॥ धिसर्गर्क १० पनर्थर्क १० पनर्थर्क १० पनर्थर्क १० वानरुणध  
नार्ककम वषिगुण १० राग १२२००० लदिवद ॥ सयगुण १२ मागनर्कडाव राग १२२००० लदिमा  
ग १२ सयगुण ३० दिननर्कभ ननराग १२२००० लदिदिन ॥ सयगुण १० घटिनर्कभ डावराग १२२०  
००० लदिघटि ॥ सयगुण १० विघ  
र्क ॥ १ गुणपापगुरुयाशायन  
गुरुद्वयशरस लद्वयाडावयायडाव ॥ लग्नसपाप विनर्क ल्वयर्क ड्वयदल वलवर्क  
वियानगधकारव ॥ थर्कधर्कधरसर्न लग्नसपापगुरु अवलिइनसर्न गुरुयकावलवर्कनइन  
सर्न कनयर्कशाममाल कचित्तमथ ॥ पनथर्कधर्कधरसर्न पिरुयकर्मा लग्नकादिनगुरु



सकलयावर्मा लख ॥ थवधवदशागया ॥ गुरुनलग्नयकज्ञसा चतुस्राग ९ लदिनथायशर्मा ॥  
 कनपदमशासमाय ॥ ० ॥ क्रादशाकर्मशापयविधर्था ॥ लग्नमानिगुरुसकलया क्लृयमाल  
 ख ॥ दशाकर्मधर्थायशर्मा ॥ ग्ननग्ननगुरुयाकन क्लायशर्मा ॥ अगुरुयायाकन मद्रमक ३२  
 धिर्गाराग ॥ निरुग २० सक्तवमेथा ॥ सफर्म १२ सफरुग ३२ चतुन २१ शया ॥ लग्नमान ८ ९ सक  
 कलगुरुया ॥ ग्ननग्ननमलशका ॥ थर्गसकाकाहशर्मा ॥ थमडायां ग्न मद्रयाय ॥ थ  
 वकन नवम पश्चम पाका निरु ॥ ग्नथवकन सफर्मपाका सफरुग ॥ थवकन  
 चतुर्थ मद्रमपाका चतुस्राग ॥ थदाका मद्रमडाव थपिठनरागशर्मा ॥ ग्नगुरुन क्लया  
 अगुरुया मद्रमपाका थमद्रनगुण ६९ नागि लेश घटि विद्यटिसनीगुण ॥ थिसर्थन १० पुन  
 र्थन १० पर्थन ३० पुनर्थन १२ वानरुनर्थन मद्रसराग ॥ थमद्रनया मद्रनरागकाय लदि

वर्मा ॥ सपगुण १२ र्गनर्गन ननराग लदिमाग ॥ सपगुण ३० रुथशयदिननर्गन ननरा  
 ग लदिदिन ॥ सपगुण ३० घटिनर्गन ननराग लदि घटि ॥ सपगुण ॥ विकलानर्गन ननरा  
 ग लदि विकलाशर्मा ॥ थिसकाका धावनरागकायाव थनलदिनशर्मा ॥ ग्ननग्ननगुरुन क्ल  
 र्मा ॥ अगुरुयादशाशर्मा ॥ मद्रनदशाथशर्मा ॥ ० ॥ पुनक्रादशाकर्म साकसयमद्रनशापयवि  
 धर्था ॥ नागिमानमद्र थर्ग १०८ ॥ थपिठुसकाकाकाहशर्मा ॥ ग्ननगुरुया मद्रमपाका  
 ३ ॥ अगुरुयाग्नन थमवाडका ॥ सक्तनसमद्रयाय ॥ थवकन नवपंचमसर्वका  
 या निरुग ३ ॥ थवकन सफर्मसर्वकाया सफरुग ॥ थवकन चतुर्थ मद्रमसर्वकाया  
 चतुस्राग ॥ थर्गदाकर्मडाव थर्गदाकर्मडाव थर्गमद्रमद्रयिव ३१९ थर्गरागकायपिठुधाय  
 ॥ ग्ननग्नन क्लर्मा ॥ अया मद्रनयाव ॥ मालपशायमाल क्लयापनिनडं गुणयडशर्मा थिस  
 हाहा



म  
थ  
ह  
३

| सावलिमनन ३३७ |    |    |    |    |
|--------------|----|----|----|----|
| १            | २  | ३  | ४  | ५  |
| ६            | ७  | ८  | ९  | १० |
| ११           | १२ | १३ | १४ | १५ |
| १६           | १७ | १८ | १९ | २० |
| २१           | २२ | २३ | २४ | २५ |
| २६           | २७ | २८ | २९ | ३० |

१८८७२८२९३०

धर्म ८० पुनर्धर्म ८० पुनर्धर्म ३० पुनर्धर्म १२ वाचन धर्मसूत्रा गद्य  
 कन ३१७ लक्षिवर्ष ॥ पुनर्गुण १२ मास नर्तक व नर्तक ३१७ लक्षिमा  
 ग ॥ सप्तगुण ३० घटिनर्तक व नर्तक ३१७ लक्षिवर्ष ॥ सप्तगुण ८०  
 इथ सप्तनर्तक व नर्तक ३१७ लक्षिवर्ष ॥ सप्तगुण ८० विकलानर्तक  
 डाव नर्तक ३१७ लक्षिवर्ष ॥ लक्ष्मीदिन गद्य  
 कलयावर्ष गुल्लिङ्ग उल्ल्या व्यागल व्यालमालवर्ष ॥  
 सावलिमनन ३३७ ॥ ० ॥ नस्मिन्नापि विधेयं ॥ सावलि ३  
 गद्य १० नववर्ष २ यश्चराम ६ यश्चरु ६ गुणसप्त १ नष्टरु ८० ॥  
 शनिपञ्च ३२ स्यादिगुणकान्ध ॥ धवधव नान्धकालिकरुटिपिगाव ॥ धवधव निव्वनथायथा

यमरागसा, शिमनिवासिन १२ नर्तक थाय ॥ नीव्वनथाया योसप्त, पृथागिन धर्मसूत्रा वृथागिवा  
 य ॥ पृथागिनकाशनसा वायममाल थायासप्त धवधवपिणुणगुणयाय, धर्म ८० पुनर्धर्म ८० पुन  
 धर्म ३० पुनर्धर्म ८० धर्मनर्तक वसिष्ठिर्तक ॥ नीव्वसा पृथागिनागधिक, पृथागिनाग ॥ नस्मिन्नापि सिद्धि  
 ॥ ० ॥ पुनर्धर्मपनिर्नर्तकवर्ष, नस्मिन्नापि ॥ नान्धकालिकरुटिपिगाव, धवधव निव्वनथायाय  
 थायमदकसा शिमनिवासि १२ नर्तक थाय थायासप्त, पृथागिन धर्मसूत्रा शिम  
 निवासि २ लिथाय ॥ पृथागि नकाशनसा सप्तवर्तक थायासप्त धवधवपि  
 पुणगुणयाय पिर्तर्तक ॥ गुणयागर्तक धर्म ८० पुनर्धर्म ८० पुनर्धर्म ३० पुनर्धर्म ८० सप्तनर्तकाल  
 दिनवासि नर्तक वराग ८ लक्षिमागि ॥ सप्तगुण ३० नर्तक ग ८ लक्षिवर्ष ॥ सप्तगुण ८० नर्तक  
 ग ८ लक्षिवर्ष ॥ सप्तगुण ८० नर्तक ग ८ लक्षिवर्ष ॥ धर्मनसिद्धि ॥ ग्रुव वृथागि वदकसादि



गुणयायमाल ॥ वसुधैवकुतुम्भक ॥ अथ रागनर्तनमाल ॥ धननरसिंहासमाय ॥ ० ॥ परमउच्चगुरु  
 वरुणगवलनसंपन्नशुभसा ॥ गुरुदश ॥ उच्चगुरुगुरुशर्मा ॥ मधुमरुल गुरु ॥ उच्चमशर्मा वरुण  
 वलनसंपन्नशुभसा ॥ मधुमरुल गुरु ॥ निचयार्द सथवरुल ॥ वस्मिंशयावलसाय ॥ वस्मिंश  
 लथाल मधुलसायशर्मा ॥ ० ॥ उच्चगुरुन नीचर्षी ॥ नवशर्मा ॥ ॥ सहितकुरु उच्चसम  
 म ॥ नीचगुरुन उच्चर्षी ॥ नवशर्मा ॥ ॥ नवशर्मा नीचस सुरुकुरु ॥ नवशर्मा  
 नाम ॥ सयुगुरु उच्चमल्लिका ॥ ॥ सयुगुरु मिश्रकुरु ॥ नवशर्मा नीचसर्षी  
 न गुरुनवासशुभयादशमिश्रकुरु ॥ नवशर्मा नीचसर्वद ॥ नवशर्मा नीचसर्वद  
 ससर्षीसर्वद मिश्रकुरुशर्मा ॥ नवशर्मा नीचमधुलविक्रा ॥ नवशर्मा नीचमधुलविक्रा ॥ ० ॥ इत्युक्ता  
 वया यथमडकाण गुरुल ॥ द्वितीयडकाण मधुम ॥ तृतीयडकाण गुरुल ॥ ० ॥ वनवासि

या यथमडका गुरु ॥ द्वितीयडकाण मधुम ॥ तृतीयडकाण गुरुल ॥ ॥ स्मिन्वासिया यथमड  
 काण गुरुल ॥ द्वितीयडकाण गुरुल ॥ तृतीयडकाण गुरुल ॥ ० ॥ लश ॥ नवशर्मा  
 ॥ ॥ नवशर्मा गुरुलवर्षी ॥ उच्चगुरुदशमिश्रकुरु ॥ कुरुपुनरुन नवशर्मा ॥ ॥  
 कुरुसर्वका गुरुया यथमवयिसदश ॥ पनरुनसर्वका गुरुया मधुम  
 रुलवियिव ॥ नवशर्मा कुरुमिसर्व  
 लवियिव ॥ ॥ कुरुसमधुल  
 नरुनसमधुल नवशर्मा कुरुमिसर्षी ॥ नवशर्मा कुरुमिसर्षी ॥ नवशर्मा कुरुमिसर्षी ॥  
 लवर्षी ॥ नवशर्मा कुरुमिसर्षी ॥ नवशर्मा कुरुमिसर्षी ॥ नवशर्मा कुरुमिसर्षी ॥  
 मविनयविहिन ॥ द्वितीयविहिन ॥ तृतीयविहिन ॥ वरुण ॥ नवशर्मा

|      |      |    |
|------|------|----|
| प    | कुरु | नव |
| नव   | कुरु | प  |
| कुरु | नव   | प  |
| प    | कुरु | नव |



म  
थ  
दि  
२०

कन स्वधान ॥ यनरुन मधुम ॥ आपाक्षिम विनय ॥ किंरुल्लान ॥ कन नियनवरु ॥ ६६ ॥  
२ कन पशायपविधर्थ ॥ वंदरुल्लान ॥ स्रयंरुल्लान ॥ थायाव थायासष वनागिन कदिकदरुसाष  
नाशिवाय वनासिमज्ञानसाममाल सष विंरुगुण ३० मसननंन यनगुण १० घटिननंन ॥  
धिसराग ३१० लद्विद्विड पनर्यंराव इल्लानयाय यनधिसराग १ सषस गुल्लयदुरुनः  
सा किंरुल्लान दिन कषुयकुरु नसा वदल्लान दिन ॥ यदिपदा तिथि ल्लान दिन स्व ॥  
गनगमादयक र्थधसपन रा गसकाथाय निर्गमंषषिगुण विकलाननं न धि  
सराग वंदरुल्लान स्रयंरुल्लान थायाव रागकाय लद्विगनगमाघटि विद्विडिशी ॥  
२ तिथिदनी ॥ १ कंडनी स्रयंरुल्लान १ सष ववादिक्वण रुवति ॥ ० ॥ सायादय जातकनी  
दशाकमाना शायपविधर्थ ॥ नातकालिकनरुल्लान थायाव र्थधनं गनघटिशी ॥

गनघटिस विकलामं गुण १२० रागकाय २० लद्विपिर्नयकं कायाव धुनल्लकस १२० लिथायाव  
वनमाय सिद्धिशी ॥ यनमाय पिणुसगुण १२ मासननंराव यनगुण २० यनधिनीशी नरुल्लान  
न स्रयादिगुरुया धवधववर्षेकुशी गुणयाडा नरुल्लान र्थन १२० यनर्थन ३० यनर्थन १२ र्थन व  
पेक्षी ॥ धनवर्षमागदिमशी ॥ धवधवस्रदशासिद्धिशी ॥ ० ॥ यनमंरुदशाकमाना धध ॥ स्रदशा  
पिंताव गुण १२ मासननंराव य नगुण ३० दिनननंराव राग १२० लद्विवर्षे माग य  
नगुण १० ॥ १५ नराग १२० लद्वि घटिशी ॥ धलदिन पिणुशी ॥ धपिणुपिक्वानरुल्लान  
मंरुल्लान गुरुधवधव वर्षेनगुणयाय ॥ गुणयाडा र्थन १० यनर्थन ३० सषदिन यनदमसा र्थन १२  
सषमाग र्थन दिवर्षेक्षी ॥ र्थनमदमसा पटिर्नशी ॥ धकमंरुल्लान सकल गुरुयाव मंरुल्लान  
सिद्धि ॥ ० ॥ विदसाकमाना शायपविधर्थ ॥ धवधव मंरुल्लान पिंताव दशावर्षसगुण १२ मा



म  
थ  
र  
७

सननडाव गुण ३० दिननडाव पून गुण ४० द्युतिनडाव धर्म १२० सध गुण ४० नन राग १२०  
 लदिकसाद्यति थनकायाल दिपिण्डुश्री ॥ धृपिण्डुपिकाव ग्रहयाधवधववर्षेण गुणया  
 य गुणयाड कस धर्म ४० सधद्यति ॥ दनसाधर्म ३० सधदिन ॥ पूनदनसाधर्म १२ सधमा  
 स धर्मतादिनश्री ॥ दनसा वर्ष मागमाल मदनसा ममाल सन्य सन्य यायश्री ॥ धनयार्गेन  
 सा डाय वर्षमजागाल कर्मया डनडरुश्री ॥ दधसायडनसनी ॥ जातकस धास्य  
 नडनसनी थमनकामनश्याया यश्री ॥ विदधकर्मोथथ्य ॥ ० ॥ द्वितीयमंशसजा  
 यनयनसा लुविष्टवर्ष २ ॥ लगीयसजायनयनसा लुविष्टवर्ष १० ॥ वडुर्थसजायनयनसा  
 लुविष्टवर्ष २० थथ्य वूर्तवख मंडगाश्री ॥ खदधार्पिकाव वर्षसगुण १२ नासननन पून गु  
 ण ३० दिननडाव पिण्डुश्री ॥ धर्पिण्डुस थवधववर्षेण गुणयाय रौगै १२० पूनधर्म ३०  
 धर्म

भाषदिन ॥ पून धर्म १२ सध माग थगावर्षश्री ॥ धपयियातिनश्याय ॥ सारादियद शासमाय ॥ ० ॥  
 १ मनपवमाय १२० १ नमः ॥ १ ॥ नस्मिपधनमन दसमाद्धा उवद किमानन ॥ नस्मात्ययाननदि  
 १ रुक्मिपवमाय १२१ १ कथयामि यथामेक याम ॥ सावच्छुदशरथ १० नववन्द १ यश्रुमीपुत्रय १ यश्रु  
 १ मस्यपवमाय ३२ १ कूड १ तथेधसक १ द्वाकाग्नव १ शनोय १ १ ॥ एवदिसदशमम १ नमयवाकना  
 १ गधो डटपमय १२ १ धाकि १ स कयथक १ नीदिष्टा वस्मथा १ ग्रह १ न्दा १ म ॥ सधयमा १  
 १ सा मस यगामय १२ १ मरुमनिव वनाकि १ डम १ स १ धीव १ वरुमनया १ दसमाक नीवगनया  
 १ स्थानादियमाय १२ १ दिगनयसि ॥ मरुमस्वनसिनीवाङ्गः १ १ ॥ सावान्यना मरुवा १ न्य १ मरुजगन  
 १ द्वागादियमाय १२ १ पागा यभक्तधर्मयवक्रामि ॥ नीवविदिशुर्कम्यनिक वरुव १ नीयदात्या १ धकम  
 १ वक्रादियमाय १२ १ मिरदादग १ राग १ सावच्छा १ धवातस्यवद्विगुण १ १ ॥ स्यदीधीनयः १ स्वगासिग  
 १ वक्रवन्धव १ वनीद्वादग १ राग १ नीववरुव १ निरवा १ १ १ ॥ मरुजगनकि



न  
१  
६

मिः निगतवशादुद्धार्युः । वका नृक द्विगुणाचक त्याग्यरुगदीनाम् ॥ एवं वस्मि विधानम् ॥ घात्रि  
ः स्वमद्विषम ॥ वकादिपः ॥ था वडस्मि निवतिः ॥ रिवकाः ॥ कुलविहीना ॥ पवनरुकाद्विडा नञ्चिनुताः  
सकृद्वनिनवा ॥ पवनतादृशकं १० यावद्वृत्तादीनामिदं गमनवत ॥ आयं गमनम् ॥ साकाङ्ग्यमिदं  
तामलिना ॥ इदं दृष्ट्या वदामि ॥ १२ यावद्वृत्तादीनाः सजना ॥ धर्मो रिवताः ॥ सखाः ॥ कुलस्य कुलपिडा यन्  
॥ आविंशतः २० रुवेयः ८८ ॥ पिका ॥ पनयना धनखा ॥ किंकिताश्च मनखा यथा कर्मस्व  
जनसद्या ॥ यथाः ११ रुगम २२ दतिना धीश्च ॥ सन ददित्यावत् ॥ पवनारुवनिमनूजः  
समाकसच्चैवेव जीया ॥ नगडकृत् ० ॥ व ० ॥ ३० नृपाशितान् यन्निवल्लवै सोखाश्च ॥ दंशीश्चावत्सविनाः ॥ प  
यश्च रुवनि रुपानाम् ॥ नकारि १ ॥ ३१ स्मिन् ॥ पुनराखातामदिदुडा मिदं ॥ द्वादिगं ३२ ना यन् ॥ ३५  
३३ स्मृता यामपनयः ॥ ३४ मम रुधापिपिदि ॥ ३५ विधापिकावता निवस्मिणी ॥ ३६ सिकृत्समा मानीयन् ॥  
सकृद्विद्विद्वत् ॥ पवनताम ॥ लरुडि वरुका शययनिगतामदासत्वा ॥ यकाद्वीकियास सा रुवनि ॥  
रुगम ॥ लाकागं ॥ ३७ सन्मृत्तिः ॥ सलितनाम् ॥ नासकं वशापा ॥ लरुजितयवनि जनमान उदीयर्गव्यं ॥

विमलमनवा गावा जन्मनिथया जडा निगायन्मा ॥ कतापीकसवलज ० ॥ रुवनिश्चिश्चिगः ॥ पुनवा ॥  
दगजल ० ॥ गुरुक्यावस्मि सखा नवा ॥ ३८ शक्तिधूलरुमः ॥ यालक त्वथयाम ॥ रुक विपवनिम संगी  
यत कीवकीर्ति कुरुणवदितसर्वे कथनाकशानाम् ॥ ३९ शिजल निषीसं ख्यावस्मिति ॥ ४० सपन छिजल वि  
नदितायाः ॥ याथिवः ॥ ४१ मरुम ॥ ४२ विजल विमलितयाः ॥ यकं वेदा खिर्गं ॥ विजल धीवसनाया विम  
वदगव्येव ॥ वदा द्विदुली शमयश्च ॥ लजागान ॥ नृदगविलरुम ॥ ४३ सोम्याः ॥ ४४ वरुनरुकि  
शीला दीर्घाययः ॥ सखयगारुवनि ॥ ४५ पवनः ॥ पवनः ॥ ४६ किव ॥ ४७ द्वापाकव पालका निरुषसर्ग  
॥ सर्वे नमः ॥ ४८ गुरुगाम ॥ ४९ नृदुल्यव ॥ नायश्च ॥ ५० वत्ताविंश ॥ ५१ दृक्काः ॥ ५२ दिकिव ॥ ५३ यस्यसगा  
स्यात् ॥ ५४ यरुस्या विपसर्वे ॥ ५५ निषला कर्मा ॥ ५६ नृनरुवसदि ॥ ५७ सर्वे ॥ ५८ क्लिप्तम ॥ ५९ दृशय कि  
मरुिम् ॥ ६० सर्वे लाकागुत्तया ॥ ६१ विदधति विरुगा ॥ ६२ यस्यातिवदीका ॥ ६३ सवगणयति समानी ॥ ६४ वकावकि  
त्वमव ॥ ६५ मरुि मरुवकव यदाहा ॥ ६६ रुलस्य यद्विपुष्टतमम् ॥ ६७ द्विपविनन्यसीपवा ॥ ६८ वरु ॥ ६९ रु  
डा ॥ ७० मि ॥ ७१ नमसनथ ॥ ७२ रुस्या ॥ ७३ मी ॥ ७४ मी ॥ ७५ यरुमा ॥ ७६ रुवनि ॥ ७७ वदी ॥ ७८ दृक्का ॥ ७९ यमैव ॥ ८० मा ॥ ८१ वगः ॥ ८२ वः ॥



भववृक्ष ॥ सावावली ॥ वसिष्ठाग ॥ ० ॥ वासिष्ठाग ॥ आदिन नंद ॥ द्वितीयसर्वदयन ॥ सषष्ठ  
 हर्षाग ॥ वसिष्ठाग ॥ उद्वादस ॥ सर्वदयन ॥ सषष्ठरुथाग ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस  
 थाग ॥ द्वितीयनंद ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ सषष्ठरुथाग ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस  
 तीयस ॥ सषष्ठरुथाग ॥ सषष्ठरुथाग ॥ सषष्ठरुथाग ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस  
 वृक्ष ॥ सषष्ठरुथाग ॥ सषष्ठरुथाग ॥ सषष्ठरुथाग ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस  
 उद्वादस ॥ सषष्ठरुथाग ॥ सषष्ठरुथाग ॥ सषष्ठरुथाग ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस  
 वाल्य ॥ ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस  
 मशव ॥ ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस  
 उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस  
 नंद ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस ॥ उद्वादस

सा ॥ वापियागधाय ॥ रुल धिव सुषी द्यपन इयव धाय ॥ यतथा गरुल ॥ ॥ गल्लथा  
गा ॥ इःखी दाविड वीपीवन इमील ॥ ॥ इगल्लथागया २ दाविड निस्व पनविनिदिर्ग पा  
स्वधिउरू ॥ ॥ गल्लथागया ३ घाटका नथका सनेदता निवेनच ॥ ॥ कदावथागया ४ वी  
पीवन स्वदह्याइ ॥ ॥ दागथागया ५ इमील पनवज्जित पूमिल सहसर्वे ॥ ॥  
कामारवाथागया ६ पभुयद्य च उरुयदादिष्वामि ॥ ॥ वनासथागया ७ नि  
पूनकला सखादृष्टि सुषी म दाता ॥ ॥ १ रुनेकवन वायव्यामास कुजवरण नेवरा  
वध मुकुताम् मुकुलग्नी सनिद्ध विवधा

[illegible]



१॥ पहनाया ॥ दिनयाश्रयसा ॥ दिनमानसराग ॥ कूलदकादका ॥ आदि ॥ गीतउलिङ्गा ॥ ॥  
 गलियाश्रयन ॥ गलिमा मानसराग ॥ कूलआदि ॥ गीतउलिङ्गा ॥ ॥ कालादययाना ॥ किङ्कि  
 ॥ ॥ विष्टियाविष्टिदालीश्रया ॥ ॥ युकासफ ॥ द्यय २ च ३ ५ हय ३ र्येव १ पद ४ मूठ ४ दका ॥  
 ॥ ॥ गामीया वाग ॥ पित ॥ शुभमिय ॥ किं ग्वकूलरुंगस ॥ भागिन धारुवक ॥ वासवकन कुतिह  
 येडावसाय ॥ रुसन्ननसा ॥ वीव ॥ य ॥ कृतायाश्रयानसा ॥ पित ॥ लोकाउविस्सये  
 दसा ॥ शुभमिय ॥ धनन ॥ धुनि ॥ नयादसायश्रया ॥ ॥ ॥ गुगुगुगुगु ॥ पानिधन  
 कूडिहूड ॥ रुविधन ॥ कूडिहूड ॥ नगनधन ॥ कूडिहूड ॥ हिक्कियमन् ॥ ॥ ॥  
 गुगुगुगु ॥ क० वी० ॥ महाक० ॥ वायक० ॥ म्मासवी० ॥ निलवी० ॥ खादा ॥ यसल्लायमन् ॥ ॥ ॥  
 गुगुगुगु ॥ गिगामलखमवियावि ॥ ॥ धिघाव ॥ नपिडमान ॥ पुनपोति ॥ कसमनयि ॥ हिक्किय  
 मन् ॥ ॥ माट्टुमा ॥ न्वनिर्गत ॥ वधगात ॥ उदिमदेनिय ॥ किं विगमध ॥ पुनिर्गतिगाया  
 माहावष्टिउल ॥ पुनिर्गव ॥ उलयानया ॥ गिलाकथा ॥ ॥

[illegible]



[illegible]

उन्नमः सुखाय ॥ आवाहयद्वा दगा रुलमाह ॥ ॥ सुखायद्वा माह ॥ धनलोके ॥ सुखादिर्मयं ॥ धनपिण्ड ॥  
 धनकानि ॥ ॥ सुखं ॥ धनलोके ॥ सुखादिष्वपि ॥ ॥ सुखं ॥ सर्वदेवादिलोके ॥ धनधनानादिलोके ॥ ॥ सुखं ॥  
 नानाकृत्य ॥ कानि ॥ लघु ॥ ॥ सुखं ॥ धनलोके ॥ धर्मलोके ॥ ॥ सुखं ॥ वाक्यपीठ ॥ वलकानि ॥ मित्रवि  
 विथाग ॥ शक्तिविथाग ॥ ॥ सुखं ॥ किलास लघु कृत्य ॥ दक्षयामादि विषयविकादिभिः ॥ गविवनाम ॥ ॥  
 सुखं ॥ दशरुस ॥ वं धनकृत्य ॥ अर्थका  
 धि ॥ मित्रावयथ ॥ दक्षयपीठ ॥ लघुमि  
 लमवसुदि ॥ आरुवधायि ॥ सुखं  
 नक्षपीतपीठ ॥ नानाभा गपीठिन सवि ॥ इव ॥ अग्निरुय ॥ वावरुय ॥ ॥ वं ॥ अग्निरुय ॥ वा  
 धिपीठ ॥ अग्निरुय ॥ शक्तिहानि ॥ धनकानि ॥ किं विरुषेन रुवति ॥ ॥ वं ॥ धनलोके ॥ धर्म  
 धि ॥ उन्नमलोके ॥ उन्नमवसुलोके ॥ नानाकृत्य ॥ लघुमादि ॥ सुखादि ॥ ॥ वं ॥ अग्निरुय ॥ आवाहयद्वा  
 गकपीठ ॥ निश्चितरुवति ॥ ॥ वं ॥ सर्वदेवा निषाद ॥ अमललोके ॥ वदुस्यदादिनाह ॥ सुखं ॥ दिला



रु॥ ॥ वं॥ ॥ विलासग ॥ जगि कय ॥ धन दानि ॥ ॥ वं॥ ॥ वरुल कुरु लारु ॥ जल दृष्टि ॥ मरु ॥ दाव ॥ मनि  
 नला दिला रु॥ ॥ वं॥ ॥ पूरु लारु ॥ मनि व ॥ रखा ॥ भाग दानि ॥ गुरु कय ॥ धन संपादि ॥ कुरु स्याद ॥ समा  
 प ॥ ० ॥ काम स्याद ॥ समाप ॥ गुरु कय ॥ वा ॥ धव विवा ॥ न कुर्यादि द्या धिपीठा ॥ यव विष्ठागम ॥ ॥ मं॥  
 गुरु कय ॥ मगि कय ॥ धाव कय ॥ ॥ निनाग ॥ धन दानि ॥ ॥ मं॥ ॥ पृथ्वी धर्ममन ॥ दवरु कि ॥ वरु धन  
 कि ॥ किं विरु डाऊ कय ॥ ॥ मं॥ ॥ म  
 ॥ ॥ मं॥ ॥ गुरु कय ॥ धाव कय ॥ वा  
 वा कपीठा ॥ ॥ मं॥ ॥ ससु कय ॥ मगि  
 मं॥ ॥ मसु पीठा ॥ गुव ॥ वा द्वा ॥ दिग्म पपीठा ॥ धन दानि ॥ गुरु पीठा ॥ विदग्गमन ॥ ॥ मं॥ ॥ वाउ  
 मान्या दिला रु॥ ॥ नउ दृष्टि ॥ वन ॥ मन्द द्या पि ॥ मर्थ लारु ॥ ॥ मं॥ ॥ विवि धादि धन लारु ॥ मिश्र स्य ॥ वि  
 वि धादि न लारु ॥ काम स्याद ॥ समाप ॥ ० ॥ ॥ वाह स्याद ॥ समाप ॥ वं॥ ॥ धन दानि ॥ माल द्या धिपीठा ॥ ध  
 न दानि ॥ विदग्गमन ॥ गोव वन पादि ॥ ॥ वाह ॥ द्या धिद ॥ रव नाग ॥ दवरु कि ॥ वा द्वा ॥ धन कि ॥ मर्थ ल

रु॥ ॥ वाग ॥ वा कपीठा ॥ वाग पीठा ॥ ग्या नि कि ॥ वल रु ॥ दम रु ॥ रु ॥ नाग ॥ ॥ वाव ॥ मिश्र ॥ वं॥ समागम ॥  
 वद्वि दृष्टि ॥ धन लारु ॥ किं विरु कय पादि ॥ वाक ॥ जघन कय ॥ मगि कय ॥ गुरु कय ॥ गुरु मय द्या ॥ मं॥  
 रु॥ ॥ विदग्गम ॥ सानि दान ॥ ॥ वाग ॥ वा द्वा ॥ दिग्म लारु ॥ रु ॥ लारु ॥ धन पादि ॥ ॥ निग्गम ॥ वल रु ॥ ॥  
 वाह ॥ गुरु नाग ॥ गुरु कय ॥ मर्थ कय ॥ मगि कय ॥ धाव पीठा ॥ ॥ वाव ॥ मगि कय ॥ रु ॥ वा वल रु  
 ॥ धन दानि ॥ वागि कल रु ॥ दिद ॥ रव ॥ ॥ वाव ॥ गुरु कय ॥ धाव कय ॥ ससु मय द्या ॥ मगि कय  
 ॥ वाह स्याद ॥ समाप ॥ ० ॥ ॥ वाव  
 दृष्टि ॥ रु ॥ पृथ्वी पृथ्वी दिला रु ॥ ॥  
 धर्म दानि ॥ ॥ वं॥ ॥ गुव ॥ दव ॥ पूज वरु ॥ मय ॥ द ॥ रव ॥ सप ॥ दृष्टि ॥ वाग कय ॥ कदा विति वरु ॥ ॥ वं॥  
 ॥ पृथ्वी लारु ॥ वं॥ ॥ वल रु ॥ वेना रु पादि ॥ विदग्गमन ॥ ॥ वं॥ ॥ वल रु ॥ निप दृष्टि ॥ धन दानि ॥ कि  
 वरु रु ॥ मि विष्ठाग ॥ ॥ वं॥ ॥ विपु नाग ॥ मय ॥ द ॥ मय ॥ मान्य ॥ वेना पादि ॥ ॥ मं॥ ॥ मि वं॥ संपादि ॥  
 ॥ ॥ वं॥ ॥ वं॥ ॥ वाग स्याद ॥ समाप ॥ वाग स्याद ॥ ॥ वाव ॥ गुरु कय ॥ धन पादि ॥ वा







[illegible]

शमीरुमावा रुदि फागिव द्वाशी ४॥ यमादा प्रिय ॥ यूवनीवल्लरु ॥ लिजसू हन दृष्टमिग ॥ मध्या  
सशो रवा ॥ योवनवार्द्धकवसु र्विक ॥ गव्विष्टमिग वचुमसि ॥ पर्वविषजागरुवनि ॥ ० ॥ मिथनरु  
वन्दमसिडागस्यस्यनूपमाह ॥ श्रीलालं ॥ श्रीवृत्तलहृदय ॥ सुवनायवावकुसल ॥ काम  
साशारु ॥ शामरु ॥ द्युगनायादिनानारुलरु ॥ गोरुविगपडिग ॥ इग ४ पवसकागोरु  
संदगायापी ॥ कविगमूर्द्धाववासि ॥ वारु ॥ पट्टमनिशुडनपी ४ हास्यकिग ॥ हास्यपह  
सन ॥ ० ॥ दिगलकिग ॥ पसिद्ध ॥ श्रु  
यवासगिमगवक्र ॥ परुडणनूव ॥ पकषणरुडनारिलापी ॥ गीरुपीथागीनन ॥ न  
रुपाथा ४ रुयन ॥ क्रीवड ४ र्विकसरु ॥ रनियानि ॥ समूनननस ॥ पर्वविषेश्वरुहरीयपक्रमिथन  
रुडागसवनि ॥ ० ॥ कार्क ४ वन्दमसिडागस्यस्यनूपमाह ॥ सुववाडग ॥ समूननकठि  
नि ॥ मिनिडिग ॥ ससुडरुदवक्र ४ ययूलालय ४ कामधनननि ॥ आवकडरुग ॥ कठिलवडन  
मामि ॥ ससनकठि ॥ डवडयान ॥ मिनिडिग ॥ पसदानिडिग ॥ सगुरुगुरुवमिग ॥ दवक्राश



मल्लिकार्जुन

[illegible][illegible]



[illegible]

गीतागो. शविः पण्डितः ॥ काव्यकारः ॥ वीर्यवान् ॥ पाणीषकावचनपटुः ॥ स्थूलनन्दशवाधनस्य ॥  
 पृथलदन्तः कलशप्रयाणः ॥ कामाक्षिः सर्वकामो धूमालारुनः ॥ गिल्यविरुल्लिखिषू विरुल्ल ॥ ऊँ  
 ॥ ४ विनरुक्तावः ॥ अनस्वी ॥ अमरुनरवः ॥ समाश्रितः ॥ ४ पीनवान् ॥ पागलवान् ॥ यनिवान्  
 ॥ धर्मविरुधर्माः ॥ वद्विद्वत्सर्वमनावर्तः ॥ अमरुद्विद्वत् ॥ समन्वितवर्माः ॥ सामेववर्मायाति ॥  
 मृग्यः ॥ धनधनः ॥ चन्द्रमसिजाताः ॥ रुवनीपवीविषः ॥ ० ॥ मकरन्दमसिजातस्य स्व  
 यमारु ॥ नैमित्त्यमिति ॥ नित्यलालप ॥ ति ॥ उक्तासधति ॥ रुयतिनी ॥ यावत्स्वदानान् ॥ स्व  
 तनपीथः ॥ धर्मथजा धर्मवान् मिथथनति ॥ आध्यात्मजनः ॥ नद्वस्वर्ण्यस्यासावधः ॥ ४  
 लः ॥ सूअमानवतः ॥ कामकोटिगृहीतवचनः ॥ पदमर्गगङ्गाति ॥ सारागङ्गा ॥ सारागङ्गाधि  
 तः ॥ मृगलासः ॥ मृगसायकः ॥ गीगालः ॥ सीर्गकसरुणा मृगनः ॥ पवित्रमनिगीलः ॥ मृगलासनवमि  
 थः ॥ अमणकानति ॥ सदापिकाः मरुसत्त्वः ॥ काव्यद्वगः काव्यकावः ॥ लक्ष्मीलालासिखः ॥ मृग



म  
ल  
व  
॥७॥

मयौ जना जेनासनिवत ॥ मगमासुनिद्वज्जनिपदादि ॥ श्री गृवागक ॥ वृद्धिपूर्व ॥ मामिन्ध ॥ गम्यज  
नातिगिपाभरुवय ॥ सिकल ॥ ४ ॥ विमरुका ॥ मय्यनादिद्वय ॥ गर्वविष्णुमनूजामकनरुव  
जानारुवनि ॥ ० ॥ अरुका ॥ मसिजाकस्यस्वरूपमारु ॥ कवरुगल ॥ उष्टसमशीव ॥ ४ ॥ मि  
नालः स्वनाभामसदीपारुव ॥ गिनासकुरागिनालारवनामरुपिता ॥ धननामस्य दीर्घयमाना  
दीर्घननुषस्य सननामसदीर्घनेन ॥ पृथयत्यका ॥ मरिसम्वधान ॥ पृथववण ॥ ४ ॥ पृथ  
पैल्यैवौ गौर ॥ पृथयत्यका ॥ पृथ ॥ पृथ ॥ अभाव ॥ ४ ॥ पृथयत्यका ॥ पृथकटि ॥ व ॥ ० ॥ वज्रिना  
थपापनिवत ॥ पनस्त्रिणा ॥ पनधना ॥ जी पापकर्मा जीवनिवत ॥ कृपवृद्धियुग ॥  
मपनयीकदाविहृदपवमी ॥ धीयामिक ॥ असमं पृथस्वालयन मालरुन ॥ पगानिअस्यय  
क्रावसपीय ॥ असमानूलरवयनसूदु ॥ मय्यसरुपथि कुगसरु ॥ अरुनासिजाकस्य प  
लानि ॥ ० ॥ अलवधनराकावनि ॥ अलान्यनानां जाजाल्यनायका राका ॥ वासदानानरु ॥ वस

नवास ॥ वरुकलनस्वनरु ॥ समरुविवसनिव ॥ समपमा ॥ ४ ॥ मरुनकाय ॥ उद्धनाग ॥ उवपा  
॥ ४ ॥ उवपा ॥ विल्लि ॥ म ॥ मरुिरुवनि ॥ सयगानगक्रावर्जितसदासमर्थ ॥ स्त्रीजीत ॥ प्रमदावग  
ग ॥ वामरुष्टि ॥ सारुणविक्रण ॥ अतिनिपिपनरागि ॥ अतिदिदु ॥ रमावस्तु ॥ अमुमर्थनिपिसद  
नाथन ॥ पनमर्थ ॥ पनपीरामि ॥ पण्डित ॥ सारुविहृ ॥ मय्यकनासा ॥ मीनरुवन्दमत्यवविष्णु  
वनिद्वग ॥ ० ॥ मरुिक्रनासिस्त्रु  
य ॥ अस्मिन्नना ॥ जीवन्दमावास्त्रिण ॥ पमारु ॥ वलवगीना ॥ मरुवनि ॥ पूनपस्यजनासन  
सर्वदा ॥ गिर्वलवानरुवनि ॥ मय्यवनाथा ॥ धिपयनि ॥  
सववलावानिनि ॥ वन्दमा ॥ श्रवलावलवनि ॥ पर्वमश्रुपिवलवानुय ॥ अक्रगागिस्त्रुपवान  
गुरुग ॥ पूनधारुवनि ॥ पनपीम ॥ अ ॥ वलवगा ॥ मय्यरुय ॥ पूनपापानि ॥ पकस्मिन्नवल  
वगीकिस्त्रिडागिस्त्रुपपापानि ॥ नकासि ॥ श्रुवलवनि ॥ मरु ॥ स्वरूपनकि ॥ श्रुवलवनि ॥ गजि  
वदगा ॥ धनपनूपविनिस्त्रु ॥ वन्दवदगाग ॥ मादिया ॥ ज्ञानका ॥ दय ॥ पूनवा ॥ म ॥ वावस्त्रि







म  
न  
२५

ल्यगविन ॥ कान्ताल्लुद्धाजाता चर्वविषीरुवति ॥ डल दृष्टिक धन मकनरुद्धाजाता स्वन वमाह ॥  
 ॥०॥ जातं शादि ॥ जातं शादि ॥ जातं शादि ॥ मय विवकात ॥ मय विवकात ॥ नियम धयीय ॥ नियम धयीय ॥  
 स्ववर्णवान ॥ नीच दत्त ॥ अनविन कर्मा कर्मा ॥ वर्ष विषमूलरुद्धाजाता रुवति ॥ कृतं शादि ॥ क  
 गारुस्वराव ॥ दिदिविष्टदा स्वः सदाकापिन शादि ॥ सारुसिका ध्या ला विन ॥ विसर्जित यून  
 शाते ॥ विषम धन विषा यशासा ॥ वनमत्रयति गमनक ॥ गमनन कवातिनी ॥ ग  
 थितसविन विजातारुवति ॥ मया ध  
 र्ण ॥ विषयं जयन मनूष्य ॥ लाह  
 र्ण ॥ यद्विसर्गिल पीयविग्रहं ॥ विषादिक गमनपवित्रता ॥ पिउर्जन न्या विद्वान पवान ॥ स  
 त्युक्तं ॥ वनवान धन धन गंगा सविन विजात ॥ स हि पञ्च ॥ धनवान ॥ गी कृत्स्नराव ॥ विष  
 येश ॥ कान्ताल्लुद्धाजाता नीचानी च कर्मा कर्मा ॥ मरुता मरुता ॥ ववजिगिगि ॥ कृत्स्नवनि कर्मा  
 मसमजितधन ॥ मकनरुद्धाजाता रुलमिदं ॥ मल्यविल ॥ लक्ष ॥ पदवादिष्ट रुल ॥ पदमी ग

कृ॥ ० ॥ नीचांति ॥ अमनवाजातायेऽवार्मरिनी चारुवति ॥ कत्सर्वकवाति ॥ गनमय निपुत्र  
 ॥ रामाय विवकात ॥ मया दनिद ॥ चर्वविष ॥ अल्लुद्धाजाता रुवति ॥ मीनना सिगक ॥ गायथ्यपना  
 विरुव ॥ शादि ॥ जलडादवा कय विवकात वाव रुल विरुव ॥ मीना ॥ मरुमीनना सिष्टुद्धाजाता  
 लमिदं ॥ नक्रमानवगन ॥ मयि विरावा लक्ष दिष्टा रुल विरुव ॥ नक्रमानवना सिष्टु  
 र्ष ॥ कालाजनितादि ॥ नादगि  
 वल्लित ॥ गनरादा समतावा दिष्ट  
 का दिविद्रवक ॥ नक्रमानवगन  
 ना ॥ उरवाषाडद्वय मथगुद्र ॥ सैव ध्वरु लुणी कटि मधिन कर्मा ॥ या यथा यम रुव  
 ति ॥ लादपदा ॥ अल्लुद्धाजाता ये विवमूल धननाध ॥ पूष्ट विविध निष्टा ॥ उता विगमया ॥ क  
 ना समता रुल ॥ मगुना यम ध्वरु लुणी कटि मधिन कर्मा ॥ या यथा यम रुव  
 र्वजा ॥ स्वातिक विरुव ॥ रुधमथनागिका ॥ मद्या मगजिन ॥ विग लला ॥ मिनारु







लोमजालिखति ॥ अथ मषदृषदृष्टिवा डलगनिवृद्धागस्यस्वयपमारु ॥ ० ॥ घातान दानन  
गानयाननता ॥ नालिकागानि ॥ घात ॥ मृदुकुसल ॥ मृदुपा ॥ गानक ॥ नालिका ॥ मृदु  
दयान ॥ वीवक्षन ॥ निख ॥ निदवा ॥ दृषीवान ॥ अन्तिगम्क ॥ दृढदृढ ॥ दृढकाल ॥ मृसत्यन  
न ॥ मृन्मदवादि ॥ प्रवीविष ॥ उजस्य मष ॥ दृष्टिवा डलगनिवृद्धागस्यस्वयपमारु ॥ लो  
वाल्क ॥ हनिमृनिमृनगानवदृष्य  
नसत्यधनी ॥ धविदिमारु ॥ गुनजन  
जागारुवति ॥ मिथूनककटवृषा  
त्य ॥ प्रीयत्यद ॥ साधनगलीय ॥ जलाजिगेत्य ॥ स्वजनस्यगक ॥ गविमाद्वजगीगकनकृयक  
विकथन मालागुणपससका ॥ सार्थ ॥ साकलाविदमृ ॥ गि ॥ मृकलाविसृवविदमृग  
मुकलागजानानिसार्थ ॥ प्रीयवदा ॥ हिमनवक्रा ॥ सारवानग ॥ सखासखा ॥ लीय मिथून  
लृवृद्धागप्रवीविष ॥ रुवति ॥ जलाजिगेत्य ॥ ह्यादि ॥ जलपकावण ॥ नीमाममागमनयार्थ ॥

[illegible]



म  
पु  
डा  
२५

वानपनखग्रुनगील ॥ षष्ठकन ॥ वनविनाहारुन ॥ प्रवविधध्वजंरुगगिबूधजागा  
रुवति ॥ नृपसमरावाडासामा ४ प जिग ॥ सा मुक्त ॥ मफवाक्क ॥ पयपिरुवचन ४ ॥ प्रवविध  
नवमल्लधनपिनगगि वूधजागारुवति ॥ मल्लमीनजिगभवकंनगिल्य ॥ जिगासवका ॥ यनपय  
माधन ४ ॥ गालवूथार्थ ॥ अद्यागिस्थानिद्वगिल्य ॥ प्रवविधमीनल्लवधजागारुवति ॥ वधनागि  
खराव ॥ अर्थमिषद्ययिक दृष ३ ल मिधन कन्यागन जिवजागखनयमाह ॥ ॥  
सवागीवूथ्यादि ॥ सनानीरूपसिनि वरुवितदानरुनय ॥ वदर्थ ॥ वदर्थ ॥ वदुदान ४ ॥  
वरुपू ४ ॥ दागादानशील ॥ स्वरुथ ॥ सारुनरुथ ॥ कमीकमावान् ॥ भडादानगुणनिचन ॥ गज  
सागथादानगुण ४ ॥ कालगुण स्वयक ४ ॥ स्यात् ॥ यथिन ॥ प्रवविध ४ ॥ सुनगुणाकागदमचधि  
काळजागारुवति ॥ कन्या ४ ॥ स्वरुथ ४ ॥ ससुखार्थ ॥ मिगनय ॥ ससरव ४ ॥ सार्थ ॥ मिगानिस  
हिग ॥ गननपया ॥ प्रवयक ॥ स्वामिवापि ॥ पीयसवजनवलरु ॥ प्रवविध ॥ गलरु दृषउल

रुजिवजागारुवति ॥ वाधवूथ्यादि ॥ मुनिपविद्वदात्मजसुद्धन ॥ गृहदिगपविद्वद ४ ॥ वदुपपिवस  
॥ वदुपू ॥ वदुमिग ॥ स्यविवयक ॥ मजिनस्वरुथ ॥ मसीव ॥ प्रवविध ॥ वाध मिधन कन्याल्ल  
जिवजागारुवति ॥ कर्कट सिंरु धन मीन उरु मकरल्ल जिवजागखनयमाह ॥ ० ॥ वदुप  
तिसगति ॥ नलाविसुगाथ ॥ खदवादानाथविरुवा ॥ यस्याखनल्ल सुगथ दानाथविरुवा ॥ प्र  
गवेननिग ॥ सयक ॥ प्रवविधसिंरुल्ल जीवजागारुवति ॥ स्वरुथवूथ्यादि ॥ वलणायका ॥ स  
नायमान ॥ अन्यत्रयगुदुधपाशनल्ल यगस्यादि ॥ कनदपिरुवति ॥ प्रवविध ॥ स्वरुथक  
वूथ्यादि ॥ माणुलिकासणुलाविधिप ॥ नमरु सधिवानाक्रमलि ॥ सनापति ॥ वसूनाथ ॥ धनि  
अर्थवान् ॥ प्रवविध ॥ स्वरुथविमीनजागारुवति ॥ उरु कर्कट वरुथ लानियात्याहिगाम्य  
मकमल्लजीवानल्लसुगसुदाविरुव ॥ मल्लसुखनस्विगवूथ्यादि ॥ दिनिमकननीधा ल्यविरु ४  
सुखी ॥ नीवजलान् विगकर्मद्वन ॥ मल्लविग ॥ ल्लकार्थ ॥ मसुखी ॥ प्रवविधमी मकरल्लजीवि



जगिरुवति ॥ इह स्वतिनासिखलावा ॥ मन्थमष दृष्टिका दृष्ट उलगगगग शुवाजातस्यस्वय  
माह ॥ ० ॥ पययवतिपग ॥ पययिपसक्रा ॥ कदर्थवाकहगविरुव ॥ गस्यामि ४ यासस्वन्दिरिनेधेवा  
दहगार्थ ॥ उलकौवान ॥ उलकालक ॥ प्रववि ६५ ॥ अजक मषकश्रिक ॥ शुवाजागारुवति ॥  
स्ववलमत्पानधनगम्य ॥ ननद्वयुषा नाशवल ॥ स्वजनविदु ॥ स्ववचूखामि ॥ पथिगद्विम ॥ प  
क्रागविकथा ६ स्यति ॥ प्रववि ६४ ॥ ॥ गगुवास्व ६५ ॥ उल ६४ ॥ जगिरुवति ॥ मिथन  
कन्या ॥ अम ॥ मकाव ६४ ॥ शुवाजाग  
यकस्यवापानाज कायक ॥ ल ॥ मधवा ॥ वासी कविगकला ॥ असल ॥ प्रववि ६५ ॥ मिथन ६४  
शुवाजागारुवति ॥ ॥ कर्कटसिंह ॥ मन्त्रि ॥ मीनजगस्यस्वयपमाह ॥ दित्यभा ६४ ॥ उलि  
नस्यसिहपीथनदिरा ॥ आरुवति ॥ वक्र ॥ ६४ ॥ अवि विट ॥ सुदा ६४ ॥ म ६५ ॥ व ६४ ॥ दयजागरा  
मा ६४ ॥ मपयनपूतनवमाह ॥ मवि सधनद्वयविदति ॥ पायनवद्ववद्ववनिताधाय ॥

सिद्धिरायगस्यापैयवानथागर्ग ॥ मधुसमनमधुविन ४ ॥ श्रीरुयगील ॥ मदकाम ॥ ६४ ॥ क  
॥ कष्टविथोग ॥ पवलामद ॥ ६४ ॥ कापस्यास्यिवेल ॥ मष्ट ६४ ॥ मक ॥ गगिरु कर्कटसिंह शुवाजाग  
प्रववि ६४ ॥ रुवति ॥ वनाविद्यादि ॥ थापाप्राथ ॥ श्रित्य ४ पाफन ॥ पवलतयवति ॥ ६४ ॥ श्रु ६४ ॥ क ॥  
मदगनय ॥ खलपयस ॥ प्रववि ६४ ॥ सिंह ६४ ॥ शुवाजागारुवति ॥ गण ६४ ॥ सादि ॥ प ६४ ॥ ल ६४ ॥ सु ६४ ॥  
४ पू ६४ ॥ सत्य ४ सधन ४ ॥ उवंगस  
गारुवति ॥ शुवाजागारुवति ॥ ० ॥ ॥ मधमष ॥ दृष्टिका ॥ कन्या ॥ गग ॥ समजागस्यस्वय  
पमाह ॥ मूर्खाद्वन ६४ ॥ म ६४ ॥ म ६४ ॥ म ६४ ॥ नमनगील ॥ कापटवान ॥ कागवाचानय  
६४ ॥ विरुद्रुदिगग ४ मि ४ यमसोजनमष ६४ ॥ जागप्रववि ६४ ॥ रुवति ॥ कीट ६४ ॥ ग ६४ ॥ काव  
॥ राकावयल विद्यास्वनवल्लि ४ ॥ म ६४ ॥ गानिद्वय ॥ प्रववधकीटविश्विकमग सोवजाग  
रुवति ॥ निहिरादि ॥ निविग ६४ ॥ य ६४ ॥ कामहिसर्वध ॥ निहीनिहज ४ ॥ निगुष ॥ निसे



अ  
पु  
पु  
५५

नर्थ॥ निसृग॥ स्यलिनश्चलश्च००॥ लखात्रालखा सोनजागारुवति॥ निहियादि॥ निविग  
दार्ष्ट्यकामहि सर्ववध॥ निह्रीनिवृण॥ निशुष॥ निनर्थ॥ निसृग॥ स्यलिनश्चलश्च००  
ति॥ लखाकामो निस्य निनर॥ गळ॥ वन्धा वति॥ निगी॥ श्रि यशस्यनयसूर्यग॥ मरुवाश्चतुर्ग  
गणमूरवा नीथाश्च॥ प्रवविष्म मिथून कन्या॥ सोनजागारुवति॥ दृष उल कर्कट सिंह  
॥ सोनजागारुस्यस्वरूपमाह॥ ० ॥ वरु००॥ अमम्याधूम्राया॥ यशस्यनवद्वि  
रुवा॥ दल्यार्थयूक॥ अनिरुथाव रुदा॥ प्रवविष्म दृषश्च सोनजागारुवति॥ स्या  
नमिह्यादि॥ स्वातकी कियूक॥ गणयूचनल गमयूश्च॥ गणमासस्यानी पनाणवला  
ग्रामानी च पुत्रनिय॥ अथवावलि॥ प्रवविष्म॥ सोनरु सोनजागारुवति॥ वाक्चनिसा  
दि॥ अस्वदरिद्रि॥ विमलदशना हि दल्यदरु॥ माविहीना न निगी विवृक॥ पूनरुलिग॥  
मूरव॥ प्रवविष्म॥ वाक्चतुर्ग सोनजागारुवति॥ सिंह००॥ त्यादि॥ अनाऊ॥ असाधू॥ विसू

स्वगनया॥ विगहसूरव॥ विपूज॥ शष्टि दृङ्गाववाही वरुनश्चिना॥ प्रवविष्म सिंहरु नन्दजाता  
रुवति॥ बद्धिमीन मकरजूरु॥ सोनजागारुस्वरूपमाह॥ ० ॥ स्वक॥ पुत्रपिगानन००॥ ति॥  
स्वक॥ गमरुना न्यायस्य दृष्टे दत्तसूरिन००॥ तिजावतू॥ पुराविगयत्या॥ नयनरुवन राज  
गृह॥ सनयूजामाधन॥ शारुनयू॥ सशाम॥ सदन॥ यूनवल गमायणीपधन॥ प्रव  
विष्म जीवक००॥ पन्निमीनग गसोरश्चगारुवति॥ अनामि॥ नलरुग००॥ सा  
दि॥ पनलिधनसूर्यक॥ पनवः लग्नमाधेगणीयधन॥ मन्दरुवा॥ नास्यसम्य  
गृष्मनिमक्तिमिग॥ मलिनामलय॥ स्तिनार्थविरुवस्तिगैरधनश्चरुका॥ लाभवातू॥ प्र  
वविष्म स्वक०॥ मकरजूरु॥ सोनजागारुवति॥ गनिश्चननासिस्वरुवा॥ प्रवसर्वगृहा  
नासिस्वरुवा॥ ० ॥ वलवतिनासो न विपणीव॥ नमिन्स्वगृहवलवति यथैक॥ नासि  
स्वरुवरुवति॥ दृक्वाथश्च वलवती मध्यात्मानामिति॥ नकाश्चिद्वलवति॥ नकिं विदि



४६। लु

नि॥ गूथमयादिषु लक्षणैः तस्य वन्दनकथां प्रकुरु ॥ सूर्या विदग्धमर्थमाह ॥ ० ॥ आनन्दकाव  
धरुविः असलानियङ्गु रूपाथवानकलरुद्धग ४ किमिससंस्कृतमस्वास्मिदायनकं ॥ मयनवासकल  
दृष्टिकानवांगकल्लवा वन्दमणि ॥ सूर्यादृष्ट आनन्दिकारुवति ॥ नरुकांनवगमकापिद्धग ॥ रामद  
ष्टि धनरुक् ॥ वृषदृष्टि असलानियङ्गुवाहयदुनियून ॥ जीवदृष्ट ताजा ॥ शुक्रदृष्ट कलरुद्धगिति ॥  
मूर्खं ॥ ० ॥ आदि ॥ दृष्टनवासकल्लु लनवांगकल्लवा वन्दमस्य ॥ कर्कदृष्टि मूर्खरुव  
ति ॥ रामदृष्टि यनदायनक ॥ वृषदृष्टि वाद्यवर्क ॥ जीवदृष्टि शल्वी ॥ शुक्रदृष्टि सुखप  
॥ सोमदृष्टि यनदायनक ॥ मिथूनक न्या कर्कनेनवांगकवन्दमसि ॥ मूर्कदृष्टि रूलमाह  
॥ ० ॥ वाधेरिनाङ्गं ॥ वाधेमिथूननवांगकल्लु कन्यानवांगकल्लवा वन्दमसि ॥ आदिनद  
ष्टि वज्रवाहिन्यादि ॥ वाद्यजीवि ॥ रामदृष्टि वाय ॥ वृषदृष्टि कवि ॥ नृ ४ सत्कवित्रित्यर्थ ४ ॥ जी  
वदृष्टि मणि ॥ शुक्रदृष्टि रूलय ॥ सोमदृष्टि नित्यनियून ॥ लोसं ॥ आदि ॥ कर्कटीसंस्कृतवन्दमसि

[illegible]



मदृष्ट ३४ विव न सत्य ४ विव गुरुवति ॥ वृष दृष्ट पाना गक्रा रुरुवति ॥ जी वदृष्ट कर्म न सत्य  
क्रा रुरुवति ॥ उरुक्र ॥ स्वकामानि ॥ शुक्र दृष्ट पा दृष्टाना विव स्यात् ॥ पीथा रुरुवति ॥ गनिथन दृष्ट  
निद्यु ७ ४ निद्युन ॥ गव ग काल ववा गवा वसि गुरु दृष्ट ल ७ ७ पि ॥ किं रुवा पि कर्कट न वां ग क ॥  
विना व न दृष्टि न गुरु ॥ गाना गद दृष्टा दि दृष्ट ॥ यग न न वां स कळ व न म स्य दृष्टा दि दृष्टा यु  
त्यल रुरुवति ॥ गनिन वां स कळ ६ क व न्या विव दृष्ट रुरुवति ॥ गव दृष्ट रुरुवति ॥ न वा  
स क वा व कळ स्या दिव व न स्या ता रा दृष्टि रुरुवति ॥ किं रुय सा दिव दृष्टा व न स्या  
क्रा ॥ गव दृष्टा स्या विव क वा म्वा ॥ गद धा म्वा दृष्टि क न वां ग कळ ६ क व न दृष्टि ॥ मिथुन  
क न्मा न वां स कळ व न्म व न ४ ॥ सिं ह न वां स कळ स क्वा ४ ॥ धन मी न न न वां स कळ ॥ पं थि क व ल  
॥ म क र क र न वां स कळ ६ स्या प स्या ॥ वा क र क र न वां ग कळ अ ल्प मा न ७ ७ ति ॥ गव मा दिव स्या न वां ग  
कळ वा व लि ग स्या गुरु दृष्टा व न रु ल स मा न मि ति ॥ न स्य व न वां ग क दृष्टि रुरुवति विव ग व मा

ह ॥ ० ॥ व ग्ज सै म् ७ ७ ति ॥ ग न वां स क वा व लि क व न्म मि ॥ गुरु दृष्टि रुरुवति विव क वा म्वा ॥ गद धा म्वा दृष्टि क न वां ग कळ ६ क व न दृष्टि ॥ मिथुन  
व न्मा उ म दृष्ट व क स्या व न्म मि ॥ गुरु दृष्टि रुरुवति ॥ व ग्ज न म ल स्या ल धि मि ॥ गव ल ग्वा दिव स्या न न पि  
दृष्टि रुरुवति ॥ डा ग क स वां गि व रु ला नि रु व ति ॥ पा र्द य स्या ॥ य व न स्य ॥ म न्मा न्मा स स्या  
ग वि क ल्प ना रि ॥ वि दं स डा सै म् ७ ७ मि ॥ गुरु ४ स द न गि दृष्टि न वां ग क दृष्टि रुरुवति ॥ नि रु व ति  
पौ र्द य स्या ॥ थार पि ॥ स द व प क  
वा ध नार्थ मा ह ॥ वी स्या मि ७ ७ ति ॥ ४ ॥ या य मि ॥ न गी ग क प नी व ति ना सि द र्ग नि रु ल  
मि ॥ ग स्या न वां स क स्या थार पि ॥ स  
ग ना गि कृ ण स्या व रु मा उ कान द्वा द ग मं ग रा ण कृ न स्या ॥ गव दृष्ट रुरुवति ॥ न वां ग क प ति वि  
व ल वा न ॥ ना गी कृ न रु ल म व द दा ति ॥ ग द्वा स वा प ति व ल वा न रु व ति ॥ ग द्वा ना गी कृ ण स क  
कृ ण रु ल उ रु वा य ॥ गव ल ग्वा व न्म मि ॥ गद धा म्वा दृष्टि क न वां ग क दृष्टि रुरुवति ॥ मिथुन  
क व ॥ य स्या क स्या ना गी कृ ण रु ल मि रु मा क ॥ स र्ग प ति का य ॥ दृष्टि रुरुवति ॥ थार पि ॥ ० ॥



म  
पु  
१७८

॥ नितिहाया याग रुत्ताथेमाह ॥ ० ॥ यनिश्चतवृत्ति ॥ नृसंगलाः पापाः । तेषां यथासमनस्य ॥ म  
ष मिधून सिंह उलयद्वि अरुस्ववल्गुवनि ॥ पतयनागी पूवयमादिक ॥ पाषाडवनि ॥  
नदाजानस्याउ ॥ पसिद्धमहाशमयक ॥ मरुत्तुकाडु छिस्टदिगारुवनि ॥ डत्माहयन ॥ साधे  
पूय ॥ मृगिगिश्मडादीफ ॥ पर्वसमनागी पू दृष कर्कट वान्या द्युश्चक मकर मीनष सोम्य  
ग्रहाणां स्ववल्गुनं रुवनि ॥ वन्दहा नामव प्रवर्द्धक ॥ रुवनि ॥ यग्मनामिषु पथमाद्व  
रुत्ता सोम्यायला नदारुवनि ॥ गदाजाना माद्ववयनः ॥ सोम्यमहाव ॥ कान्तिरुतः ॥ नृसमा  
यन ॥ सोम्ययनः ॥ रागीः सारुत्तयन ॥ मधुववाक् ॥ पीयत्रुनद ॥ पर्वविधिरुवनि ॥ पुननपि  
होनागतागी रुत्ताथेमाह ॥ ० ॥ नस्वव वृत्ति ॥ नस्ववहानाम ॥ दृष्टागाम्युक्तं गमसजानानना  
यो कं गुणउमधारुवनि ॥ गृध्रदेवविषमनामिषु वन्दहानावलिगिषु सोम्याय ॥ जगत्स्वरूपस्य  
पृष्ठाकिशुभमधमरुवनि ॥ वात्यरुहानैतिगि ॥ यदिव्याहारा विपतिना होनागतिगुह ॥ जग

\*२३ वानरुल ३

उरुगुणविहीनारुवनि ॥ प्रतर्द्धकरुवनि ॥ समनामिषु वन्दहानावल्गुनं यथापापानारुवनि ॥  
नदाजानामहाशमवलाथेहीनारुवनि ॥ विजगाश्र ॥ विषमनामिषादि ॥ यहानावल्गुनं सोम्य  
ग्रहाणां रुवनि ॥ गदपिजानामाद्ववकान्तिरागमधामधुववाक् ॥ हिनरुवनि ॥ मृगवदगीग्रहाव  
रुत्ता ॥ नमथायथाग्रुवद्वरुमारुवनि ॥ गथागथारुलवद्वरुवक्रुवा ॥ इकाणवल्गुना वल्गुना  
वन्दस्यरुलदर्शनार्थेमाह ॥ कम्मानरु गुणमात्ममूहद्वकाणैवन्दानागरु ॥ इमिहा  
ल्पगुणं वानि ॥ बालाशगायधव उग्रनजाणुअषु निष्कृताकिरिमुगुनरुलमाद्व  
॥ भ्रामीयडकाणवैलि यदा वन्दमा वावलिगारुवनि ॥ सुषवा ॥ गत्वालमिगस्यडका  
णववलिगारुवनि ॥ नदाजानस्यैकल्याणरूप ॥ पगसुगुणरुवनि ॥ आत्मयडकाणमिगड  
काणवलिगा जियाद्वकाणवलिगा वन्दमसिविवान ॥ यस्माद्वक्रीमनगन दधिनाथगु  
णकवाटगीमी ॥ यस्मिन्द्वकाणैवन्दमावावलिग ॥ नस्यथापियति ॥ मयदिवन्दमसि ॥ मिश्र  
रुवनि ॥ जदाजानस्य मधमरुपा रुवनि ॥ गृध्रडकाणस्वामि वन्दमसाधिरुवनि ॥ नदाजा



म  
प  
नी  
उ  
र

मानयगुणहीनारुवति॥ वाखाइनायुमिहादि॥ वालडकाणरुवन्दममिजाग॥ तीरुडशारुव  
ति॥ उडनायुषडकाणरुवन्दमसि॥ हिन्नामानमत्तकारुवति॥ वन्दस्यदडकाणरुवन्दमा  
ससिनागुनरुत्तकारुवति॥ गुनदानकण्ठयर्थ॥ मण्डुडकाण॥ गल्लुवन्दमसिजागोरुमाधेगी  
लारुवति॥ गालीअडकाणरुवन्दमसि॥ चालादिडकाणरुवसुरुवति॥ रुलनयमपिवकुर्य॥ ग  
गुवालडकाणी॥ दृष्टिकाद्यादिनी या, मीनरुनीय॥ उडमनायुषडकाणः॥ मषाः  
घाहनीयो, मिथनरुथा,॥ सिंह, द्वितीय॥ पनडुनायुषगडकाण॥ मिनदिनीय॥  
सिंह, उल, लनीय॥ अमयय अलिन, माधम नगानो उद्योवीदीदिम, वदम नगगय॥  
मगलिपूर्वोनिगकप्यनिगनोपनिमो अलिनरुसकयग घुद्व॥ मधमुनाममधयाविरु  
ड॥ दृष्टानुमयनिय क्रिथि॥ नूवापिगुणदायान, रुथागडकाणरुवन्दमसि॥ रुल  
दृष्टामूरुवा॥ मषादिसखद्विजिनवां सवामागखनूपमारु॥ विरुनार्थमारु॥ गनारुकरु

नवीसरुल॥  
ति॥ वन्दमषनवीसकक्रागल्लनसागरुवति॥ पर्वदृष्टनवीकल्लवन्दजागानाकारुवति॥ कनान  
वीसवाळुजागः लीवः पूरुषापूनी पावान, दिनारुवति॥ उलनवीसकक्राग॥ सूतः स्यामयी  
यरुवति॥ दृष्टिकनवीगकजाग॥ अरुहानवादिषगनंविनाषयं जागाना डागदिरुवति॥ मक  
वींजागानापापारुवति॥ अमूजागाना, द्विअरुवति॥ मीनांजागाना, मधनवृद्धि, कागनखराधारु  
ति॥ मीननवीसल्लुवन्दजागाना, द्वि  
जागानापूरुषा॥ यधनान्ति॥ वल्ल  
जागानागीरुवति॥ पर्वदृष्टल्लुवन्दजागाना॥ रुगपडुजा॥ मसंयगाला॥ नांखामिरुगति॥ प  
र्वजागानापूरुषा॥ नासिवद्वादगीगाना॥ यानि मषादिळुवन्दमसि॥ रुलाना, रुदिनानिचलाना  
धगिन्यादिजितायाव॥ मषादिद्वादगीगानागस्यवकुर्यानि॥ राम, सानिषाः स्वनिमंगकल्लथा  
रुलमारु॥ ०॥ जायानिगान्ति॥ जायानिगाना, स्यासंयुक्त॥ वलविडुषन॥ सत्ययक॥ वल  
पाण॥ उषमंजागमलवनोसखउदानवान्॥ पर्वयक॥ नंजागिसारुयुक्त॥ ग्रादिनीपूरुषा॥  
रुदिनीसरुल॥ २



असुमिद्विक्त कार्यकर ॥ नणयक्र ॥ अऊरामखरागमैमखविंशंगकरुआन ॥ चर्वविष्णुवति  
॥ योगीवापिपीठीत ॥ मन्त्रस्ययवति ॥ यस्याविषम ॥ कुरानखराव ॥ अन्यादान ॥ पनदामयक्र ॥  
इःखिइःखित ॥ पनिकुन्दयगा ॥ गृहादियविवाययक्र ॥ मलिनः मनापत ॥ लुफकावा ॥ चर्ववि  
षः खविंशंगकरु ॥ ० ॥ स्वाङ्गन्ति ॥ खविंशंगकरु ॥ गुनाङ्गानि ॥ पनयगा ॥ शुषव  
दिरि ॥ चर्वदियक्र ॥ नजावानः ॥ न  
यक्रवात ॥ निरखाने ॥ उद्यमवान ॥ रागवान ॥ म  
मिथा ॥ धर्मावनणदक्र ॥ वषाः पण्डित ॥ विवाङ्ग  
सुयक्र ॥ अर्थनपनयक्र ॥ सारुसयगा ॥ असुनिदि  
न ॥ कायेकना ॥ अरिमान्यावागियक्र ॥ चर्वविषः गगिअवृषखविंशंगकरु ॥ ममिरुवति ॥ शुका  
स्यखलिगंगकरु ॥ खविंशंगकरु ॥ ० ॥ वरुसद ॥ पुत्रेकमरिसस्रधन ॥ वरुसक  
गुप्तभाम्य ॥ रायविनूप ॥ वरुपुनसुखाभाम्य ॥ रायधिनूपः संयुक्त ॥ नीक्र ॥ नीवखराव ॥ क  
नरुस्यर्थ ॥ सल्लिगवपु ॥ सारुनदरु ॥ सुयकीर्णदिय ॥ वृन्दियदायक्र ॥ चर्वविष ॥ अखविंशंग

गकरुङ्गानि ॥ ० ॥ गुरुन्यामिनि ॥ मंगमनकरुङ्गानि ॥ गकरुङ्गानि ॥ अर्कसुनारुवति ॥  
वन्दमसि ॥ सुव ॥ विनकावि ॥ जोरविंशंगकरु ॥ विषमाद्वः गील ॥ वन्दमसिवधका ॥ दिम  
॥ जीवविंशंगकरु ॥ वन्दमस्याद्यः ॥ वृषविंशंगकरु ॥ सुखिरुवति ॥ वन्दमसि ॥ पण्डि  
न ॥ रुवति ॥ शुवविंशंगकरु ॥ नवात्रारुवति ॥ सारुणमज ॥ वन्दमसि ॥ सद्येकनपायवृत्ति ॥  
उन्नवविज ॥ उन्नवगुकारुगमः प  
याधायडनुविसतिमिनि ॥ ० ॥  
रुसयागमना ॥ समसुदग ॥ वपिरुल  
गलधमालकावधन ॥ मलिनरुलनायनः ॥ अगिल्यालमादुन ॥ वृत्तिनिर्गदितायागमः ॥ सार्द्धे ॥ प  
सुनिरुनारुसा ॥ नियतरुकाश्वित्या ॥ अगसमसुदग ॥ पि ॥ धनविनहिनार्थदिन ॥ पारवण्डि ॥ मार्ग  
वयन ॥ वासद्वः ॥ अयकारार्थ ॥ अर्थदिन ॥ पारवण्डिवा ॥ चर्वविषयग ॥ राया ॥ गुरुवति ॥ अ  
धवौमालका ॥ विधन ॥ मलिन ॥ रुलनायन ॥ अगिल्यालसुदुन ॥ विधनार्थदिन ॥ मलिन ॥ मला



पत्रसन्निभः ॥ मूथवामलिनः ॥ वासाः ॥ लज्जायुष्मावा ॥ ज्ञानार्थनः ॥ ज्ञानविवर्धिनः ॥ कुशीली, कुशिली  
 कर्ला ॥ कलासः ॥ कीयाश्च नृदामः ॥ मूठनाचमणगील ॥ यद्यपि स्वकृपाण लसः ॥ नथ भविता  
 निद्या क्राजन किय ॥ मगनमंजनसंयादयिउ ॥ मूसद्वर्त्ताधुन ॥ एवं विष्णोमालवास्वायामांभाभा  
 रुवति ॥ एवं स यूसुसंस्वाया ॥ यमं भागानाननलस्य रुलं यास्वाह ॥ निग्रीदितायागमं ॥  
 दि ॥ एवं रुलं ॥ सहनारुमास्वाया ॥ गमनिग्रीदिताउक्र ॥ एवं समलदगमश्चिखलपडा  
 रुया ॥ यद्यद्यवसकं ॥ नथापिय ॥ सां कालउक्रामथावडिगद्वसुखिवि ॥ ननवव रुल  
 ॥ ॥ यसां कालविश ॥ गममाकं ॥ तसमलदगमस्वपिदं ॥ यथाठदगिषं नसः ॥ यगारु  
 विष्मगीति ॥ एवं नारुसथागम ॥ दध्मथावास्वाक ॥ मूसिनु ॥ दध्मथनवक्रवं ॥ पद्विपनिष्ठापनि  
 ज्ञनं ॥ नद्वयन ॥ दगलयागमद्वि ॥ यागया ॥ सनकालसुखननालि ॥ नथदलयागं नद  
 ग्रहयथागमजाउल्यकामपल्लननाम्हाव ॥ मूथदलयागमयुष्मकं ॥ नदादलयागरुलमं

वरुवति ॥ कृत्तियागः ॥ द्ययथा ॥ पृष्ठकं ॥ नदाकृतित्यागुरुलं रुवति ॥ तथा कृत्तियागः ॥ सं  
 स्वाथा ॥ पृष्ठकं ॥ तथा या कृत्तियागुरुलं रुवति ॥ यस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥ अन्यानि  
 पूर्वमूकालतिहाय ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ विहा रुवं यन्यविमि  
 शिताः ॥ तस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ तस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥  
 पल्लनं रुवति ॥ नदाशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ तस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥  
 द्यवा ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ तस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥  
 ननाशयथागनामधवा ॥ नदाशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ तस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥  
 स्वाथागनामधवा ॥ तस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ तस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥  
 रुवति ॥ नदाशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ तस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥  
 ननरिह्यग ॥ नदाशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ आशयथागनामधवा ॥ ४ ॥ तस्मात्तु स्वाथागनामधवा ॥ ४ ॥



यः सावकाशमन्विधीनवाधकः ॥ अथ कर्कशागिलगुगर्गः ॥ अधिष्ठत्ययानपवणसक्तं  
नयामागगनयुक्तं ॥ तदधनायक्यम् ॥ तेषां कृत्यविशालिमाकृत्यागः ॥ वि  
सक्तिसंभववनाहमिति ॥ अहिरिणा ॥ किं दुर्गयाम्माधमज्ञायागयागः ॥ अहिरिणा  
॥ लग्नवदुर्ध्वजिदासर्वयोरुत्तरवर्गि ॥ दशमगवदुर्ध्वसफ ॥ आवरुक्तः ॥ दशमगव  
र्वानन्दः ॥ अहिरिणा ॥ निर्विगतिः ॥ सर्व  
थागनासफविशालिमागः ॥ सर्वसाधुगर्गः ॥ अहिरिणा ॥ दशमगवदुर्ध्वसफ  
नि ॥ अहिरिणा ॥ निर्विगतिः ॥ अहिरिणा ॥ दशमगवदुर्ध्वसफ  
कल्याः ॥ ३० ॥ अहिरिणा ॥ निर्विगतिः ॥ अहिरिणा ॥ दशमगवदुर्ध्वसफ  
फविशालिमाधमज्ञायागयागः ॥ अहिरिणा ॥ दशमगवदुर्ध्वसफ  
हिरिणा ॥ अहिरिणा ॥ दशमगवदुर्ध्वसफ

कीयते ॥ तवत्संस्वामक्षमाशानसन् ॥ गदवायाथनान्यसन् ॥ गदधनकाश्चरुनाणिन्यसञ्चादिव  
 ल्यसंस्वा ॥ ० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ अथयथमस्तनसम् ॥ गंशकनविदश्च ॥ १ ॥ विकल्पा ॥ अथैतः  
 सकृदिद्विरियस्तनस्तनस्तन ॥ स्वाधिरिक्तं द्विकनविरुद्धं लक्ष्मि १ ॥ विधिकल्पाः ॥ गदिक  
 तीस्तनस्तनस्तनसंगुणस्तनस्तनस्तन ॥ स्तिक्तिकाणविरुद्धं लक्ष्मि २ ॥ गदिकल्पा ॥ गदिक  
 वत्तानः संगुणस्तनस्तनस्तनस्तन ॥ स्तिक्तिकाणविरुद्धं लक्ष्मि ३ ॥ गदिकल्पा ॥ गदिक  
 स्तिक्तिकाणविरुद्धं लक्ष्मि ४ ॥ गदिकल्पा ॥ गदिक  
 स्तिक्तिकाणविरुद्धं लक्ष्मि ५ ॥ गदिकल्पा ॥ गदिक  
 स्तिक्तिकाणविरुद्धं लक्ष्मि ६ ॥ गदिकल्पा ॥ गदिक  
 स्तिक्तिकाणविरुद्धं लक्ष्मि ७ ॥ गदिकल्पा ॥ गदिक  
 स्तिक्तिकाणविरुद्धं लक्ष्मि ८ ॥ गदिकल्पा ॥ गदिक  
 स्तिक्तिकाणविरुद्धं लक्ष्मि ९ ॥ गदिकल्पा ॥ गदिक  
 स्तिक्तिकाणविरुद्धं लक्ष्मि १० ॥ गदिकल्पा ॥ गदिक



[illegible][illegible]



[illegible][illegible]



॥ १२३ ॥

श्रुत्यादवस्य नाशरुवति ॥ मृगमन्दः स्यादि ॥ मकवल्लभमन्द ॥ सिरुजविदधर्मा वायगनः ॥  
 गगोकाशः ॥ चन्द्राङ्गनका वृषः शिवः ॥ नरवज्रात् मकनालः ॥ नरवज्रात् ॥ मीनवन्दः ॥  
 मिथूनराम ॥ कन्यायावृषः ॥ पञ्चिनिजीवः ॥ प्रवविषयागनातः ॥ पञ्चणयनिरुवति ॥ पृग  
 स्वमनस्वास्तु संपति ॥ नाशसवष्टयगुणयभागवस्मिनः ॥ कनाजथा ॥ नृधनार्थनाशथाग्न  
 यमाह ॥ ॥ रुथसंख्योक्ति ॥ इदं  
 गलाध्वनवासनाया मीनलभ्यस  
 विद्यादि ॥ कनालभ्यसवृषपञ्चमल्लगनयनाज्ञानका वृथस्क ॥ यनगतिनाश्चरुव  
 न्ति ॥ नरवज्रात् कनालभ्यसकवृषः ॥ मकनस्कानिश्चयनाज्ञानका पनूपनस्क ॥ चन्द्राव  
 सिताः ॥ मदानकाज्ञानका लभ्य नाशयजवाधुवति ॥ प्रवनाशः ॥ गमसुप ॥ कजतथागमा  
 रु ॥ सवः ॥ नाजनीनमवृषः ॥ उपयगनिसति ॥ उदयल मीनवन्दः ॥ नृधनार्थ ॥ उरु

[illegible]



五

[illegible]

नाकारुवति॥ अना कनया धनवान्, अन्यना कनया धनवान् ॥ मारु ॥ ॥ स्वर्गं गच्छति ॥ लग्ना उच्च  
 वृद्धे ॥ शुक्रः सत्र स्वर्गं गच्छति ॥ नवमं गच्छति ॥ दशमं गच्छति ॥ अत्र गच्छति ॥ तत्र गच्छति ॥  
 अरु लयः ॥ उल्लेखनमाः ॥ गणायुक्त्या यथा संख्यं सर्वे नव, मष, कुम्भ, धनं द्वे नरु ॥ प्रवर्गमा  
 रु ॥ ॥ मधुन नांति ॥ दशमं गच्छति ॥ प्रकाशं गच्छति ॥ लयं गच्छति ॥ द्वितीयं, वृष, राम ॥ वृद्धे  
 अर्के शुक्रं ॥ प्रवर्गं विधेया गच्छति ॥ अयुक्त्या नाकारुवत्य ॥ अन्य अरु लयं धनवान् ॥ वक्र  
 सितादित्यादि ॥ राम, सोन, लग्न  
 दशमांश्च ॥ प्रकाशं गच्छति वृष ॥ प्रवर्गं विधेया गच्छति नाकारुवत्य ॥ नाकारु लयः  
 नवान् ॥ अर्थना कनया गच्छति कामिन कालं नाकारुवापिरुविष्यति ॥ ० ॥ नक्षत्रानां धर्मादु  
 ॥ कामं गच्छति ॥ थायुक्त्या दशमं गच्छति ॥ लयं गच्छति वाक्यं, सत्त्वनिनी, पापकष्टादशं गच्छति ॥ अन्य  
 गच्छति कालं, स्वर्थं ॥ तत्र गच्छति नाकारुवापि ॥ रुविष्यति ॥ अथ लग्नं दशमांश्च गच्छति ॥



न  
लि  
रु  
१०८

नदाजानकाल यदावलः सुधी उषवलः ॥ नदा ननदगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन्  
ननदगम कालं वा नवसा सर्ववलवान् रुवति ॥ नदा ननदगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन्  
दनाजस्यापि उमवाले गनगुरुल्ल निवगुरुल्ल नवयाननदगम दशवदिमन नदं गमयस्मिन् वलवनी  
नाजहवनी वाच्ये ॥ विवल्लस्यादाय नदवयुतान् नपसं सयगुणनमाकोपि ॥ नयवमाग्नि ॥ ल  
गुल्लः कर्मणा वास्या दधवापल पियः ॥ सन्धान नदं गम कालं बोनाश्च दः प्रवलाय  
थ ॥ नीवा निगुरुल्लस्य दगम त्याष वलस्यव ॥ चक्रिवल विहिनोस्य नमाकप नशया  
न ॥ लोमिना सवनदस्य स्वामिनो जना नार्थमाह ॥ ० ॥ गुनवति ॥ गुन वक्ष सिगानीः ॥ नन  
तमल गल्ल सकमल्ल गनि श्व ॥ दगमल्ल दशवदिमन नदं गमयस्मिन् सवनदगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन्  
विहिनस्यापि ॥ यनजगधिज्ञागमवाफिरुवति ॥ कययुक्तं ॥ यदादिना ॥ धी दगम ॥ ननदाल्ल वक्ष  
न्याववल्लन ॥ उक्तं ॥ वडैर्गुरुवमस्यार्द्ध सिगोरुवति ॥ कथं ॥ वल्लस्यनि ॥ पनलि निरूपे पना ॥

अपयननमवः ॥ गुन सिग वक्षनालग्न गुन सिगवधलन ॥ नषी गुरुल्लस्य गनि विहिनदश ॥  
गुरुल्लस्य गनि विहिनदश ॥ गुन गुरुल्लस्य गनि विहिनदश ॥ यस्य कन्यगमल्ल रुवति ॥ नववल्लयुग ॥ पापय  
लाश्च पापकुरुल्ल यस्य कर्मा निरुवति ॥ गसवध ॥ पुलिना नदं गम कालं बोनाश्च दः प्रवलाय  
पगवति ॥ अर्थल्लवति ॥ ननवगमग्निः ॥ पापकुरुल्ल गनिः पापः कन्यल्लः सोमनासिनि ॥ सवल  
यस्य जनास्या दशवदिमन नदं गमयस्मिन् सवनदगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन्  
कष्टकादीर्घेति ॥ लग्न विहिनो पीठपादि त ॥ गैर्दशवदिमन नदं गमयस्मिन् सवनदगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन्  
लिहिरुवति ॥ नदापुथवगक्रिण्णुस्वाया ॥ गमल्ल रुवति ॥ नदाथाल्ल गनि विहिनदश ॥  
गुरुल्ल रुवति ॥ नदा दशवदिमन नदं गमयस्मिन् सवनदगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन्  
वति ॥ नदं गमयस्मिन् सवनदगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन् सवनदगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन्  
गक्रिनामया गल्ल रुवति ॥ दगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन् सवनदगम कालं दशवदिमन नदं गमयस्मिन्







॥ ॥ माययथागमजानानोपकावडः स्वापुपुरुवति ॥ नवंडलया मादयजानानो रूलवाराव्याह ॥  
मन्थायागमाययथागमश्च समकालं भूयद्वयं ॥ न्माययथागमनिवाकवणार्थमाह ॥ ० ॥ न्माय  
यागमश्च ॥ यजानायागमाययथागमश्चरुवति ॥ ॥ न्माययथागमिमिथितमस्तुलं न्नययव  
ति ॥ मन्थानामिथितमाययथागमस्वरुलं ययवति ॥ मन्थानामिथितमाययथागमस्वरुलं य  
यवति ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥  
र्थनाकावति ॥ यजानानशील ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥  
मर्थनाकावति ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥  
व ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥  
वा यजानानशील ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥  
रुवति ॥ यजानानशील ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥ न्माययथागमविहृद्वयं ॥ ॥

मनुजीना इत॥ अर्ययतेनः स्वक्या दृष्टन॥ कलहद्वन॥ कलहगाल॥ पर्वविष्णो विरुमाकथा ग  
जानारुवनि॥ ॥ शृङ्गाटक विरेणपुत्र॥ कालिनसूरवी॥ वयसा नृसूखेत्यथ॥ पर्वविषः शृङ्गाटक  
याजागारुवनि॥ ॥ भूपवन्नाग्नि॥ लग्नपञ्चम धर्मस्तथागः शृङ्गाटक दस्मन् विद्याधन सुखि  
नां॥ जन्म मरुत्या कठराषर्ष॥ क्षत्रियदलाखा रुताकृत्या जागारुवनि॥ क्षपीक्षुरव नि॥ वज्रयवपद्म  
वापीजागानां स्वनपमारु॥ वज्राष्ट्र वसेस्त्रिभुक्ति॥ ॥ अत्यसुखित॥ सर्वमस्त्रिनश्च  
रुवनि॥ साद्यसूरवीयोवनइः खेगा दृढदे॥ पुनभवसूरवीरुवनि॥ गुरुग॥ सध्वजन  
पीय॥ अतिश्रेष्ठ॥ अतिवसंगामपीय॥ पर्वविष्णो वडाकृत्या जागारुवनि॥ ॥ सायान्त्रिणात्रा  
थयवसुखका वयानः आसान्त्रिकः श्व॥ वयोक्तः सूरवीरुवनि॥ मूर्कः शब्दाध्यमव्यतार्थायः  
॥ वयामप्यगुरुवनि सार्थः॥ पर्वविष्णो यवारख्या याजागारुवनि॥ ॥ सामावलीव॥ वतनि  
यमसपना वयः पीयविनहित॥ परुषाध्व॥ चक्रिविति प्रीत्यैः॥ स्वप्नादिहिर्बिमहित॥ अस्या



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

दायस्यसनमममकूठयतिनिर्जिताधि॥माज्ञानसुखाःपाठ्याःपतन्ति॥महानाज्ञाधिनाशरुव  
 ति॥नपाज्ञानार्थदेजागमदाज्ञपूजनीयावा॥एवंविषयकारकायाःमाज्ञानारुवति॥॥आद्यनित्या  
 गविंशतिरुल्लंजानानांवाखादू॥विष्णुमहवयनिपूजः॥यद्यगमिनस्य॥॥निपूनाः॥सुत्रार्थे  
 ॥गीतपीयथ॥एवंविष्णुविनखायाःमाज्ञानारुवति॥॥दामपागकदाचश्चवलज्ञानानाल्लन  
 पमाह॥॥दागाहन्ति॥जनया  
 पकायमक॥पशुपः॥पृथुनामि  
 धनाहून॥विशालमरुत्यवत्॥धनाहूननगीत॥कनताष्टगन्धर्ववन्त्रिश्चयक॥एवं  
 विषःपागारवायाःमाज्ञानारुवति॥॥कदाचनः॥द्विक्वन्॥वहूपथाश्च॥दृषीकन॥क  
 र्षक॥सुवहूपथाश्च॥पदश्चपति॥वहूपथाश्च॥एवंविषःकदाचनयाःमाज्ञानारुवति  
 ॥॥शूलद्विगा॥वधुवि॥धनश्चशूल॥शूनः॥सुसपीय॥कनपलासाक्षिगमिन॥वधुवि॥



गणनका नि ॥ सगर्गं पयमर्गवा ॥ विषाणा दर्थह्रन ॥ पर्वविषः गृलाश्वायाज्जगता रुवनि ॥  
 गनिभ्रनवाङ्गागनरुल ॥ पनविरुव ॥ पनविरुव ॥ पनविरुव ॥ पनविरुव ॥ पनविरुव ॥  
 पलाका ॥ पनाङ्गिताना ॥ गुरुगस्य दीना वलाका ॥ वरुकाय द्धनी ॥ नाना विधाना विपार्ण द्धनी  
 ॥ गणसः वरुजनपीय ॥ वरुस्वामि पर्व ॥ ॥ रामचकाङ्गरुल ॥ उत्सारु ॥ उत्सारुवान ॥ मोर्य  
 वान ॥ आरपावान ॥ नषयीय ॥ प  
 रु ॥ ॥ वृषचकाङ्गरुल ॥ पद्वी  
 ॥ स्यान्वाद्या ॥ दिक्कादिषूष्ट ॥ द्धनी  
 पनाना राजने ॥ पमोराग्यमोकोया ज्ञेता ॥ सुख हाङ्गे ॥ शुभानरुल ॥ न्यपाङ्गनी  
 नाङ्गाविन ॥ ॥ शुक्रचकाङ्गरुल ॥ कामिल्लाल ॥ अशक्तकामा मक्र ॥ ॥ वरुप  
 नीरुनीविन ॥ विषयापरा ॥ सद्वादिद्विधाणा खाद ॥ ॥ उकाणरुल ॥ अथाना उकाण

[illegible]



शनदण्डरुले॥ अरिमुरव ड शन॥ अमनरुलेन कू विविव कू जिविरु हिलो हिना न्यम  
 नाजि धामय निव पु कू येय कू॥ अयमम वृ गाय सु रागा॥ के धिन॥ अमनरु ड काण॥ सा  
 य प्प्रा जीवले य॥ वृषय थमस्य म्भ क्क नाथ मारु॥ अविम ग्ग ति॥ अश्रिग नून क ना  
 ऊपिल विन्न डारा ज्ञन विला म्भारु न निरुवण नि॥ अरिवा डु ति॥ अरिम रवन वा  
 निना गी सु ड ड वृष वृष य म ड का ण स्य रूप॥ अम सु ड का ण॥ यु क स म्भ  
 य॥ वृष द्वितीय स्या रु॥ ॥ क उपा न ड ड ति॥ क उपा न्य ग रु धन क कू॥ क  
 दाव धान्य व म्भ मा क ना ना निला डील सक ना सहि ज क ग ल ड गि स्थि ने॥ सु व म्भ ड रु ति  
 माय नि ड ल्य॥ माय नि वृष रु॥ व ड ड ला॥ न सु ड स स क व क ड ड म्भ रु न॥ अय नि रु द्या  
 न॥ पि चा सा य र॥ अजा व ड न क ग व रु॥ म लिन व रु॥ अमनरु ड का ण व ड ड का  
 ण व ध स क स॥ वृष रु नी य स्या रु॥ ॥ द्वि य स म का यः पा णु र ड वृः ग ल रु मा धि पि ड  
 लः रु ति॥ अविम ग लो मा वा ड ल वि म वृष रु व न स्य पा न ग ना य॥ सि ड स म य

कायः सा रु गा न॥ य न रु रु सि स नि र॥ पा णु र ड वृ॥ पा णु रा ड द्र य स्य ग ल प म्भ मा धि॥ वृ  
 रु न पा ड॥ य नः स ल रु स ड स पा ड॥ पि डील म्भ रु ति॥ क पि ल ग नी य॥ अविम ग लो मा वा  
 ड ल वि रु॥ अविम ग वा ड ल वि रु॥ अविम ग लो मा र्थ वा ड ल वि रु च स्य क य वृष ना गि  
 ड वा रु ग न॥ रु नी य ड का ण ड ड थार्थ॥ अमनरु ड का ण॥ ग न ग र स क थ॥ मि थ न य थ म स्य  
 स रु य कू ना र्थ मारु॥ ग्ग ना थ य मि ति॥ ग्ग ना थि न क म्भ स्य ग रिव ड ड ति॥ ना गी सु रु य  
 ण वि ना॥ अरु न का य क न माः ड ना य पा हि ने य ना य ना वि र हि ता॥ ड ड रु न  
 उ रा ड व वा ड ड ड ड स ति ग म स म्भ ना डि रु ग मा ड य थ म॥ रु नी य रु व न स्य  
 मि थ न॥ स्य रु कू॥ व डि ना ग म वा ड ड ति॥ क थ य नि वृष सु ड का ण व ध स क थ मि थ न  
 स्य द्वि ती य स्या रु॥ ॥ ड डान स रु रु ति॥ ड डान ड य व न वि रु ति॥ क व नी स ना रु य  
 वृ रु ग नी॥ व न म्भान पा न ड ड॥ ग ना क ना॥ ग ना का णु नि॥ ना न वा सु नि न द्वा र रु गी ल  
 य य स्या॥ ग रु ग न ना ग रु ग ड ग व रु॥ कू ग ल रु ल क ना थ वि ना क ल ति वी उ क कू



[illegible]

इसके ॥ कर्कट द्वितीय स्यात् ॥ ॥ यद्वा द्वितीयं ॥ मृद्वनि सिरभि ॥ रुणाला गुयका सद्य  
वक्रा ॥ मृद्वनि कर्कट भक्ति न गरीना ॥ मृद्वनि गरीना कर्कट विना त्याको गति ॥ यत्ना  
सद्य कस्य भक्ति समाधिना ॥ मृद्वनि द्वितीय डका ण कर्कट गति ॥ मृद्वनि डका ण लाम स  
कथ ॥ कर्कट द्वितीय स्यात् ॥ ॥ लार्थ निरुणार्थ मरुत्तु वमिति ॥ लार्थ ज्ञाया न स्यात्तु व  
थ मरुत्तु वसर्मे नीकु ॥ नावा रुदः सद्य वेष्टिता मृद्वनि हेमः सा वणी ॥ विरुष नेव  
लक्ष्मी नैयत ॥ विविष्टस्य  
प्रथम न डका ण बाल डका ण  
॥ मत्तलं ॥ मत्तलं विरुक्ता य विरुक्ता मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक  
मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक  
पितृ रतिना त्याका गति ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक  
मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक ॥ मृद्वनि को गत्य प्रक







अ  
वृ  
क  
५३

धनादिमानकृत्तवयसिकायतिमानयानप्रतिनिधिनारककादिबाडवानि॥सुखधूमिदीनि  
मीयक॥परिक्रियति॥लघुसराण्युपकारिविविक्तवन्नि॥गत्यवसापुस्यमल्यविविक्तयत्न॥  
नउलायाःपथमरूपमवनावदन्नि॥कथयन्नि॥अवनरडकाणः॥शुकगनसत्कथ॥उल  
दितीयस्थाह॥॥कलगविनीति॥विनियतिगकलगपनिष्टरुप्रमस्वःयकसं॥यकि  
उल्याननानन॥रूपित॥रुडक्तिन॥पिपासिनश्च॥कलरसलात्मनसाकावात्मज्ञानवि  
जन॥समलीषितिश्रिलिषति॥अथवयकारः॥उलाधनमध्वगत॥  
उलदितीयस्थथ॥अवनरडकाणः॥खगडकाणः॥गतिश्चरसत्कथ॥  
उलेहगीयस्थाह॥॥विहीषयमिति॥वनमृगाविहीषयविद्वति॥कीदृग॥काथ  
नरुवमार्तेनसोवर्णगगगन॥सत्याहवविरुहिधनद्वेष्टायहसु॥गथाकिन  
रूपतन॥किन्नराहवयानय॥अथमस्वास्तुहवधरा॥नमामनूय॥वानराकागाय  
रुवनान्क॥पाडयषवडधसत्कथ॥यश्चिकयुर्वस्याह्यरूपज्ञानार्थमाह॥॥वमुवि

हीनाकृति॥वस्तुमम॥नथरुनलोत्तलकनलविहीनावजिगा॥नारीम्॥महस्यगनाकृत्सम  
यथागकृति॥सुनकजाहनादृष्टासर्पविवर्द्धपाडा॥उगत्रगनियमिगत्रनमामनामाविताकागना  
ग॥वश्चिकराणः॥वर्द्धयथमडकाणः॥अथमुडकाणः॥यालडकाणः॥शोमसत्कथ॥वश्चिकविनी  
स्थाह॥॥सुनमस्वाभिनि॥नाम्नीरुहगृहसुनमस्वान्यसिवाश्रुतिदृष्टिमस्वानकृति॥उगमाव  
नडकासर्पपावकडका॥कडकुरुसमानसरीग॥कुरुमद्यलडकाहवश्चिकमध्वमरुप॥द्विग  
डकाणः॥स्वरुपडधन्नि॥अथमुडकाणः॥यालडकाणः॥शोमसत्कथ॥वश्चिकविनी  
यस्थाह॥॥वथलविहीषीति॥वश्चिकमध्वमरुप॥द्विग  
नाककनमृगस्वकारजपुसर्पवधकागीरुयप्रद॥अरुतिप्रकृति॥मलजस्यवर्द्धस्याकलप्रदग  
मल्लिहिसुनसवमृगपतिर्गिरु॥मल्यगगावश्चिकस्याहगीयस्थथ॥अथकुरुमानिनसिहान  
रडकाणः॥वडुडकाणः॥अथसत्कथ॥वनवर्द्धस्याह्यरूपमाह॥॥मनस्ववर्द्धाकृति॥मनस्ववर्द्ध  
॥यरुपवदन॥अथसमानकाय॥दुर्गसदृगडका॥आयनधन॥दीप्यश्चरहीत्याशमतिव



म  
रु  
हि  
२०

वि॥ कुरुयथाहनि॥ चक्रे यकारानि॥ तथा गपयिष्ये नमस्तस्मै निरुता नर कृतकितवान धन  
स्वः॥ मृद्वं॥ अथ भाषकाः॥ अथाऽप्यसमानरड काणवदुर्थ॥ पद्योयधुडकाः॥ जीवसत्त्वः॥  
दिनीयस्याह॥ ॥ माना रमा वृति॥ मना च तोला डकवि॥ वम्यकः समवर्णः॥ वम्यकः यथा विष्ण  
व॥ रुसस्त्वर्णः॥ नमो गैरवर्णः॥ रुडानमः॥ आगनवि सष तिष्ठ तिडय निष्ठा मय रूपाना तिष्ठा  
रुनाति विरुपासम डरत्वा नि सभा  
यडकाः॥ अर्थः॥ पादिका डकः॥  
स्याह॥ ॥ कवी वृति॥ कवी नरा  
सवर्णवम्यकै॥ पद्यविः॥ गप॥ नना दृग्गोला कान्ति यस्या॥ वरासना नवर्णः॥ डय विष्णुः॥ दधुधरः॥  
दधुधरः॥ का सपकारानि वसु विः॥ शाषा नि॥ तथ वकाः॥ ध्वजमिकाः॥ सत्त्वः॥ डडु रु स धरा यति॥ क  
हिने म गवमा॥ नमो गस्यामाः॥ सुनीयड काः॥ रुय॥ वमनरड काः॥ सा यथा॥ मरु सत्त्वः॥ गव  
स्यैक यथा मस्य स्य रुय गह॥ ॥ याम विन वृति॥ याम विना॥ याम स॥ म क री वम यथा॥ म क र

उच्यते॥ सुकभा वागाह॥ गलायस्य समानसदृशं नीरयस्य॥ याजकयन वलिवद्धो याह  
नडाह कयसिद्ध॥ यन पक्रिण गृहवतनं यसिद्ध॥ यमन मय डय वपाक व वन्य सिद्ध॥  
यमन मय यथा विधु नि॥ गैडमद्व॥ विकृतानन॥ मकरस्य यथामड काः॥ अथ य रुषा  
ड काः॥ यव धानि च॥ अथ निगुह॥ सुकरस्य मान गरीया सुकर गस्मात्त्व ववडुः॥ पडगान  
ग्यर सुकय॥ मकर द्वितीय स्याह॥ ॥ कला रवा रुहः॥ कला स्वरि ह्ना धरि मूद्वान डा  
नागाय रिह्ना॥ मकरु ला पना  
जाणिना नाविधु निवमृ निमार्ग  
स्याया या मृ पद्वि द्या॥ डकाम करस्या म॥ पद्विनी यड काः॥ यु क स का य॥ हनी य स्या ह  
॥ ॥ किन्नर वृति॥ किन्नरा यम नन॥ किन्नरा दृग्गोला वपा नय॥ नन सदृग्गोला नयस्य क  
म्वलः॥ क म्वल न सवर्णः॥ नन वाय कववः॥ सम विन॥ नन सवा धार वाया धनुः॥ कवय सन्नाह  
॥ नसय कः॥ अरु नव विविधं यड हलि॥ मारुति॥ स्वर्वस्व वी सक्क॥ यो धि मे मकर गानि







[illegible][illegible]



अ  
व  
५  
३

दि॥ कीटाविश्विका॥ तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
मलंजनं गावाद्युक्तिकविगा॥ जीवदृष्टेष्टनडा॥ तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
॥ गनिश्वरवैदृष्ट्याङ्गुलीनाङ्गुली॥ तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
मि॥ पवित्रमकरं तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
सकृन्मयाष्टंति॥ उलमाष्टंति॥ तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
नयसवित्तार्ज॥ जीवदृष्टेष्टनडा॥ तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
वक॥ वनं द्यामन्यतमनदृष्टेष्टनडा॥ तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
० पनताम निश्चान्ति॥ वरं विलप्यति॥ तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
ष्टदत्यहीसादिव॥ जीवदृष्टेष्टनडा॥ तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य  
द्वयमास॥ जीवदृष्टेष्टनडा॥ तस्मै वन्दुमसि॥ वषट्पृथग्भूषिणारुवति॥ द्वापि न स्य रुवति॥ य

[illegible]



म  
रु  
श  
रु

वर्जितः॥ विकलनयनाहिनदृष्टिः॥ निघृण्णदधानहिता॥ उर्वगुणालगुल्लस वि  
नमिजाता रुवति॥ उर्वगावगुसर्चलगुल्लसवितनिसामानुहल॥ कथमप्यसिंहक  
केटका नामनयनमलगुगता॥ द्वायडा रुवति॥ गडाधर्मा कुरुलनरुवति॥ वश्रमा  
रुवति॥ निमिनययथा॥ सिं  
हस्यनिबभुल॥ गस्मिनल  
रुका॥ गस्मिलगुगङ्गायतङ्गी आदित्यवपडाक॥ यस्माद्वृण्णरुवति॥ लक्ष्मिद्वितीयग  
र्कहृदिवावद्वेष्टानृपद्वगधनागजङ्गावसुगगीरुवति॥ लक्ष्मिद्वितीयवउर्थपक्ष  
मयधरुनरुस्यार्कस्थरुलमाह॥ ॥ मतिविकसवानरुनीयः॥ मतिमानव  
दिमानविकसवानपराक्रमयः॥ सुनीयस्मानमार्कः॥ उर्वगुणालगुल्लस वि

येष्विदमात्मनस॥ असुखादः॥ उ॥ वउथर्कधसगाधनवर्जितः॥ दन्दिमित्याथ॥ वि  
कीर्णययमरुधर्क॥ वलवानवाणी॥ गङ्गाजीवश॥ विद्युत्त्रिनश॥ षष्ठमर्कलक्ष्मसफमा  
दुमनवमडगमप्रकादग॥ द्वाङ्गल्लसवितनिसामानुहल॥ ॥ सुद्विगतः॥ वपि  
रुवाः॥ सु॥ उ॥ द्वायडा रुवति॥ गडाधर्मा कुरुलनरुवति॥ वश्रमा  
रुवति॥ निमिनययथा॥ सिं  
हस्यनिबभुल॥ गस्मिनल  
रुका॥ गस्मिलगुगङ्गायतङ्गी आदित्यवपडाक॥ यस्माद्वृण्णरुवति॥ लक्ष्मिद्वितीयग  
र्कहृदिवावद्वेष्टानृपद्वगधनागजङ्गावसुगगीरुवति॥ लक्ष्मिद्वितीयवउर्थपक्ष  
मयधरुनरुस्यार्कस्थरुलमाह॥ ॥ मतिविकसवानरुनीयः॥ मतिमानव  
दिमानविकसवानपराक्रमयः॥ सुनीयस्मानमार्कः॥ उर्वगुणालगुल्लस वि



天  
 下  
 萬  
 物

[illegible][illegible]



म  
७७

दिनकयतिमान्यसंस्तु॥ हृतीयवउर्थयश्रमसुखसुखमा॥ इमदगभेकादगद्वोडगव  
याचवादिह्यस्यरुलान्यहिहिनानि॥ रामस्याधिवाशानि॥ रामवार॥ ॥ द्विदि  
त्यादिवृषलमगगविद्वान्वमि॥ द्वितीयधनी॥ हृतीयप्रकणखल॥ वउर्थयश्रुग॥ प  
इममग॥ वषष्टग॥ सुकमपम॥ अष्टमविश्वानुपययताकैवत॥ नवमदगम  
कादगद्वोडगवयाचकस्य  
रुलान्यतिनानिवाशानि॥ वधवार॥ ॥  
॥ द्विद्वानसवाकः॥ कपण॥ सुखिवयीमानग  
स्त्रीसधनः॥ सत्वार॥ ॥ खलमश्रीवकम॥ गवि  
लगात्॥ लग्नसुश्रीवविद्वानपश्रुग॥ द्वितीयगगनवावा॥ हृतीयकषण॥ मदाग  
॥ वउर्थसुखी॥ पश्रुमधीमानवद्विमान॥ वषष्टग॥ सुकमपितृराधिक॥ पितृ  
सकागभनुपयनादिसिखीक॥ अष्टमनिय॥ नवमगयस्त्री॥ दगमसयन॥ प्रकादगे  
सुत्वार॥ कादगेथल॥ कूनवष॥ विलग्न्याग्नमकुमल्यथ॥ वरुस्यगिवार॥ ॥

लेमदिस्ययुक्तस्यरुलामाह॥ स्मरनियूनः॥ सुखवायविलमेविचकसहा॥ ॥ स्म  
रनियूनगकामंजसल॥ सखवानवविपः॥ युक्तल॥ गगनकातरुवति॥ कलरुपिय  
॥ स्मरनयुग्यसुखयुक्तेवति॥ गुरुवदग॥ द्वितीयहृतीयवउर्थयश्रुमनवमदगभेका  
दगद्वोडगव॥ याचववरुस्यनेः॥ रुलान्यहिहिनानि॥ तानवयुक्तस्यवक्र्यानीति॥  
अथविणीस्यात्॥ वग्नयस्य  
सुनरुवति॥ अधिकयडवि  
रुस्यगनिश्वरस्यरुलमाह  
इनवसमा॥ हृदमलिन॥ मिश्रवपिठार्क॥ सविरुसलमथलसवान॥ गुरुः॥ स्वश्री  
वलेन्यपनिसद्वग्नममयनय॥ सुविद्वान्मधुअदिनकनसम्य॥ अष्टकाथेग॥ अष्ट  
थानिनित्यद्विद॥ रागीयाधिर॥ मदनवसग॥ कमाधिन॥ अष्टगमलिनमलायन  
॥ हृदक॥ ॥ मिश्रवपागल॥ वाल्यवाधियोगिन॥ अष्टलका॥ अष्टगमलिनमलायन॥ अ



म  
रु  
दि  
३

ह्यलसवानुकमस्विन साहीतिहृष्मादित्यथ ॥ प्रवर्धितः सावलप्रसूतागारुवति ॥ यद्विदु  
लेषविमकनकुसुमीनामन्यमानानिलगुगमारुवति ॥ नडेनइकरुवति ॥ यथासमन्य  
तमस्यलगुगमस्यगतिः कस्यरुलमाह ॥ उरुस्यश्रीश्रुतुयादि ॥ उरुकरुवतिमी  
ना ॥ गनिश्वरस्यश्रुमकांउरुउरुउला ॥ यामन्यगमानानिलगुगन ॥ नडेवगतिश्व  
मारुवति ॥ वलवानगडाचयतिसे ॥ गारुउला ॥ यामन्यरुष ॥ डीनवलश्रुमपति ॥  
रुविषात्रनियधित ॥ वावड ॥ ॥ गारुनावयवारुवति ॥ दिनकरः समान्यरु  
कथिग ॥ द्वितीयादिवस्मान्न ॥ वसर्वश्ववयान्यादित्यारुलान्यरुगिगानि ॥ वा  
निगनिश्वरस्यापिवरुवानि ॥ गनिश्वरवार ॥ ॥ लभपनसः पगरीरदित्यारावा  
॥ यस्वलावषयवस्तिगानिसवधामवग्रणरुलविषात्रमार्थमाह ॥ सुदुदिविर  
कीयसु सुउमीस्तिगानारुलमनयनिविर्त्यलगुदलाविशवे ॥ समपवयविवति  
समपवयवसुतः कथयतिविपरीतनिर्वयवामव ॥ सुदुदितिरुयनिग्रहल

मरुदितिरुन ॥ ललमक्रमनलावद्वर्य ॥ नकवलायसिहावरुलमपिवरुव्य ॥ लावास्वनकुसुम  
लाधादय ॥ लमइहादिरावविति ॥ लगुगनीरयनिकल्यालगाडासत्यः ननुकुदुमस हाथादुथाहा  
वा ॥ सवैगपनिकल्या ॥ गस्वसनीनादिवरुममयथागहायवस्तिग ॥ तस्यलावस्यषाष्टिना ॥ उरु  
त ॥ गुलागुलाः पापः श्रुतुस्यनः पश्चिकराति ॥ तथावयथयसावाक ॥ माथीलावः सामिद्वे  
यगावसोम्यवास्याउस्यतस्यारुवृद्धिविति ॥ कथरुणतिसुदुदिविरुकीयस्वकुडुमीस्तिगानी  
रुलमनयनिविर्त्यलावस्मग्रहा ॥ यादगकेरुवति ॥ तादगैरुलरुवति ॥ मिनुकुग  
दिस्मलाववृद्धि ॥ कथानि ॥ गुरुके  
केरिकाणनीवतिग्रह ॥ सुदुल्लिख ॥ कथिग ॥ पनडडासीन ॥ तननइकरुवतिपापः सोम्यवा  
वल् ॥ गुलकुसुमायास्मिनलाववस्तिग ॥ तस्यलावस्यरुलनिकराति ॥ उडासीनकुडुलानि ॥ न  
वृद्धिमिगकुसुमलरुिका ॥ श्वावववस्तिग ॥ स्यवृद्धिमिति ॥ ज्ञातककेषाधिलग ॥ समस्यावाय  
सुदनः समपवयवविपतिसाम्यापाधकथयति ॥ यस्मालुहाय ॥ सोम्याः पश्चिमापाविपय  
यसंगुताः कुर्व ॥ मरुदितिरुनियनध्वनिरुवाडयकमार्थनंदश ॥ वस्मिनलावसोम्यग्रहा



॥ ५ ॥

सुखवृद्धिर्द्विर्द्वि॥ यस्मिन् पापाः स्मितास्तस्य हानिमिति॥ कत्वगद्विपनात्तु निर्वृष्टाश्चम  
ष॥ निरुद्धादगस्तुनसोम्याववहानि कथाति॥ पापाव्यवयवद्वि॥ षष्ठस्मिन् सोम्यागकहानि  
कथाति॥ पापगकद्वि॥ तस्य पापनवर्जित्तिकाणावलवानगकजित्तिकागकहानि॥ तस्यमस्तु  
सोम्यामर्कहानिकथाति॥ पापमर्कद्विमिति॥ नष्टपश्यव॥ तर्कथंस्वल्पज्ञातकेडक॥ यस्तु निष्ठ  
सरागुस्तानमृत्वा दिनश्रुतिस्तस्मिन् पाप॥ सोम्याः षष्ठः निष्पुंसवनस्याव्यावृताः ०० ति॥ वरु  
ज्ञातकेष्ट्यावायमगनाक॥ स्वल्प  
तिष्ठमागमगा॥ रुविप्रतिपगोन  
रुनामनंवरु॥ ०० तिथागवाय  
गुरुमितिथामनद्वयं दशवति॥ तथाववरुद्याशं आगुरुकुलिकायां स्वल्पज्ञाताया॥ मन्यरु  
पाप० ति॥ एववरुदल्पथा॥ गुरुकुलिकारुलस्यविगषमाक॥ ॥ उर्वरिकाणवृ० ति॥ य  
रुकुलिकीयरुलविषमकुरुमगुरुग॥ तसार्धस्तुसंयुक्तपयवृ० ति॥ तिकाणस्तुपादान  
स्तुस्तु० ति॥ मिश्रकुरु० पादगकुरु० पाददल्प॥ निवस्तुमिगयनकिञ्चिदपिन

[illegible]







न  
व  
सि  
२

राग्यासावाइधानकृत् ॥ यत्नलपुनन ॥ विमानासी ॥ मनगसी ॥ यधाननवनधर्मिवरुलशकृ  
व ॥ यधाननवर्कविधाननगराणीशुहाना ॥ यपडगा ॥ रुवगित्यर्थलगावर्कगगाकीनामवयरुणा ॥  
ननः ॥ रविमोनोमो ॥ नर्कगर्गकथाः ॥ रुलडरुवमक्र ॥ लगस्यकिरुल ॥ डक्रयार्थण ॥ होमारु  
लगयनगगाभन ॥ तथालगमभियनउल्यमेलमिरुवडाभेणीवडनि ॥ यथायथमाडगाडरुग  
स्यवर्कडाडिडिसरु ॥ यथामभवयसि ॥ मयमभनडा ॥ यः कलुय ॥ न ॥ डिवल ॥ मनुपिणुला  
भानिनि ॥ नचयवनाव ॥ यथीसा ॥ यः पिणुयसाडिपिकार्य ॥ दधारपिडगाकडगावि  
रुगकल्पनाकार्या ॥ नयडल्यन ॥ स्थानिमा ॥ डगाभभवययविकस्यनकालस्यरु  
नगडधिकमायडीवनि ॥ गडडगा ॥ वनडातुवमनर्ण ॥ मिगडगावनडापिजीवनि ॥  
मयसुडगाभनडापीगगाजीवनिमिति ॥ नथयस्मिनयागगागस्याय ॥ यमाननकायगन  
यागमारु ॥ ॥ उरुविनि ॥ यडाककडलरुवनि ॥ नथववडजीवावस्मिगारुवग ॥ वपयुकास  
दिनापथकसुवायथसिरुवकडसुगरुवग ॥ यनिसषाआदित्यगगागनकगनिधरा ॥ पथ  
कडथकसकितावायथससुर्वरुवरियसुरुगापगा ॥ रुवनि ॥ एकाडगषकडनीवगा ॥ रुवग  
धनथडीड

कडगा ॥ नि ॥ वडसु ॥ यथमवयसिडसु ॥ यनरुनरुमयमवयसिडसु ॥ माधादिमसु ॥ न  
वयास ॥ एगडरुवनि ॥ लगार्कगगाकीनायावलवनि ॥ यथमावस्यरुवनि ॥ गनरुस्यकडसुसिपि  
ग्रहानयासमभिन्याडगा ॥ रुवनि ॥ एवकडसु ॥ यथमवयसिडसु ॥ रुलरुवनि ॥ यडिकडसु ॥ ग्रहानरु  
वनि ॥ गडाक ॥ रुलयवनि ॥ गारु ॥ ॥ नहिनरुलविपाक ॥ रुत्याडि ॥ कडसु ॥ ग्रहानामरावनहियुध  
मवयसारुलारावा ॥ यनरुनरुनामरावनवमेयवयसिरुलाराव ॥ यडाकडसु ॥ ग्रहानरुवनि  
॥ गडापणरुनरु ॥ पूर्वरुलयवनि ॥ गनगाधादिमसु ॥ नथकडसु ॥ रुवनि ॥ यनरुनरु ॥ य  
नरुवनि ॥ गडातस्मिननववय ॥ कडसु ॥ एवरुलयवनि ॥ गनगडरुवनि ॥ एव  
माधादिमसुनामरावयथम ॥ ॥ कडसु ॥ ॥ यलयवनि ॥ गन ॥ यनरुनरु ॥ यरुवनि  
॥ माधादिमसुनरुवनि ॥ गडाकडसुनाकल्पयित्वा ॥ यनरुनरुनामभवकल्पनाया ॥ न  
थकडसु ॥ एवरुवनि ॥ गडागर्गमवकल्पनाया ॥ नथकडसु ॥ रुवनि ॥ यनरुनरु ॥ रुवनि ॥ न  
यालि ॥ ॥ ॥ एवसर्वधामपिडसु ॥ वर्षदानसोम्यपिथमादिनस्ययनिकल्या ॥  
यडावलवारीम्यरुवनि ॥ गडावकवयमपिग्रहस्मिगयथमोदिनपिस्मिगवलाधिकीस्यपु  
यवयवडगायनिकल्या ॥ गगावसोम्ययथमादिनस्यलगडिविधयडय ॥ यथरुववर्कव







॥ विविकल्याः सप्र ॥ वडुडिकल्यानव ॥ पथविकल्याः सप्रमेषदिकल्याः श्रवण ॥ सप्रवि  
कल्याः पक ॥ नवदाविग कल्या ॥ यययव रुवाडगयाविका रुवति ॥ नम्रुडग ॥ यययव प्रथमम  
हृदग ॥ इत्वाग ॥ यययव डग ॥ विरागकम ॥ सनवानुडग ॥ विरागकम ॥ कार्य ॥ वस्याः डग  
यावक ॥ नस्यवानुडग ॥ गार्जि ॥ काशवनुडग ॥ याकावरुलेवडग ॥ ययय ॥ नययवडुवक ॥ य  
डग ॥ ककमनड ॥ नवडग ॥ विरागक ॥ कस्यसम्विडग ॥ नडग ॥ वागुरुलुला रुवति ॥ क  
स्यागुरुलुलेखननडा ॥ नड ॥ थडग ॥ रुलानरुयाः सङ्का ॥ ॥ सन्यम्यति ॥ य  
लुगायकस्यरुना कालेधः स ॥ म्यगलवानग ॥ रुवति ॥ एवार्कवल काष्णयकः  
सर्वनित्यध ॥ नस्यसम्विनि संप्रुडग ॥ रुवति ॥ नकवल यावसुडग ॥ रागसिगस्यपव  
भावनग ॥ स्यापिसप्रुडग ॥ नामडग ॥ योश्वकोले रुवति ॥ सस्यगलिन ॥ यकूपनः सडग  
रागः ॥ निवदननत ॥ यययति ॥ यथपरमी ॥ गता ॥ यहा ॥ यययन कारणयक ॥ यिनरुवति ॥ नस्य  
संप्रुडग ॥ वडग ॥ रुवति ॥ संप्रुडग ॥ याडग ॥ याग ॥ कालगरी ॥ गगधन ॥ वडि ॥ रिः ॥ यक ॥ ॥ रि  
वडग ॥ अथसमरुवल यकानरुवति ॥ किश्रुडग ॥ नवल ॥ नडा ॥ नस्यसम्विनि संप्रुडग

नामडग ॥ रुवति ॥ यययपरमा ॥ गगानरुवति ॥ कवलमवा ॥ नगिगग ॥ रुवति ॥ नस्यापिसम्वि  
नी संप्रुडग ॥ याडग ॥ यमिनडग ॥ यास्यकाले ॥ धनमीयाति ॥ नत्वा ॥ गयवलवर्जितस्य विके ॥ सर्ववेल  
वर्जितस्यसम्विनि विकानामडग ॥ रुवति ॥ विकडग ॥ नडग ॥ कालेधनरुनिमवाप्राति ॥ नीवा  
गगनस्यतियः ॥ परमनिवस्य ॥ रुवति ॥ नस्यसम्विनि डग ॥ धनिष्टरुला रुवति ॥ यययग ॥ नवा  
सक ॥ रुवति ॥ नस्यसम्विनि डग ॥ निष्टरुला रुवति ॥ ननिष्टरुलानुडग ॥ कालधनरुनिमना  
गार्जि ॥ याप्राति ॥ यः ॥ यनः ॥ केवल ॥ निववासिगग ॥ रुवति ॥ नस्यसम्विनि विके ॥ न  
स्याः ॥ रुलमक ॥ नकवगार्जि ॥ स ॥ ववलरुपनस्यपरमा ॥ गगनस्य ॥ सडग ॥ स्याड  
ग ॥ रुयाधनायाविवडनी ॥ सड ॥ गगनस्यार्थकिश्रुडग ॥ लयनस्य ॥ सडग ॥ नामड  
साडग ॥ याधनवडि ॥ करी ॥ सडग ॥ ॥ सर्ववलरुपनस्यनीवनागिगस्य ॥ विकामिडग ॥ रुयाधननास  
काविनी ॥ यस्यानयमनी ॥ वलस्यसुथावा ॥ धिनवागक ॥ नस्यानिष्टरुलानामसाधनिष्टवि  
मडनी ॥ डग ॥ नडग ॥ सङ्का ॥ नरु ॥ ॥ रुष्टस्य ॥ डग ॥ गति ॥ परमावराग ॥ डग ॥ नत्वा ॥ यावत्यमनीव  
लागादि ॥ नकग ॥ नय ॥ डासिक ॥ नगावसिग ॥ नग ॥ रुण ॥ याडग ॥ नडग ॥ वाडग ॥ सीका ॥ सडग











म  
७  
०

वर्षाणि इडाति ॥ वक्रावस्ति त्वाने गुणानि यद्गता ॥ सफु गुणानि द्वापयश्च गदधिवी वर्षगतव  
य ॥ लभय द्वायनयस फल्यधिकं वर्षगतव यमपिसंश्रुवति ॥ नकुनिकविगु ॥ तथा गालग  
दगमनके विगडा वाय ॥ गुला मिनि ॥ नकुनिक ॥ यस्मादवलखेलस्य वयसा ॥ नकुनिक  
रुवति ॥ तथा वेग्नकीलि ॥ अकुल गदगुगुलु नियवनामनदकुनेमिनि ॥ तस्मिन्हीन  
वल यगायसमयसास्या दगानय ॥ नतवावायस्यनारिषर्ग ॥ यतस्तेनल गवलवग  
ल गदगमयो गुला गुलुखनाक्र ॥ तथा दगमनदगमगुलुखनार्थमारु ॥ ॥ पाक  
० ॥ मि निल गुस्य ० ॥ शान सावनवर्षादन कुशविचत्वापिमासानि ॥ नकुनिक  
दयत्वनयवाको दय ॥ सावनमहायार ॥ नकुनिक विचत्वा ॥ नकुनिक नकुनिक सर्मस ॥ सदा  
दगवर्षे नवमननद सिगसा वना ननाय द्वाय गणना कार्यायसा ॥ अथ कृप विगुदुमा  
यकलुर्वा ॥ नवशावनमान ॥ सोममा गविरुगनराग ॥ सोममानमधिमासयकृवा  
द्वा रुवति ॥ अवममगननीसावनरुवति ॥ एव ॥ अथ कृप विगुदुमावनान ॥ ननुमान

नायकलुर्वा ॥ तथा नवमयन विगुमार्ग ॥ अथ द्वाय विगुगमपाय विगुविगुगथा ॥ सासनने  
वकलुर्वा मगणमिधपासन ॥ तथा यथागन ॥ सावनमहायार ॥ नकुनिक सावननकतामास  
सिगदुगुकादयो ॥ एवयकृपस्य गगस्थ सावनमर्गकृवा ॥ यथा तिथिनकु ॥ कुदगाका  
लिकगुला ॥ सल ग ॥ कुनो ॥ तथा नकुनिक वगानकलुर्वा ॥ ननु ॥ मागामिदगमवर्नवकृर्वा ॥ अ  
थ यथमर्गना काले दहर्गर्गकृवा गगलुग नकुनिक कालवर्षादिर्वादिनी कृत्वा यथयग ॥ स  
दगमनकुदहर्गर्गलुवति ॥ तस्मा दहर्गर्गनाकोलिका गगलुग यथयग ॥ न  
तस्मिन् यथहर्गर्गलुवति ॥ तस्मा दगमकालदिनी कृत्वा यथयग ॥ एव यथयग ॥ अथ  
गगलुवति ॥ नावका धनतेव कमणया कनीयासुगगगलुग यथयग ॥ नकुनिक यथयग  
मा ॥ यथयग गगलुगना रुवति ॥ नावका कलुर्वा यथयग गगलुग ॥ वलुमानवर्षया वनाग  
गय ॥ दहर्गर्गकृवा ॥ नावका मासा ॥ सूर्यशोभनानीगा ॥ गुलुपर्श कृत्वा तिथिनकुदुग  
नुकृर्वा ॥ कागमलुयगभव ॥ पाकलु मि निल गगलुग ॥ सस्यानकुदगमयवसपाकस्वी  
मीथावना सोपा कस्वामी थावनुस्या ॥ नकुनिक यथयग सल गगलुवति ॥







म  
३  
दि  
२३

रुपस्यरुवनि॥ यडादिस्यस्यरुवपलत्यम॥ मूथागुरुदग॥ यासियायिपननिग  
मरुनगुथाइवायायदःयुरुषस्यरुवनि॥ मयाभायायुगसगापनीविग॥ मविःगुरु  
॥ गमुमीयथानि॥ हनरुगनि॥ हयाभाभा॥ प्रत्यःसकामइदुगनिविसेष॥ यडउत्य  
यन॥ त्यागिदगम॥ गुरुवदस्यनत्यागिरुवनि॥ स्त्रल्यग्यास्यकलरु॥ हनकउपा  
गयाधगठेति॥ मिग्रहलाया॥ मरुयमपिवदुदग॥ यागुरुगुरुकलदानार्थना  
रु॥ ॐ॥ निनि॥ ॐ॥ गुरु  
शासगरुवानि॥ मनुयथाभा  
मग॥ ॐ॥ यायदग॥ रुलानिलत्यममनुद्वि  
इवानिदिगायइवानिव॥ नकवलयाव  
दिगुविकाना॥ गुगादिका॥ शोनविकाना॥ दगादिकाना॥ वस्त्रेस्यःकस  
मत्य॥ तिलागःमन्नाकुमीयायामाग॥ कोउयति॥ प्रगःगुरुयासागुरुनिरुलानि  
प्रधानि॥ मगुरुदग॥ यागमगुरुनि॥ निडारगिशलस्यराग॥ मडःम्रीग्रहलाग॥  
द्विजामनरति॥ देवगात्राकनरु॥ म्मत्रमपाशानिमिधाविगावृद्धिमर्त्यकीत्यर्थय

नयकयावाकीत्येययश॥ गुरुदगायाकीत्येयवयश॥ मयवयःकय॥ मगुरुदगायाम्य  
लिलिवनम्ययकनव॥ यमनयपण॥ कपुपकउव॥ किलपीयन॥ मिग्रयामरुयमपिराम  
दग॥ यागुरुगुरुकलपडगनाधमाह॥ ॥ रामस्यामिनिमद॥ ॐ॥ रामस्यदग॥ या  
पनरुवनि॥ मनिमद॥ गकविमद॥ ॐ॥ हयाभाभा॥ सरुडासगाकिगिलमि॥ मविक  
ॐ॥ सिद्धि॥ मद्रुमग॥ गुरुह्यसरुडाकि॥ त्याविकाउथकनपलन॥ प्रगकुरायाडिग  
या॥ मसरुदग॥ यायिद्वष  
रुवेनी॥ पण्डितविद्विःगुरु  
॥ ॐ॥ मद्रुमकनकुरुअलीति॥ यअगावापिउपाउनिनरुनिनाभागा॥ यमम्यपगा  
परयवनिपसअवालय॥ मनिपसअपाउकयकगावाध्यवातनकगमूललक  
माइवा॥ नकवलयावग॥ याति॥ यापनरुवतियाकुर्या॥ निधुनववनगांरुवनि  
नमामग्रस्यरावनामिग्रयामरुयमपि॥ वधदग॥ यागुरुगुरुपडगनाधमाह॥



न  
न  
ह  
२

॥ वाष्वाद्यायति ॥ वधदग्गर्वाशयेन इतरेन स ह उरु द्विजधनं द्विजानां यमकांश  
इर्नया प्राति ॥ विदुस्यः सकांशस्य संगायगम्य ॥ यकिदद्यानाति ॥ कास्यादि ॥ सवर्णवस  
नमहि मां ल ग्ध सीर्या ग्धवति ॥ वगमांस्वामि हित ॥ अन्यवसिर्द्ध ॥ वगतनयकष ॥ या  
प्राति ॥ सीर्यकां गल्य ॥ उपागर्न ॥ सवातकां गलं मतिवया वषिवि वृद्धि ॥ धर्मकृता क्रिया  
नासिर्द्धयथास्य नवति ॥ वतकुरायां पाकृषी ॥ यकृपवाक्यशमवत्वेन ॥ वत्यं वकि क  
कुरादित्यातयं गकं गुरुवाग्मा नसंयुव ॥ विरुसाकपी गवधुतुयान् ॥ याधि  
वातपितृशुष्मानं यकायानि ग्रयामरुयमपि ॥ जीवदग्गर्वाः ॥ शुलायुरुदग्गर्ना  
र्थमाह ॥ ॥ श्रद्धा ॥ ति ॥ जीवदग्गर्वाभानस्य वृजार्वा ॥ गुणनोडदय ॥ पद्धतावि ॥ सतिव  
थावद्धि ॥ कान्तिकमनियगायथागतति ॥ गुरुणसीति ॥ माहृत्यविनायकायकायगीलगा  
कविर्नर्त्रमाह ॥ उद्यमः उन्नतगीलनामन्नीत्यानानाधननस्वाध्यायनमन्त्राथन  
वधनवाप्राति ॥ रुमास्वात्मकं श्रुताम्वराणी सवर्णं उरुगुरु स्त्रियवश्राणवयावाह

त्यं ॥ संहमियगुगवद्धिः पाथिवः सहवागियाप्राति ॥ वतकुरायां ॥ नसरायां स  
आस्यादि ॥ सद्गोवमुमरुनात्मा ककशुदुरयन ॥ गुवारुवलि ॥ श्रवणकृकृष्णागा ॥ धर्म  
कः यकृषः सरवर ॥ मिश्रयामरुयमपि ॥ शुक्रदग्गर्वाः ॥ शुलायुरुदग्गर्ना र्थमाह  
॥ ॥ ग्धार्वा ॥ गति ॥ ति ॥ शुक्रदग्गर्वा गीतस्य वति ॥ यमादस्य सररिदवाणवति  
नी ॥ अनयानां म्वरमुनित्वयमिरुज ॥ कामाकरणाणी गय्यादीनां स्त्रियवः ॥ नानापि  
यानां ॥ आगमायलदिरुवति ॥ कां गल्यमारुष्ट क्रियासूत्रकृत् ॥ कयस्य  
रादिदुगि विक्कीडं कषिनिधि निधानं यथायापि ॥ तथायनापि यकायनां र्थ  
स्वागमनं नानियाप्राति ॥ शुक्रदग्गर्वाः ॥ तथा शुक्रदग्गर्वाः ॥ वन्दववरुहिसरु ॥ उदीसि  
नराहृतिगमनादनाय विना धर्मरहितश्चर्य ॥ प्राप्तातिशुवः ॥ सहगः वरास्यवहोरु  
वति ॥ इह वग्गर्वायाप्राति ॥ मिश्रयामरुयमपि ॥ गनश्चरदग्गर्वाः ॥ प्राप्तायुगुलायुरुद  
गर्ना र्थमाह ॥ ॥ सारीमिति ॥ गतिश्चरदग्गर्वायाप्राति ॥ यथायथायुगुलायुरुद  
व



य॥ रुवन्निवृहनाममभाननातिथीनासद्यात्॥ नस्यामधिकानियञ्चगा॥ अमयन  
वावृवृणीअमयनाधिकानननिगावृजागस्यरुवनि॥ कुधन्यानावाडवादिनामयगमी  
रुवति॥ नवगुरुदगायांमथामरुदगायांयुवा॥ ॐ न्यासपण्यययवोयनकाधिन  
माहनमनिनतथावाधनसर्वकमस्वनवगनगावृदीवावृद्विपस्यमहमाहृनिडा॥  
॥ नस्यालकृ॥ रुदयवाकुलिरावावाकावृद्वयङ्गावृ॥ मनावधयसादग्वतन्दायैल  
कनविद्व॥ नतापापानिग्रमश्च  
युवइहिरुत्य॥ कलरुत्यःपत्नी  
मवर्त्ययाधिनानद्वारणकुमिश्रथामरुयमपि॥ नकस्मिन्ननरुदगायांगुरागु  
लानिवरुला॥ निष्ठाकानि॥ कर्षाविषयविराथलकणदगाहृलार्थिनावाह॥ ॥ इ  
मसस्म॥ ॐ नि॥ ग्रहस्यसम्विनीयडागुरुडादगाहृवति॥ तडागद्वलश्रुथानि  
गुरुहृला॥ यन्निनानिगान्यवरुवन्नि॥ ननरानी॥ अथगुरारुवति॥ तडाधुरानि

रुवन्नि॥ नगमाणि॥ अथमिश्ररुलाहृवति॥ तडामिश्रानिरुवन्नि॥ नववृष्टिनिमृगमथा  
वास्याग॥ रुगारुलनग्रयन॥ समान॥ लग्नदगायांलग्नाधिवग्रहार्कहृलवकृयंगुरा  
यांगुरा॥ अगुरुथामगुरुमिश्रगयामरुयमपि॥ ययवृदगाविष्ठादकृश्रपरिद्वि॥ ॐ  
मयदशवलवानावा॥ गुरुवार्सनिनादिन॥ साग्याधिमिश्रवर्गस्मृत्कृत्वरुवंग  
डा॥ अकृदगाधिनधस्यविवलस्यदगाहृडा॥ वलनःस्यातडाहृअनवानवाद्यानस्यव  
य॥ यद्वेवविक्रयीनस्मिन्नग्रह  
दिपनसस्मिन्न॥ अन्ययोमपिरु  
थयस्यपद्वयमृकंकमीजीव  
लापि॥ म॥ ॐ त्यादि॥ तडादवास्यग्रहगुरुदगायांआगमारुवति॥ अगुरायांरानि  
॥ ययग्रहस्यकमीजीवागावकाहृतिन॥ अथपिनःपितृपितृयतिगकृमिश्रया  
दि॥ तस्यकमीजीवस्यतडकृदगाववापिरुवति॥ रावरावरुलवकृतिवथायन



[illegible][illegible]



五

[illegible]

दक्षिणादगा कालसी श्वमर्था गमश्च नयति ॥ मधुररुलदग्मर्था गमनश्च  
 नयति ॥ मिश्रार्था मिश्रश्च ॥ यागार्थाश्च वक्रनिमित्तान्वयश्च श्रद्धाद्वियमरुह  
 ॥ गच्छादगच्छात्कालरुविनृणां ॥ वीचनमनाथेन मिश्रानरिनदन्ति ॥ नस्मा  
 त्सर्वात्मना याज्ञानमयं सदा मन ॥ प्रवक्तुमना या उरुद्विगुर्द्वयवह ॥ कथितरु  
 लविपाकीनित्यादि ॥ यानिरुलानिगुलान्यगुलानिपुनया उक्रान्तिकस्थदगायां  
 पातानयलक्रपुनस्यवली ॥ मानादगात्कथेत् ॥ लक्ष्यादित्यर्थ ॥ प्रवक्तुया  
 वल्लनान्नात्मवल्लनलक्ष्यक्रिव ॥ सनवागनिगुलान्कस्यवर्हमानादगावदन्त ॥  
 मथगमश्चरदगायां नगुलायां वदन्तमूर्क ॥ नवागुलायां मध्येनयां वदन्तद्वयगुल  
 दगायां गुलायां ॥ निविषाप्तिरुक्तानवसापिष्टश्चानर्थमारु ॥ ॥ प्रकथरुनि ॥ नानाग्र  
 रुः सदृशनन्यगुरुल्लरिनस्मिन्स्थास्थादगामपगता स्वरुलपदस्य ॥ सर्वाणां वला  
 निनारुवहाः स्वदगायां प्रयत्नगिर्यर्क ॥ तर्कनवग्रहणयदासदृगविरुद्धरुलय







